



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग III—खण्ड 4
PART III—Section 4

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 3] नई दिल्ली, बुधवार, मई 11, 1983/वैशाख 21, 1905
No. 3] NEW DELHI, WEDNESDAY, MAY 11, 1983/VAISAKHA 21, 1905

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में
रखा जा सके
Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate
compilation

केन्द्रीय होम्योपैथी परिषद् अधिसूचना

नई दिल्ली, 11 मई, 1983

संख्या 7-1/83 सी० सी० एच०.—होम्योपैथी केन्द्रीय परिषद् अधि-
नियम, 1973 (1973 का 59) की धारा 33 के खंड (अ), (ज) और
(ट) और धारा 20 की उपधारा (i) द्वारा प्रवृत्त शक्तियों का प्रयोग
करते हुए होम्योपैथी केन्द्रीय परिषद् केन्द्रीय सरकार की पूर्ण मंजूरी से
निम्नलिखित विनियम बनाती है, अर्थात् :—

भाग 1

प्रारम्भिक

1. संक्षिप्त नाम और प्रारम्भ :—(1) इन विनियमों का संक्षिप्त नाम
होम्योपैथी (डिप्लोमा पाठ्यक्रम) विनियम, 1980 है।

(2) ये भारत के राजपत्र में अपने प्रकाशन की तारीख से प्रवृत्त
होते।

2. परिभाषाएं : इन विनियमों में अब तक कि संदर्भ में अन्यथा
अपेक्षित न हो—

(i) “अधिनियम” में होम्योपैथी केन्द्रीय परिषद् अधिनियम, 1973
(1973 का 59) अभिप्रेत है;

(ii) “पाठ्यक्रम” में अभिप्रेत है होम्योपैथी के पाठ्यक्रम, अर्थात् :—

(क) सी० एच० एम० एम० (डिप्लोमा इन होम्योपैथिक मेडिसिन
एण्ड सर्जरी), और

(ख) बी० एच० एम० एम० (बैचलर ऑफ होम्योपैथिक मेडिसिन
एण्ड सर्जरी)।

(iii) “डिप्लोमा” में अभिप्रेत है इन विनियमों के विनियम 3 में
उपबन्धित होम्योपैथी डिप्लोमा या दूसरी और तीसरी अनुसूची में अन्तर्भूट
और कम से कम चार वर्ष की कालावधि का होम्योपैथी पाठ्यक्रम पूरा
करने के पश्चात् अभिप्राप्त होम्योपैथी डिप्लोमा,

(iv) “डिग्री” में अभिप्रेत है होम्योपैथी (श्रेणीबद्ध डिग्री पाठ्यक्रम)
विनियम, 1980 के विनियम 2 के खंड (iv) में या होम्योपैथी (डिग्री
पाठ्यक्रम) विनियम, 1980 के विनियम 2 के खंड (iv) में परिभाषित
होम्योपैथी डिग्री;

(v) “होम्योपैथी महाविद्यालय” में अभिप्रेत है किसी बोर्ड या विश्व
विद्यालय से संबद्ध और केन्द्रीय परिषद् द्वारा मान्यताप्राप्त होम्योपैथी
आयुर्विज्ञान महाविद्यालय;

(vi) “निरीक्षक” में अधिनियम की धारा 17 की उपधारा (1)
के अधीन नियुक्त निरीक्षक अभिप्रेत है;

(vii) “अध्यक्ष” में केन्द्रीय परिषद् का अध्यक्ष अभिप्रेत है,

(viii) “द्वितीय अनुसूची” और “तृतीय अनुसूची” में अधिनियम की
क्रमशः दूसरी अनुसूची और तीसरी अनुसूची अभिप्रेत है;

(ix) "पाठ्य विवरण" और "पाठ्यचर्या" से अभिप्रेत है केन्द्रीय परिषद् द्वारा इन विनियमों, होम्योपैथी (श्रेणीबद्ध द्विती पाठ्यक्रम) विनियम, 1980 और होम्योपैथी (द्विती पाठ्यक्रम) विनियम, 1980 के अधीन विनिर्दिष्ट विभिन्न पाठ्यक्रमों का पाठ्य-विवरण और पाठ्यचर्या;

(X) "अध्यापन अनुभव" से अभिप्रेत है केन्द्रीय परिषद् द्वारा माप्यता-प्राप्त किसी होम्योपैथी महाविद्यालय या अस्पताल में संबंधित विषय में अध्यापन अनुभव;

(xi) "परिवर्तक" से अधिनियम की धारा 18 की उपधारा (1) के अधीन नियुक्त परिवर्तक अभिप्रेत हैं।

पाठ्यक्रम

डिप्लोमा पाठ्यक्रम:

3. (i) होम्योपैथी के डिप्लोमा पाठ्यक्रम में चार वर्ष की अवधि का ऐसा पाठ्यक्रम समाविष्ट होगा जिसमें इन विनियमों द्वारा उपबन्धित पाठ्यचर्या और पाठ्य विवरण सम्मिलित है और जिसके अन्तर्गत अन्तिम डिप्लोमा परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् छह मास अनिवार्य अन्तःशिक्षता भी है।

(ii) अन्तःशिक्षता, महाविद्यालय से संबद्ध अस्पताल में की जाएगी और ऐसे मामलों में जिनमें ऐसे अस्पताल में उसके सभी विद्यार्थियों की अन्तःशिक्षता के लिए स्थान नहीं मिल सकता है, ऐसे विद्यार्थी अपनी अन्तःशिक्षता केन्द्रीय सरकार या राज्य सरकार या स्थानीय निकायों द्वारा चलाए जा रहे किसी अस्पताल या औषधालय में कर सकेंगे।

(iii) विनिर्दिष्ट अवधि की अन्तःशिक्षता पूरी करने के पश्चात् और उस संस्था के, जहाँ अन्तःशिक्षता की गई है, प्रधान की सिफारिश पर, यथास्थिति, राज्य बोर्ड या विश्वविद्यालय सकल अध्यर्थी को डिप्लोमा जारी करेगा।

भाग 3—पाठ्यक्रम में प्रवेश

4. न्यूनतम अर्हताएँ:—कोई भी अध्यर्थी डी० एच० एम० एस० डिप्लोमा पाठ्यक्रम में तब तक प्रवेश नहीं पाएगा जब तक कि उसे—

(क) इंटरमीडिएट विज्ञान या उसकी समतुल्य परीक्षा मौलिक गणित, रसायन शास्त्र और जीव विज्ञान विषय लेकर उत्तीर्ण न कर ली हो;

(ख) उस बर्ष के, जिसमें वह पाठ्यक्रम के प्रथम वर्ष में प्रवेश पाता है, विसम्बर मास की 31 तारीख को या की उससे पूर्व 17 वर्ष आयु प्राप्त न कर ली हो।

6. प्राधिकारी जिन्हें परीक्षाओं का आयोजन करने की शक्ति प्राप्त है: डिप्लोमा पाठ्यक्रम के लिए विभिन्न राज्यों में परीक्षाएँ, यथास्थिति, संबंधित राज्य सरकारों या होम्योपैथी बोर्डों या परिषदों या विश्वविद्यालयों द्वारा आयोजित की जाएंगी।

भाग—4 पाठ्यचर्या

8. विषय:—डी० एच० एम० एस० (डिप्लोमा) पाठ्यक्रम के लिए अध्ययन और परीक्षा के विषय निम्नलिखित होंगे:—

- (i) शरीर रचना विज्ञान।
- (ii) शरीर क्रिया विज्ञान।
- (iii) औषधि आर्गेन।
- (iv) धिरकालिक रोग और होम्योपैथी वर्णन।
- (v) मनोविज्ञान और तर्क शास्त्र के मूल सिद्धान्त।
- (vi) रोगीबूत लेना और होम्योपैथी रिपर्टरीकरण।
- (vii) होम्योपैथी फार्मसी (मेडिजी)
- (viii) होम्योपैथी मैटीरिया मेडिका
- (ix) विकृति विज्ञान, जीवाणु विज्ञान और परजीवी विज्ञान।

(X) सामाजिक और निरोधक आयुर्विज्ञान जिसके अन्तर्गत स्वास्थ्य शिक्षा और पारिवारिक आयुर्विज्ञान भी है।

(xi) न्याय-आयुर्विज्ञान।

(xii) आयुर्विज्ञान और बाल आयुर्विज्ञान का व्यवसाय।

(xiii) प्रसूति विज्ञान और स्त्री रोग विज्ञान

(xiv) शल्य विज्ञान जिसके अन्तर्गत कर्ण, नासा एवम् कंठ और नेत्र विज्ञान भी है,

(xv) होम्योपैथी फिलिस्वाशास्त्र, और

(xvi) आयुर्विज्ञान का इतिहास।

भाग 5—पाठ्य विवरण

7. डिप्लोमा पाठ्यक्रम का पाठ्य विवरण:—डी० एच० एम० एस० (डिप्लोमा) पाठ्यक्रम का पाठ्यविवरण निम्नलिखित होगा:—

डी०एच०एम०एस० प्रथम परीक्षा होम्योपैथी फार्मसी (मेडिजी)।

सिद्धान्तिक

(i) प्रस्तावना:—मेडिजी, होम्योपैथी मेडिजी—उसकी विशेषता और मौलिकता, होम्योपैथी फार्माकोप्रिया (मेडिजी कोश)

(ii) निम्नलिखित के संबंध में होम्योपैथी मेडिजी का प्रविषय —

(1) आर्गेनन (आर्गेनन के सूत्र 264 से सूत्र 285 तक)

(2) मैटीरिया मेडिका।

(3) राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था।

(iii) भार और माप जिनके अन्तर्गत होम्योपैथी मापमान (सेंटी० मिमी० भी है।

(iv) होम्योपैथी के मेडिकल उपकरण और साधन

(v) होम्योपैथी औषधियों के स्रोत। औषधि पदार्थों के संग्रहण, उनकी पहचान, शुद्धिकरण, परिरक्षण की तथा शक्तिकृत औषधियों के परिरक्षण की प्रक्रिया।

(vi) अनुपात

(1) उनकी तैयारी और उनका उपयोग।

(2) शोधन

(3) एकोहल की प्रमाण सामर्थ्य

(vii) कार्बनिक और अकार्बनिक रसायनों, वनस्पतियों, पशुओं और पक्षु उत्पादों, रोग के उत्पादों आदि से औषधियों के तैयार करने के तरीके। ह्यूमीन के प्रमाणिक और आधुनिक तरीके जिनमें गुण और अवगुण भी सम्मिलित हैं।

(viii) (क) मूल टिचर फोल शक्तियों और संवेधनों (बोटना) की तैयारी के तरीके।

(ख) (i) वनमल (डेमीमल) मापमान

(ii) शक्ति (सेंटीसीमल) मापमान

पर औषधियों को शक्ति प्रदान करना।

(ix) प्रवाहन शक्ति, संग्रहण के तरल रूप में संपरिवर्तन के तरीके।

(X) बाहुय-प्रयोग—उसका प्रविषय—सोशन, लेप, ग्लिसैरल, मसम को बनाने के तरीके और उनका उपयोग।

(xi) औषध पत्र (नुस्खा)—उसका अध्ययन जिसके अन्तर्गत संश्लेषण-कार्य, औषधपत्र लेखन के सिद्धांत और तरीके और उसकी विधिमाम्यता का अध्ययन भी है।

(xii) मेडिजिगुण विज्ञान (फारमाकालोजी)—औषधि सामर्थ्य, होम्योपैथी मेडिजी क्रिया विज्ञान, सक्रिय शक्ति—औषधि मात्राशास्त्र—होम्योपैथी मात्राशास्त्र—उपचार।

(xiii) औषधियों और अनुपातों के मापकीकरण का संक्षिप्त अध्ययन।

(xiv) होम्योपैथी भेषजी से संबंधित विधान का सामान्य ज्ञान ।
 (xv) साधारण प्रयोगशाला तरीके / घोल, तनुकरण, नितारना, अवक्षेपन, निस्पंदन, आसवन, क्रिस्टलन, उदातीकरण, परिरुबण आदि ।
 (xvi) कुछ महत्वपूर्ण औषध पदार्थों की जैविक, भौतिक, और/या रासायनिक विशेषताओं का अध्ययन ।

(xvii) होम्योपैथिक औषधि प्रविधि ।

प्रयोगात्मक

(i) होम्योपैथी के भेषजिक उपकरणों और साधनों की पहचान और उनके उपयोग तथा उनको साफ करना ।

(ii) महत्वपूर्ण होम्योपैथी औषधियों की पहचान (संलग्न सूची देखिए)

(क) सूक्ष्म-सूक्ष्मदर्शी

(i) कम से कम 30 औषधि पदार्थ—20 बनस्पति वर्ग के और 10 खनिज तथा रासायनिक वर्ग के ।

(ii) उद्भिज संग्रह के लिए 30 औषधि पदार्थों का संग्रहण

(iii) 3+शक्ति तक के दो संवेधनों का सूक्ष्म-सूक्ष्मदर्शी अध्ययन ।

(iii) औषधि की आद्रता का जलोष्मक की सहायता से अनुमान लगाना ।

(iv) एथिल एल्कोहल, आसुत जल, दुग्ध शर्करा की शुद्धता परीक्षण जिसके अन्तर्गत आसुत जल और एल्कोहल के विशिष्ट घनत्व का अवधारण भी है ।

(v) गोली के आकार—उसके औषध प्रयोग का दुग्ध शर्करा और आसुत जल का अनुमान—मात्रा होज तैयार करना ।

(vi) तनुकृत अल्कोहल घोल और तनुकृत घोल तैयार करना और उनका औषधि योजन ।

(vii) 3 पोली केस्ट के मूल टिक्कर तैयार करना ।

(viii) 3 अपरिष्कृत औषधियों के 3+तक संवेधन तैयार करना ।

(ix) ऐसी औषधियों के ओ डी०एस०आई० के अनुरूप नहीं है मूल टिक्कर तैयार करना ।

(ix) 3 मूल टिक्करों को 6+दशमलव मापमान और 3 शक्ति मापमान तक शक्ति प्रदान करना ।

(xi) 3 औषधियों का 6+तक संवेधन और उनकी तरल शक्तियों में संपरिवर्तित करना ।

(xii) बाह्य प्रयोग की औषधियाँ तैयार करना —प्रत्येक की एक ।

(xiii) औषधि पत्र (नुस्खे) लिखना और उनके अनुसार औषधि तैयार करना ।

(xiv) प्रयोग शाला में काम में लाये जाने वाले तरीके :—

(क) उदातीकरण ।

(ख) आसवन ।

(ग) नितारना ।

(घ) निस्पंदन ।

(ङ) क्रिस्टलन ।

(च) परिरुबण ।

(xv) बड़े पैमाने पर औषधियों के बिनर्माण का अध्ययन करने के लिए होम्योपैथी प्रयोगशाला देखने जाना ।

पहचान करने के लिए औषधियों की सूची

- | | |
|-----------------------|---------------------|
| 1. एकोनाइट नैप | 2. एगारिकस |
| 3. एटीमोनियम टार्ट | 4. एपिस मेलिफिका |
| 5. अर्जेंटम साइट्रिकम | 6. आम्बिका मोन्टाना |

7. आसेनिकम एल्ब

9. बैस्टीसिया

11. बेलाडोना

13. कैकटस रेंडी

15. कैलकेरिया फास

17. कैम्फर

19. कार्बो बेजिटैबिलिस

21. कैमोमिला

23. चायना

25. कोकुलस

27. कोलोसिंघि

29. कुपरम मेट

31. क्रोसेरा

33. ग्लोनाइन

35. हीपर सल्फर

37. हाइड्रेरिकम

39. इपिकाकुआना

41. लैकेसिस

43. मर्क्यूरियस कर

45. मेजीरियम

47. नाइट्रिक एसिड

49. ओपियम

51. फासफोरिक एसिड

53. प्लसबम

55. रसटाक्स

57. सेम्बयूकस

59. सिकेली कर

61. साइलेशिया

63. स्प्राजिया

65. स्ट्रामोनियम

67. टरेंटुला क्यू०

69. वेरेट्रिम एलबम

71. जिंकम मेट

8. औरम मेट

10. सैटाइट्टा कार्ब

12. चायोनिया

14. कैलकेरिया कार्ब

16. कैलेंडुला

18. कैथरिस

20. कास्टिकम

22. कैलीडोनियम

24. सिना

26. कोल्चिकम

28. कोनियम

30. बिजीटेसिस

32. बलकामारा

34. प्रेफाइट्टीस

36. हाथोसियामस

38. इग्नेशिया

40. काली कार्ब

42. साइकोपोडियम

44. मर्क्यूरियस सोल

46. नेट्रम मयूर

48. नक्स बोमिका

50. फासफोरस

52. प्लाटीना

54. प्लसेटिला

56. रूटा

58. सीथुनेरिया

60. सीपिया

62. स्वाइडेलिया

64. स्टेनम मेट]

66. सल्फर

68. शूजा

70. वेरेट्रिम बिरीडि

शरीर रचना विज्ञान और शरीर क्रिया विज्ञान

पूर्वभैदानिक अभिधि में सामान्य मनुष्य का अध्ययन :

सभी विज्ञानों में से मानव अर्धे व्यवस्था का अध्ययन सब से अधिक कठिन है । मनुष्य सचेतन मेधाशक्ति वाला एक जीवित प्राणी है जो समग्र रूप से क्रियाशील है । मानव ज्ञान इतना विशाल हो गया है कि समग्र रूप में मनुष्य को यथार्थ रूप से समझने के लिये शरीर रचना विज्ञान, शरीर क्रिया विज्ञान और मनोविज्ञान जैसी विज्ञान की भिन्न-भिन्न शाखाओं का विकास आवश्यक हैं । किन्तु ऐसा विभाजन समीचीन मात्र है, मनुष्य अभिभाज्य बना रहता है ।

सचेतनता, जीवन और उसके आभास का स्पष्टीकरण न तो केवल शरीरक्रिया विज्ञान से, न क्वांटम क्रियाविधि (क्वांटम मैकेनिज्म) से और न मनोवैज्ञानिक धारणाओं से, जो स्वयं रासायनिक-भौतिक धारणाओं पर आधारित हैं, दिया जा सकता है ।

यद्यपि अभी तक शरीर रचना विज्ञान और शरीर क्रिया विज्ञान विषय सर्वथा भिन्न-भिन्न विषयों के रूप में पढ़ाए जाते हैं तथापि इनके बीच कोई पूर्ण और कठोर विभाजन नहीं किया जाना चाहिये। संरचना (शरीर रचना) और कार्य (शरीर क्रिया) परस्पर संबद्ध पक्ष तथा भौतिक रासायनिक प्रक्रियाएँ एक अर्धवृत्त प्रत्यक्ष तथ्य की जिसे जीवन कहते हैं, बाह्य अभिव्यक्ति है।

अतः शरीर रचना विज्ञान और शरीर क्रिया विज्ञान निम्नलिखित उद्देश्य से पढ़ाए जाने चाहिये:

- (i) उन आकृतिक, शरीर क्रियात्मक तथा मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों को समझाना जिनसे एक क्रिया इकाई के रूप में संप्राण शरीर की संघटित रचना का अवधारण होता है और उस पर प्रभाव पड़ता है ;
- (ii) मानव शरीर के संरचनात्मक संघटन और उसकी प्रसामान्य शरीर क्रिया के बीच संबंध स्थापित करना और उसका निर्वचन करना तथा ऐसे आंकड़े उपलब्ध करना जिनके आधार पर क्रियाओं के विकार का पूर्वानुमान लगाया जा सके;
- (iii) विद्यार्थियों को इस योग्य बनाना कि वे रोग लक्षण चिह्नों तथा क्षति, रोग और कुविकास के कारण विकारों के लक्षणों के शरीर रचनात्मक, शरीर क्रियात्मक और मनोवैज्ञानिक आधार को पहचान सकें;
- (iv) इसी प्रकार विद्यार्थियों को यह समझने का अवसर प्रदान करना कि विकृतिजन्य प्रक्रियाओं के विकास से संबद्ध बातें क्या हैं और उनसे सम्बन्ध क्या वैश्ववर्गीय उत्पन्न हो सकती हैं ;
- (v) विद्यार्थियों को रोग लक्षण पूर्व विषयों का ऐसा ज्ञान प्रदान करना जिससे कि वे अंतर्गत, परीक्षण और उपचार (जिसके अन्तर्गत शल्यक्रिया भी है) के उन सभी सामान्य तरीकों का, जिनमें ऐसे ज्ञान की आवश्यकता हो, दक्षतापूर्वक और तर्कसंगत रूप से उपयोग कर सकें ;
- (vi) विद्यार्थियों को इस योग्य बनाना कि वे होम्योपैथी चिकित्सा व्यवसाय में सद्गुणों के नियम को लागू करने के प्रयोजन से रोगी और औषधियों के निश्चयीकरण के लिये विशिष्ट व्यावहारिक लक्षणों में से विलक्षण, दुर्लभ और असामान्य लक्षणों को छान सकें।

शरीर रचना विज्ञान

शरीर रचना विज्ञान की शिक्षा की योजना हम प्रकार बनाई जानी चाहिये कि उससे विद्यार्थी को मानव शरीर की संरचना का सामान्य कार्यमाध्यक ज्ञान प्राप्त हो सके। जिन व्योरे को कंठस्थ करने की उनसे अपेक्षा की जाये उनकी संख्या न्यूनतम कर दी जानी चाहिये। सबसे अधिक बल शब्द की स्थिर संरचनाओं की बजाय संप्राण शरीर की क्रियात्मक शरीर रचना पर तथा सामान्य शरीर रचनात्मक स्थितियों और अन्तरांग, पेशियों, रक्तवाहिकाओं, तंत्रिकाओं तथा समवाहिकाओं के मुख्य संबंधों पर दिया जाना चाहिये। शब्द का अध्ययन इस साध्य का साधन मात्र है। विद्यार्थियों पर ऐसे सूक्ष्म शरीर रचनात्मक व्योरे का भार नहीं डाला जाना चाहिये जिनका कोई नैदानिक महत्व नहीं है।

यद्यपि विद्यार्थी को रोग-विषयक अध्ययन के लिये तैयार करने के उद्देश्य से सम्पूर्ण शरीर का विच्छेदन अत्यन्त आवश्यक है तथापि यदि स्थलाकृति संबंधी व्योरे को मात्रा कम कर दी जाये और निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखा जाये तो विच्छेदन का भार कम किया जा सकता है और समय की काफी बचत हो सकती है:—

1. केवल ऐसे व्योरे आयुर्विज्ञान के विद्यार्थियों के सामने रखे जायें जिनका उसके लिये कोई व्यावसायिक या सामान्य शिक्षा संबंधी मूल्य हो।
2. विच्छेदन का प्रयोजन तकनीकी दृष्टि से विशेषतः विच्छेदक तैयार करना नहीं है। इसका प्रयोजन तो विद्यार्थी को यह समझाना है कि शरीर

और उसके कार्य के बीच क्या संबंध है और विच्छेदन की योजना इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए होनी चाहिए। उदाहरणार्थ, छोटी और नैदानिक दृष्टि से महत्वहीन रक्त वाहिकाओं की उपेक्षा कर देने के परिणामस्वरूप अपेक्षाकृत साफ विच्छेदन होता है तथा मुख्य संरचनाओं की और उनके स्वाभाविक संबंधों की अधिक स्पष्ट समझी सामने आती है।

3. आजकल विच्छेदन के द्वारा जो कुछ पढ़ाया जाता है उसमें से काफी बातें तैयार किए हुए विच्छेदित नमूनों के माध्यम से उपयोगी रूप से प्रदर्शित की जा सकती है।

4. सामान्य रेडियोलॉजिकल शरीर रचना भी व्यावहारिक प्रशिक्षण का भाग हो सकती है। शरीर की संरचना को उसके कार्यात्मक पहलु से जोड़कर पेश किया जाना चाहिए।

5. वास्तविक विच्छेदन से पूर्व उस अंग या पद्धति की, जिसके विषय में चर्चा हो रही है, सामान्य संरचना के और उसके बाव उस कार्य के संबंध में लेक्चर होने चाहिए। इस प्रकार विद्यार्थियों को शरीर रचना और शरीर क्रिया संबंधी ज्ञान एकीकृत रूप में प्रदान किया जा सकता है तथा शरीर रचना विज्ञान और शरीर क्रिया विज्ञान के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को अधिक विलक्षण, रोचक और व्यावहारिक बनाया जा सकता है।

6. शरीर रचना विज्ञान के सिद्धान्त संबंधी अधिकतर जटिल ट्यूटोरियल कक्षाओं में प्रदर्शन सहित अंतर्गत किए जा सकते हैं।

नैदानिक और अनुप्रयुक्त शरीर रचना विज्ञान पर कुछ लेक्चरों या प्रदर्शनों का आयोजन पाठ्यक्रम के बाव वाले भाग में किया जा सकता है। वे जहां तक सम्भव हो किसी चिकित्सक (क्लीनिकियन) द्वारा दिए या दिए जाने चाहिए और उनका उद्देश्य भौतिक चिह्नों के शरीर रचनात्मक आधार तथा चिकित्सक के लिए शरीर रचनात्मक ज्ञान का मूल्य प्रदर्शन करना होना चाहिए।

संज्ञात्मक

शरीर के विभिन्न रचनात्मक भागों के सामान्य कार्यसाधक ज्ञान सहित मानव शरीर रचना का सम्पूर्ण पाठ्यक्रम।

टिप्पण—ट्यूटोरियल कक्षाओं में किए गए प्रदर्शनों की गणना साधारण कक्षा लेक्चरों के रूप में की जा सकती है।

विद्यार्थियों से अपेक्षा की जाएगी कि वे शरीर रचनात्मक नमूनों को पहचान लें और हाथ ही में किए गए विच्छेदनों में संप्रदर्शित संरचनाओं को पहचान कर उनके संबंध में प्रश्नों के उत्तर दें, अस्थियों और उनकी सन्निधियों से जिसके अंतर्गत दशोल्काएँ (वर्टेब्रे) और खोपड़ी (स्कल) भी हैं, तथा धीरे अस्थियों (लांग बोन्स) के अस्थीमयन (आसीफिकेशन) की रीति से अवगत हों।

जहां तक संरचना की या औषधि और शल्यक्रिया में उनके उपयोग को समझने के लिये आवश्यक है उसको छोड़कर सूक्ष्म विवरणों पर बल नहीं दिया जायेगा। विद्यार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि उन्हें पेशियों की क्रिया को समझने के उद्देश्य से पेशियों के संगणनों (अटैचमेंट्स आफ मसल्स) की जानकारी हो किन्तु उनसे यह अपेक्षित नहीं है कि उन्हें हाथ और पैर की प्रत्येक पेशी या अस्थि की उत्पत्ति और सन्निवेश के यथातथ्य विवरणों का तथा खोपड़ी की लघु अस्थियों (स्माल बोन्स) की संख्याओं और उनके विवरणों का ज्ञान हो।

स्थूल शरीर रचना (ग्रान्ड एनेटमि):

- (i) ऊर्ध्व शाखा, अर्ध-शाखा, श्रॉंग शीघ (पैक्सि हेड), श्रोत्र, वक्ष तथा उदर का अध्ययन प्रवेशानुसार और एक एक तंत्र के अनुसार किया जाये।
- (ii) विकास और अनुप्रयुक्त शरीर के प्रति विशेष निर्वचन से अन्तः-स्नायी (एन्डोक्राइन) अंग।

जीवित व्यक्ति :

विद्यार्थी को पृष्ठ शरीर (सर्फेस अनाटमि) और जीवित व्यक्ति पर अंगरेखांकन (सर्फेस मार्किंग) की परीक्षा देने के लिये तैयार रहना चाहिये।
विकिरण चित्र (रेडियोग्राफ) :

विद्यार्थियों से सामान्य व्यक्ति के विकिरण चित्रों के विषय में प्रश्न पूछे जायें।

सामान्य तंत्रिका तंत्र :

मस्तिष्क, सुषुम्ना (स्पाइनल काइड) और मस्तिष्कावरण (मैनिनजिस) की खाली आँख शरीर (नैकेड आइ अनाटमि) का तथा मुख्य केन्द्रकों (न्यूक्लिआइ) और पथों (ट्रैक्ट) की स्थिति, संबंधों और क्रियात्मक महत्व का ज्ञान।

प्रयोगात्मक

(i) मानव शरीर के विच्छेदन का पाठ्यक्रम।

टिप्पण—(क) विद्यार्थियों के लिये विच्छेदन काइडों की व्यवस्था की जानी चाहिये। शरीर के भाग विद्यार्थियों को आकर्षित कर दिये जाने चाहिये और जब वे प्रत्येक भाग के संबंध में प्रदर्शनों द्वारा आयोजित मौखिक परीक्षा पास कर लें उसके बाद ही यह लेखन किया जाये कि उन छात्रों का विच्छेदन कार्य पूरा हो गया है। विच्छेदन के लिये कम से कम चार मास की अवधि होनी चाहिये।

(ख) शर्बों की कमी की दशा में शरीर के प्रत्येक भाग के संबंध में दस विद्यार्थियों के एक बैच द्वारा, विच्छेदन के प्रदर्शन के समय नियमित उपस्थिति की बाबत यह लेखन किया जा सकता है कि विद्यार्थियों ने वस्तुतः विच्छेदन किया है।

(2) निम्नलिखित के अंगरेखांकन के संबंध में प्रयोगात्मक प्रदर्शनों का पाठ्यक्रम :

- (i) महत्वपूर्ण अन्तरांग
- (ii) धमनियाँ
- (iii) तंत्रिकाएं
- (iv) मस्तिष्क के नैदानिक महत्व के क्षेत्र
- (v) अस्थि निर्दिष्ट बिंदु (जोनी लैडमार्कस)

शरीर रचना विज्ञान के लिखित पथों का वितरण निम्नानुसार होगा :

पथ I — ऊर्ध्व शाखा, सिर, चेहरा, ग्रीवा और मस्तिष्क।

पथ II — अधः शाखा, वक्ष, उदर और श्रोणि।

शरीर क्रिया विज्ञान

शरीर क्रिया विज्ञान के पाठ्यक्रम का प्रयोजन सामान्य मानव जीव के विभिन्न अंगों और तंत्रों के कृत्यों, उनकी प्रक्रियाओं और उनके अन्तः संबंधों की, रोग में उनके विधोर्भों के आवश्यक परिचय के रूप में शिक्षा देना है और विद्यार्थियों को, उस समय जब कि सामान्य स्थिति से होने वाले विचलनों का वे निदान और उपचार कर रहे हों, उपयोग के लिए निर्देश के सामान्य मानकों से सज्जित करना है। होम्योपैथी चिकित्सक के लिए मानव जीव (ह्यूमन ऑर्गेनिज्म) एक समग्र एकीकृत शरीर, जीवन और मन है। और यद्यपि जीवन के अन्तर्गत सभी रासायनिक—भौतिक प्रक्रियाएं आती हैं तथापि वह उन सबसे परे है। मानव जीव को अनु-प्राणित करने वाले प्राणाधार बल (बाइोटल फोर्स) के बिना रोग के कोई लक्षण नहीं हो सकते हैं और रोग की दशा में मुख्य रूप से यही प्राणाधार बल अव्यवस्थित हो जाता है। शरीर क्रिया विज्ञान की शिक्षा, प्राणाधार

बटना और स्वास्थ्य में उनकी आधारेण रासायनिक भौतिक प्रक्रियाओं के वर्णन के दृष्टिकोण से की जानी चाहिए।

ऊतक विज्ञान (हिस्टोलॉजी) पर कुछ धाँड़े से नेक्चर वांछनीय है।

सैद्धांतिक

शरीरी रचना विज्ञान के सामान्य सिद्धांतों और तथ्यों के विषय में योजनाबद्ध रूप में लेक्चरों का पाठ्यक्रम।

- (i) ऊतक विज्ञान (हिस्टोलॉजी)—अन्तु कोशिका (एनिमल सेल), उपकला ऊतक (एपीथीलियल टिशू), संयोजी ऊतक (कनेक्टिव टिशू), पैथी ऊतक (मस्क्यूलर टिशू), तंत्रिका ऊतक (नर्वस टिशू)।
- (ii) संकुचन (कन्ट्रैक्शन)—सरल संकुचन - टिटैनी, आन्ति, संकुचन से सम्बद्ध मुख्य परिवर्तन। ऐच्छिक और अनैच्छिक पेशियों के बीच कृत्यों का अन्तर, म्यूज काल्डिय (रिगर माटिस)।
- (iii) पाचन तंत्र—जिसके अन्तर्गत आहार विज्ञान भी है। खाद्य पदार्थ, बिटामिन, घासमनी (ईसोफेगस), उदर, बृहन्ना और क्षुद्रान्न, और क्षुद्रान्न, पाला ग्रन्थियाँ (सेलाइवरी ग्लैंड्स), अग्न्याशय (पैंक्रियाज) के कृत्य। सार का संघटन और उसके कृत्य, जठर रस (गैस्ट्रिक जूस), अग्न्याशय रस, पित्त और आंत्ररस का संघटन और उनके कृत्य, रीधियों के कृत्य। खाद्य पदार्थों का अवशोषण, यकृत (जिगर) के कृत्य। निगरण (निगलन), पुरःसरण, मलौत्सर्ग की क्रियाविधि।

एन्जाइम की परिभाषा और उनकी सामान्य क्रिया

वसा, कार्बोहाइड्रेट और प्रोटीनों का सामान्य जयापचय।

(iv) श्वसन तंत्र :

श्वस प्रणाल, श्वसनी और फेफड़ों की संरचना, श्वसन क्रिया विधि, श्वसन के दौरान गैसों का विनिमय। श्वसन वायु, पूरक वायु, सम्पूरक वायु, अवशिष्ट वायु, प्राण दक्षता, अश्वसन, श्वसावरोध और उसके प्रक्रम, ऊतक श्वसन।

(v) परिसंचरण तंत्र :

(क) रक्त—उत्पन्न संघटन, लाहित रक्त कोशिकाओं और श्वेत रक्त कोशिकाओं का जीवनचक्र, उनके कृत्य, रक्त का स्कंदन।

(ख) दूध—संरचना, तंत्रिका विनरण, हृद् चक्र, हृद् ध्वनि—उनका स्वरूप और कारण—कार्य-संबंध, हृद् रोग, विद्युत हृदं लेख (ई० सी० जी०)।

(ग) रक्त बाहिकाएं।

धमनियों, शिराओं और कोशिकाओं का ऊतक विज्ञान। रक्त प्रवाह की क्रियाविधि।

नाड़ी—उसके सामान्य लक्षण

रक्तदाब, बाहिका तान—बाहिका प्रेरक तंत्रिका क्रिया विधि। जालीय अन्तःकला तंत्र का संक्षिप्त वर्णन और उसके कृत्य, तिल्ली, अंतरा बाहिका स्कंदन की क्रियाविधि, रोगक्षमता (इम्पुनिटी)। सामान्य उद्दीपनों के प्रति जैव प्रतिक्रियाएं।

(vi) लसीका तंत्र :

लसीका ग्रन्थियों और बाहिकाओं की संरचना, लसीका का संघटन। लसीका प्रवाह की क्रिया विधि।

(vii) मूत्र तंत्र :

बृक्क (गुरखे) की संरचना और उनके कृत्य, मूत्र और उसके भौतिक लक्षण तथा रासायनिक संघटन, सामान्य/असामान्य घटक और उनका पता लगाना।

(viii) रचनात्मक

त्वचा की संरचना और उसके कृत्य । स्वेद ग्रंथियों—उनकी संरचना । स्वेद का सघटन ।

(ix) जन्तु ऊष्मा । ऊष्म रक्तक जन्तुओं में उसका विलियमन ।

(x) बाहिरीहीन ग्रंथियां । थाइराइड और पराथाइराइड की संरचना और उनके कृत्य । अधिवृक्क (सुपरारीनल) और पियूष ग्रंथियों । अग्न्याशय (पैंक्रियाज) और मधुमेह ।

(xi) तंत्रिका और तंत्रिका तंत्र

(क) तंत्रिकाओं का वर्गीकरण

(ख) केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र

(ग) मस्तिष्क संरचना और प्रमस्तिष्क प्रान्तस्था (सेरिब्रल कोर्टेक्स), (प्रमस्तिष्क वृक्क क्षेत्र/प्रान्तस्था केन्द्र)

(घ) मैडुला, बाह्यिका प्रेरक, श्वसन और हृद् केन्द्र

(ङ) अनुमस्तिष्क (सेरिबेलम) संरचना और अनुमस्तिष्क के कृत्य ।

(च) सुषुम्ना — सुषुम्ना में आरोही और अवरोही व्यपजनन के चिह्न । सुषुम्ना के कृत्य

(छ) स्वचालित तंत्रिका तंत्र ।

(ज) अनुकम्पी (सिम्पेथेटिक) तंत्रिका तंत्र ।

(झ) परा अनुकम्पी तंत्रिका तंत्र ।

(xii) विशेष संवेदन :—

(क) नेत्र गोलक (आई बाल) के विभिन्न भागों की संरचनाएं और उनके कृत्य, दृष्टि रेटिना (वृष्टिपटल) प्रतिबिम्ब (इमेज) की रचना । समंजन की क्रियाविधि, अपवर्तन की सामान्य वृष्टियां ।

(ख) वाह्य, मध्य और आध्यान्तर कर्ण का श्रवण शरीर (ड्रियरिंग अनाटमी) और कृत्य ।

(ग) स्वाद और गंध । जिह्वा के अंकुरक की किस्में और उनकी संरचना ।

(घ) स्वाद तंत्रिका, घ्राण तंत्रिका ।

(ङ) त्वचा और पेशी संवेदन - अन्तर्ग (एण्ड आर्गन) की किस्में, त्वचा संवेदन, पेशी संवेदन की किस्में ।

(xiii) जनन तंत्र - पुरुष जननैन्द्रिय, नारी जननैन्द्रिय, डिम्ब (ओवम) का निषेचन (फर्टिलाइजेशन), स्तन ग्रंथियां, रजोधर्म । जनन के संबंध में बाहिरीहीन ग्रंथियां ।

प्रयोगात्मक

(1) ऊतकों (टिशू) और अंगों, अस्थि, उपास्थि (काटिलेज), कोशिकीय ऊतक शिराएं, धमनियों, यकृत (जिगर), फेफड़े, पुच्छ डिम्बवाहिनी मरी, सुषुम्ना तंत्रिका, लसीका ग्रंथि, तिल्ली, वृक्क की अनुप्रस्थ काट (क्रॉस सेक्शन) ।

(2) रक्त फिल्मों का नैपथी और उनका अभिरंजन । रक्त कोशिकाओं की पूर्ण और विभेदी गणना ।

(3) हॉमोम्योविन मापी और रक्तदाब मापी का उपयोग । तंत्रिका पेशी शरीर से संबंधित कुछ प्रयोगों का प्रदर्शन ।

(4) मूत्र के सामान्य, प्रसामान्य और असामान्य घटकों की रासायनिक परीक्षा ।

टिप्पण : विद्यार्थियों से अपेक्षित है कि उनके पास सुनिश्चित शरीररचनिक तथ्यों और सुस्थापित सिद्धांतों का, उनके संबंध में अन्तिम और संविवादात्मक परिकल्पनाओं को छोड़कर, साधारण और कार्यसाधक ज्ञान हो । शरीर रचना विज्ञान के

सम्पूर्ण विषय का अध्यापन एस० हेमीमन द्वारा प्रतिपादित जैव बस सिद्धान्त (बाइडल फोर्ट थ्योरी) के संबंध में जैव घटना और उनकी आधारभूत रासायनिक-भौतिक प्रक्रियाओं के वर्णन की दृष्टि से किया जाए ।

शरीर रचना विज्ञान के सिद्धित पक्षों निम्नलिखित रूप से होंगे :—

पक्ष I — ऊतक विज्ञान, रक्त और लसीका, हृद्वाहिका तंत्र, जासीय अन्तः कला तंत्र, तिल्ली, श्वसनतंत्र, मूत्र तंत्र, त्वचा, शरीर ताप का विलियमन, ज्ञानेन्द्रिय, तंत्रिका पेशी शरीर ।

पक्ष II — अंतः स्त्री अंग, तंत्रिका तंत्र, जनन तंत्र, पाचन तंत्र, वयापचय, एन्जाइम, पोषण ।

डी०एच०एम०एल-2 परीक्षा

विकृति विज्ञान और जीवाणु विज्ञान

विकृति विज्ञान और जीवाणु विज्ञान का अध्यापन अत्यन्त सतर्कता से और विवेकपूर्वक किया जाना चाहिए । ऐलोपैथी में रोग की दशाओं के साथ ऊतक विकृति विज्ञान और सूक्ष्म जीवी को सहबद्ध किया जाता है तथा उसमें जीवाणु की रोगों का सोपाधि कारण माना जाता है किन्तु होम्योपैथी रोगों को परिवर्तित संवेदना और कार्यों के रूप में अभिव्यक्त जैव-शक्ति का गतिशील विशेष मात्र मानती है जिसकी परिणति घोर ऊतक परिवर्तनों में या अन्यथा हो सकती है । अतः ऊतक परिवर्तन स्वयं रोग का आवश्यक भाग नहीं है और तदनुसार वे होम्योपैथी में औषधि द्वारा विकृति के विषय नहीं हैं ।

2. लुई पास्चुर और राबर्ट कोच की खोजों के बाद से आयुर्विज्ञान जगत में “रोगाणुओं को मारकर रोगमुक्ति कीजिए” जैसे सरल सिद्धांत में विश्वास किया जाने लगा है । किन्तु उसके बाद के अनुभव से यह प्रकट हुआ है कि संक्रमण और वस्तुतः रोग फैलने के पीछे एक बुद्धिमान बात जिसे रोगी की ‘सुग्राह्यता’ कहते हैं, होती है । होम्योपैथी का मुख्य संबंध विभिन्न प्रकार के सूक्ष्म जीव सम्बन्धी या अन्यथा, विकारी घटकों के प्रति मानव जीव की प्रतिक्रियाओं से है, अतः होम्योपैथी में रोग होने में रोगाणु या जीवाणु की भूमिका का सर्वथा गौण स्थान है ।

3. फिर भी जीवाणु विज्ञान की जानकारी एक पूर्ण होम्योपैथी काय चिकित्सक के लिए आवश्यक है किन्तु इसकी आवश्यकता चिकित्साशास्त्र से मिला प्रयोजनों जैसे कि निदान, पूर्वानुमान, रोग निवारण और सामान्य ब्रबन्ध के लिए है । इसी प्रकार विकृति विज्ञान की जानकारी रोग अवधारण पूर्वानुमान, रोगी के लक्षणों और रोग के लक्षणों के बीच विभेद करने के लिए तथा उसके लिए उपयुक्त होम्योपैथी की मात्रा और शक्ति के समायोजन के लिए आवश्यक है ।

4. विद्यार्थियों को विकृति विज्ञान में केवल एक व्यापक आधारीक प्रशिक्षण, जो विशेषज्ञता पूर्ण न हो, दिया जाना चाहिए । विकृति विज्ञान के अध्यापकों को यह बात कभी नहीं भूलनी चाहिए कि वे चिकित्सा व्यवसायियों को और विशेष रूप से होम्योपैथी के चिकित्सा व्यवसायियों को प्रशिक्षण दे रहे हैं न कि विकृति विज्ञान के प्रशिक्षण और विशेषज्ञों को । इस विषय के अध्यापन की विषयवस्तु जीवित रोगी, न कि शव, होनी चाहिए ।

5. विकृति विज्ञान में शिक्षा का प्रयोजन यह है कि विद्यार्थी रोग लक्षणों और आधारी विकृति विज्ञान के आधार के अन्तरसम्बन्धों का अर्थ लगाने के लिए व्यक्तिपरक लक्षणों और वस्तुपरक लक्षणों के बीच सम्बन्ध स्थापित कर सकें ।

क. सामान्य विकृति विज्ञान :

- (1) प्रस्तावना—विकृति विज्ञान का प्रविषय पुरानी विचारधारा और नई विचारधारा (होम्योपैथी की) विकृति विज्ञान का अध्ययन कैसे करें ।
- (2) स्वास्थ्य और रोग, रोग हेतुकी (इटियोलोजी), संक्रमण निमित्त अंगीकार (इंफेसिट एंजाइन) ।

(3) शोथ ।

शोथ की धारणा—शोथ हेतुकी की घटना—शोथ की रोग अभिव्यक्ति। शोथ का वर्गीकरण—विशेष ऊतक प्यता का शोथ

परिसंचरण के विशेष ।

(1) अतिरिक्ता (मक्रिय या निष्क्रिय)

(2) घनासता (घाम्मोसिस) और अन्तःशून्यता जिसके अंतर्गत संक्रमण भी है ।

(3) शोफ

(4) ज्वर

(5) पुनर्जनक ऊतक परिवर्तन । अतिवृद्धि और अतिविकसन । विरोहण प्रक्रिया, विशेष संरचनाओं का विरोहण ।

(6) व्यपजनक ऊतक परिवर्तन :

शोथ अग्रम उत्सृष्ट—श्लेष्माम व्यपजनन, काषाभ व्यपजनन—व्यपजनन—मिललाइड व्यपजनन—कोलाइड व्यपजनन—वसा व्यपजनन—लिपाइड अंतः संचरण—ग्लाइकोजन अंतः संचरण—वर्णक परिवर्तन—परिगलन—कोष ।

(7) प्रफुली ऊ तक परिवर्तन :

(क) अर्बुद, हेतुकी वर्गीकरण, सुदृश्य अर्बुद, तंतु अर्बुद, पेरी अर्बुद, वसा अर्बुद, अस्थिबुद, उपास्थि अर्बुद, लसीकाबुद, दुर्बुद अर्बुद, (i) कैंसर (ii) साकॉमा, सिस्ट, संक्रामक कणिका गृह्यता (इन्फेक्टिव ग्रैनुलामाटा) ।

(8) इम्युनिटी (रोगक्षमता)—स्वाभाविक रोगक्षमता—अजित रोग-क्षमता—सक्रिय रोगक्षमता—निष्क्रिय रोगक्षमता, भक्षण कोशिका क्रिया, आम्बोसिन, रसायन अनुचलन—जीवाणु संलयन प्रतिविष समूहिका, प्रैसिपिटिन—कोशिकासायिका (साइटोसाइ-सिन), किण्वन विरोधी, लिपाइड विरोधी—एल्बीमिनोलाइ-सिस बैक्टीरियोट्रोपिन, रोगक्षमता प्रतिजन (इम्युनिटी एण्टी जेन) के सिद्धांत—तीव्रप्राहिता (ऐनाफिलेक्सिस) स्तब्धता (शाक) ।

ख. विशेष विकृति विज्ञान :

(1) रक्त के रोग—सामान्य बातें—प्रणाशी अरक्तता—अविकासी अरक्तता—हृरितरोग, श्वेतरक्तता ।

(2) परिसंचरण तंत्र के रोग—हृदयावरण शोथ—अन्तर्हृदयशोथ—घमनी कठिन्म—सिफिलिसी महाघमनी शोथ अमृदता ।

(3) मस्तिष्कावरण शोथ ।

(4) श्वसन तंत्र के रोग ।

(5) शुक के रोग ।

(6) पोषण पथ के रोग—पेटिक ग्रन्थ—हैजा—टाइफाइड, ग्रन्थ—यज्ञमज ग्रन्थ—अमीबी पेचिस—वण्डाजु अतिसार ।

(7) जिगर का सिरोसिस ।

(8) अज्ञात कारणों से हुए रोग, बेरी बेरी—जनपादिक जलशोफ ।

ग. जीवाणु विज्ञान :

निम्नलिखित सूक्ष्म जीवियों की माफॅलोजी जैविकी और, उनके रोगजनक गुण :

पूयजन्य कार्कई, न्यूमोकाक्स और गोमोकाक्स बैसीलस कोलाई, बैसीलस कोनिस्स, बैसीलस, डिप्थीरिया, बैसीलस ट्युबरकुलसिस, बैसीलस टिटैन्स, बैसीलस टाइफासिस, बैसीलस डिसेन्टेरिकस, बैसीलस सेप्रास, बैसीलस पेस्टिस, बैसीलस कोमा, डिप्थीकाक्स इन्ट्रासेल्यूलरिस, मैनेब्राइटिस, माइक्रो कोकस कैटारालिस, बैसीलस एंथ्रैक्स । बैसीलस पराटाइफोस

घ. परजीवी विज्ञान :

निम्नलिखित की माफॅलोजी, जैविकी और उनके रोगजनक गुण :

(1) प्रोटोजुआ, एन्टामीबा, ट्रिस्टोलिटिका ।

(2) मैस्टीगोफोर खोशमैनिमा ।

(3) स्पेरोजोआ प्लाज्मोडियम वाक्वेन्स (मलेरिया) पी फाल्सीफ्यूरम

(4) क्रुमिरेणता ।

(5) सिफिलिस की स्पेइरोकीटवा, वाहल रोग, उन्तुरदंश ज्वर, ऐस्केरिया लम्बीकाइडिस—आक्सीयूरिस, वैरीक्युलैरीज फाइलेरिया ब्रुक्काफटाई—एंकिनोस्टोमा हुओइनेल, टीनिया सागी नाटा, टी० सोलियम, टैकिनोकोकम ।

ङ. विषाणु :

चेचक, छोटी माता, खसरा, जुकाम, हर्पीज, जोस्टर, तीव्र अग्र पोल्या, इम्फ्लुएंजा, मस्तिष्कशोथ, जानपदिक संक्रामक यकृत शोथ, प्राथमिक अग्ररूपी न्यूमोनिया ।

प्रयोगात्मक

1. ऊतकों और अंगों के ऊतक-विकृति अध्ययनों के 20 प्रदर्शन ।

2. रोगजनक जीवों के सूक्ष्म-सूक्ष्मदर्शीय निर्देशों के 20 प्रदर्शन ।

3. रक्त, मूत्र, पस, शुक और निःश्रावों जैसे विकारी पदार्थों के संग्रहण, तैयारी और परीक्षा की तकनीक । इसके साथ-साथ प्रदर्शन किए जाएंगे ।

व्याय आयुर्विज्ञान और विषविज्ञान

यह विषय विद्यार्थियों के लिए व्यावहारिक महत्व का है क्योंकि होम्योपैथी के काय-चिकित्सक सरकार द्वारा ऐसे क्षेत्रों में नियुक्त किए जाने हैं जहां उनको चिकित्सा विधिपरक मामलों से सावधान्य देने के अतिरिक्त उनसे निपटना पड़ सकता है और उन्हें शव परीक्षाएं करनी पड़ सकती हैं । इस समय व्याय आयुर्विज्ञान के संबंध में जो प्रशिक्षण दिया जाता है वह इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अपर्याप्त है ।

इस पाठ्यक्रम में लैक्चरों की एक श्रृंखला और प्रदर्शन होने चाहिए जिनके अन्तर्गत निम्नलिखित हों :—

1. विधिक प्रक्रिया :

चिकित्सा न्यायशास्त्र की परिभाषा, न्यायालय और उनकी अधिकारिता ।

2. चिकित्साचार ।

चिकित्सक रजिस्ट्रीकरण सम्बन्धी विधि तथा चिकित्सा व्यवसायी और राज्य, चिकित्सा व्यवसायी और रोगी के बीच चिकित्सीय सम्बन्ध, अनाचार जिसके अंतर्गत वृत्तिक गोपनीयता भी है चिकित्सा व्यवसायी और विभिन्न प्रांतीय और संघीय विधान (अधिनियम) जैसे कि कर्मचार, प्रतिकार अधिनियम, कुष्ठरोग अधिनियम, लोक स्वास्थ्य अधिनियम, क्षति अधिनियम, बालक विवाह अधिनियम, बॉस्टेड स्कूल अधिनियम, गर्भ का चिकित्सीय समापन अधिनियम, पागलपन अधिनियम, भारतीय साध्य अधिनियम, केन्द्रीय सरकार स्वास्थ्य अधिनियम, 1973 आदि ।

3. व्याय आयुर्विज्ञान :

जीवित और मृत व्यक्तियों की अंगों, अस्थियों, दन्तों आदि की परीक्षा और पहचान ।

मृत्यु : चिकित्सा-विधिपरक, मरणोत्तर चिन्ह, प्रक्रम और परिणाम, प्रतिभवन (सहना), समीकरण, साक्ष्यीकरण, मृत्यु के रूप, कारण, अभिकरण, प्रारंभ आदि । हमला, घाव, क्षति तथा हिंसा द्वारा मृत्यु, स्वाभाविक शोथ मृत्यु, रक्त परीक्षा, रक्त धब्बे/शुक धब्बे, दुग्ध, तप्तद्रवदाह, तड़ित आधान आदि घुसमरी, सगर्भता, प्रसव, गर्भगत, शिशुमृत्यु मैंगिक अपराध ।

राज्य के सम्बन्ध में उम्मतता, जीवन और दुर्घटना बीमा/विषय विज्ञान : सामान्य रूप से विषाक्तता, विभिन्न विषयों के लक्षण और

उपचार, मरणोत्तर रूप और परीक्षाओं के विषय में लेखकों का एक पृथक पाठ्यक्रम होना चाहिए।

निम्नलिखित विषयों का अध्ययन :

खनिज अम्ल, संश्लेषक ऊर्ध्वपातज, संहिया और उसके योगिक, ऐल्कोहाल, अफीम और उसके ऐल्केनाइड, कार्बोसिलिक अम्ल, कार्बनमोनो-क्साइड, कार्बनडाईऑक्साइड, मिट्टी का तेल, कैनेसिस इन्डिका (बांग का पौधा) कोकोन, बेलाडोना स्ट्रुचनिन तथा नक्स वामिका, एकोनाइट, ओलिफण्डर, सर्पविष, पूसिक अम्ल, मिट्टर विषाक्तता।

4. चिकित्सा-विधि परक शब्द परीक्षा :

मरणोत्तर रूप को लेखक करना, रासायनिक परीक्षाओं को सामग्री भोजना। प्रयोगशाला तथा रासायनिक परीक्षण के निष्कर्षों का निर्बचन। उन विद्यार्थियों को जो न्याय—आयुर्विज्ञान सम्बन्धी लेखकों के पाठ्यक्रम में उपस्थित हो रहे हैं, न्याय—आयुर्विज्ञान के प्रोफेसरों द्वारा किये जाने वाले चिकित्सा-विधिपरक शब्दपरीक्षाओं के समय उपस्थित रहने के सभी संभव अवसरों का लाभ उठाना चाहिए। यह आशा की जाती है कि प्रत्येक विद्यार्थी कम से कम दस शब्द परीक्षाओं के समय उपस्थित रहेगा।

5. प्रदर्शन :

1. आयुष।
2. कार्बनिक और अकार्बनिक विषले पदार्थ।
3. विषले पाषप।
4. चिकित्सा-विधिपरक रुचि के चाट, आरेख, माडल, एक्सरे फिल्म आदि।

निरोधक और सामाजिक आयुर्विज्ञान

(जिसके अन्तर्गत स्वास्थ्य शिक्षा और पारिवारिक आयुर्विज्ञान भी है।)

इस पाठ्यक्रम की शिक्षा आयुर्विज्ञान अध्ययन के तृतीय वर्ष में लेखकों, प्रदर्शनों और फील्ड अध्ययन द्वारा दी जानी चाहिए। यह विषय अत्यधिक महत्व का विषय है और आयुर्विज्ञान अध्ययन की पूरी अवधि में विद्यार्थी का ध्यान निरोधक आयुर्विज्ञान के महत्व और वास्तविक स्वास्थ्य की अभिवृद्धि के उपायों की ओर दिलाया जाना चाहिए।

उसका कार्य रोगरूप प्रयोजनों के लिए होम्योपैथी की औषधियों का निर्देशन करना मात्र नहीं है बल्कि समाज में उसे उससे अधिक व्यापक भूमिका निभानी है। उसे ग्रामीण और नगरीय दोनों ही क्षेत्रों की राष्ट्रीय स्वास्थ्य समस्याओं से भली भाँति परिचित होना चाहिए जिससे कि उसे न केवल रोगमुक्ति के क्षेत्र में अपितु परिवार नियोजन सहित निरोधक और सामाजिक आयुर्विज्ञान के क्षेत्र में भी प्रभावी भूमिका निभाने के लिए उत्तरदायित्व सौंपे जा सकें।

(i) शरीर क्रियात्मक स्वास्थ्य विज्ञान :

- (क) आहार और पोषण — स्वास्थ्य और रोग के सम्बन्ध में आहार/संयुक्त आहार/पोषण हीनता और पोषण संबंधी सर्वेक्षण। आहार संसाधन/रूध का पास्चुरीकरण/खाद्य अपमिश्रण और खाद्यनिरोधक, खाद्य विषाक्तता।
- (ख) वायु, प्रकाश और धूप।
- (ग) जलवायु का प्रभाव—आर्द्रता, तापमान, दाब और मौसमविज्ञान सम्बन्धी अन्य परिस्थितियाँ—मुख्य क्षेत्र/अति भीड़भाड़ का प्रभाव।
- (घ) वैयक्तिक स्वास्थ्य — (स्वच्छता, आराम, निद्रा, कार्य), शारीरिक व्यायाम और ऊर्णकटिबन्ध क्षेत्रों में स्वास्थ्य की देखभाल के विषय में प्रशिक्षण।

(ii) पर्यावरण स्वच्छता :

- (क) पर्वत और मनुष्य।

(ख) वायुमण्डलीय प्रदूषण — वायु शोधन, वायु विसंक्रमण, वायु-वाहित रोग।

(ग) जल प्रदाय — स्रोत और उपयोग, अशुद्धियाँ और शोधन। ग्रामीण और नगरीय क्षेत्रों में सार्वजनिक जल प्रदाय। पेय जल के मानक, जलवाहित रोग।

(घ) मलवाहन — गाँवों, कस्बों और नगरों में नदीके, सेप्टिक टैंक, सूखी मिट्टी शौचालय, शौचघर मल व्ययन, मृत्तक का व्ययन, कचरे का व्ययन, भस्मीकरण।

(ङ०) मेषों और उत्सवों के अवसर पर स्वच्छता।

(च) विसंक्रमण — निः संक्रामक गंधहर, रोगाणु रोधक, रोगाणु-नाशी। विसंक्रमण और निर्बाधकरण के तरीके।

(iii) निरोधक आयुर्विज्ञान:

(क) संचारी रोग, ज्वर, हैजा, चंचक, डिफ्थीरिया, कुष्ठरोग, यक्ष्मा, मलेरिया, कलाजार, फाइलेरिया, सामान्य विषाणु रोग जैसे कि जुकाम, खसरा, छोटी माता, पोलियो, संक्रमी यकृत शोथ, कुनि संक्रमण, आन्त ज्वर (मोती छारा) और पेचिस के तथा ऐसे पशु रोगों के जो सन्तुष्ट को संचरणीय हैं, निवारण और नियंत्रण के सिद्धांत। उनका वर्णन, उनके निवारण के तरीके द्वारा सम्पर्क, विष्णुक, कोड़ों, पशु फाउन्टिनों आदि द्वारा उनका फैलना। रोगनिरोध और टीके के सम्बन्ध में होम्योपैथी का दृष्टिकोण।

(ख) रोग का नैसर्गिक इतिहास :

(iv) परिवार नियोजन — जानपद विज्ञान, संचार के माध्यम, राष्ट्रीय परिवार नियोजन कार्यक्रम। गर्भनिरोधकों के प्रयोग सम्बन्ध में जानकारी और दृष्टिकोण। जन संख्या और वृद्धि नियंत्रण।

टिप्पण.— फील्ड प्रदर्शन — जल शोधन संयंत्र। संक्रामक रोग अस्पताल आदि।

मैटीरिया मेडिका

होम्योपैथी मैटीरिया मेडिका

अन्य मैटीरिया मेडिका की तुलना में होम्योपैथी मैटीरिया मेडिका भिन्न रूप से तैयार किया गया है। होम्योपैथी में यह समझा जाता है कि शरीर के अलग-अलग अंगों या तंत्रों पर या पशुओं पर या उनके अलग-अलग अंगों पर औषधियों की क्रिया का अध्ययन ऐसी क्रिया के अधीन जीवन प्रक्रियाओं का एक आंशिक अध्ययन मात्र है और उसके आधार पर हम औषधीय अभिकर्ता की क्रिया को पूरी तौर से समझ नहीं सकते हैं। औषधि अभिकर्ता तो पूर्णतः दृष्टि से ओझल ही रहता है।

2. समग्र रूप से औषधि क्रिया की पूरी जानकारी तो स्वस्थ व्यक्ति पर गुणात्मक अंतर्ग्रथनी औषधि प्रयोगों द्वारा ही दी जा सकती है और केवल इसी के द्वारा किसी व्यक्ति के मनः कायिक समग्र रूप के संबंध में बिखरे हुए आंकड़ों को वेका जा सकता है और ऐसे ही समग्र व्यक्ति को औषधि क्रिया की जानकारी दी जानी है।

3. होम्योपैथी मैटीरिया मेडिका में प्रत्येक औषधि द्वारा उत्पन्न लक्षणों की एक कार्यप्रणाली व्यवस्था होती है जिसमें उनके निर्बचन या अंतर संबंध के बारे में कोई सिद्धांत या स्पष्टीकरण नहीं होता है। प्रत्येक औषधि का अध्ययन-संश्लेषणात्मक, विश्लेषणात्मक और तुलनात्मक रूप से किया जाना चाहिए और सभी होम्योपैथी का विद्यार्थी प्रत्येक औषधि का अलग-अलग और समग्र रूप से अध्ययन कर सकता है तथा वह अच्छा औषधि निर्वेक बन सकता है।

4. पालीक्रेस्ट और दिन प्रतिदिन की बीमारियों के लिए अतिव्यापक रूप से बताई गई औषधियों का अध्ययन सर्वप्रथम कराया जाना चाहिए जिससे कि विद्यार्थी निदान कक्षाओं में या बहिरंग द्रव्य के समय उनके प्रयोगों से परिचित हो सकें। उनके बारे में पूरी चर्चा की जानी चाहिए तथा सभी

मुलनाओं और संबंधों का स्पष्टीकरण दिया जाना चाहिए। विद्यार्थियों को उनकी किया परिधि में और पारिवारिक संबंध से अवगत होना चाहिए।

ऐसी औपधियों के बारे में जो कम सामान्य हैं और जो दुर्लभ हैं, उनकी केशर उपरेखा पढ़ाई जानी चाहिए, और उनके सबसे महत्वपूर्ण गुणों और लक्षणों पर बल दिया जाना चाहिए। अपेक्षाकृत दुर्लभ और कठिन औपधियों के बारे में बाद में पढ़ाया जाना चाहिए।

5. द्यूटोरियल आरंभ किए जाने चाहिए, जिससे कि कम संख्या में विद्यार्थी अपने अध्यापकों के निकट संपर्क में आ सकें और रोगी व्यक्ति के उपचार में मैटीरिया मेडिका के उपयोग के संबंध में मैटीरिया मेडिका का अध्ययन करने और उनकी समस्याओं में विद्यार्थियों की सहायता की जा सके।

6. चिकित्साशास्त्र पढ़ते समय मैटीरिया मेडिका की ओर निर्देश करने रहने का प्रयास किया जाना चाहिए, जिससे कि किसी रोग की वशा में औपधियों की पहचान संबंधित औपधियों की पूर्वियों से सीधे ही प्रकट हो जाए। विद्यार्थियों का इस बात के लिए प्रोत्साहित किया जाए कि वे किसी बीमारी में बड़े मैटीरिया मेडिका के संसाधनों का उपयोग करें और वे किसी विशिष्ट रोग के लिए कुछ थोड़ी सी औपधियों का हो या न कर लें। हेनीमन दृष्टिकोण के सहारे वह (विद्यार्थी) न केवल प्रयुक्त लक्षणों का और रोग में उनके रोगहर मूल्य की उचित परिप्रेक्ष्य में समझने में उनकी मदद करेगा बल्कि जहाँ तक औपचारिक परीक्षणों का संबंध है वह दृष्टिकोण उसके भार को भी हल्का करेगा, अन्यथा वर्तमान प्रवृत्ति से रोगों के उपचार के प्रति नैदानिक दृष्टिकोण उत्पन्न होता है और यह आर्गेनन के अध्यापन के प्रतिफल है।

मैटीरिया मेडिका के प्रयोग का प्रदर्शन बहिरंग रोगियों या अस्पताल के बाहरी में रोगियों के मामलों में किया जाना चाहिए।

मुलनात्मक मैटीरिया मेडिका और चिकित्साशास्त्र विषयक लेक्चर और द्यूटोरियल, विभिन्न विभागों में रोगों की औपधियों विषयक लेक्चरों के साथ यथा संभव एकीकृत होने चाहिए।

7. औपधियों के विषय में पढ़ाने के लिए कालेज का उद्भिज संग्रह शोट (हर्बेरियम शोट) और अन्य निदर्श विद्यार्थियों के समक्ष प्रदर्शन के लिए रखने चाहिए। लेक्चर विलक्ष्य होने चाहिए तथा पाठ्यों और सामग्री की स्लाइडें प्रक्षेपित की जानी चाहिए।

8. का. प्रारंभिक लेक्चर : होम्योपैथी मैटीरिया मेडिका के अध्यापन में निम्नलिखित सम्मिलित होने चाहिए :-

- (क) होम्योपैथी मैटीरिया मेडिका का स्वरूप और उसकी परिधि।
- (ख) होम्योपैथी मैटीरिया मेडिका के स्रोत, और
- (ग) मैटीरिया मेडिका के अध्ययन के विभिन्न तरीके।

ख. औपधियों के विषय में शिक्षा निम्नलिखित शीर्षों के अधीन दी जानी चाहिए।

- (1) सामान्य नाम, प्राकृतिक वर्गीकरण, आवास, प्रयुक्त भाग, सैयारी
- (2) औपधि पूर्विक के स्रोत
- (3) औपधियों का लाक्षणिकी-जिसमें विशिष्ट लक्षणों और वृत्तियों पर बल दिया जाए।
- (4) औपधियों का मुलनात्मक अध्ययन।
- (5) पूरक, विरोधी, प्रतिकारक और सुसंगत औपधियाँ।
- (6) चिकित्सीय प्रयोग (अनुप्रयुक्त मैटीरिया मेडिका)

ग. गुणनर की बायोकेमिक चिकित्सा पद्धति के अनुसार 12 उनक (टिबू) औपधियों का अध्ययन।

परिशिष्ट 1

द्वितीय डी. एच. एम. एस. परीक्षा के लिए मैटीरिया मेडिका के पाठ्य विवरण में सम्मिलित औपधियों की सूची :

* 1. एर्बटेनम	38. यूफ्रेसिया
2. एकोनाइटम नीप	39. फेरम मेड
3. एसक्यूसम ह्रिप	40. फेरम फास
4. ह्यूजा जिन	* 41. जेलसोमियम
* 5. एनियम मेफा	42. प्रेकाइटीज
6. एनो सांक	43. हीपर सल्फ
7. एलुमिना	44. हेलेबोरस
8. अमोनिया कार्ब	45. ह्यूयोसियामस
9. एन्टीमोनियम कृडा	46. इनेशिया
10. एन्टीमोनियम टार्ट	47. इपीकाक
11. एपिस मेसिकिका	48. काली बिच
12. अर्जेंटम मेड	49. काली कार्ब
13. अर्जेंटम नाइट्रिकम	* 50. काली म्योर
* 14. आमिका मोस्टाना	* 51. काली फास
15. आर्सेनिकम एल्ब	52. काली सल्फ
16. औरम मेड	53. लेकेसिंग
17. एरम ट्रिफ	54. सित्रमपाल
18. बैनटीसिया	55. लाइकोपोडियम
19. बेराइटाकार्ब	* 56. मैग्नीशिया फास
* 20. बेलाडोना	57. मर्क्यूरियस कॉर
21. बेर्बेरिस वल्गेरिस	58. मर्क्यूरियस सल
* 22. बोरैक्स	59. नैट्रम म्योर
23. ब्रायनिय एल्ब	60. नैट्रम फास
24. कैलकेरिया कार्ब	61. नैट्रम सल्फ
25. कैलकेरिया फ्लोर	62. नाइट्रिक एसिड
26. कैलकेरिया फास	* 63. नक्स बोमिका
27. कैलकेरिया सल्फ	* 64. फास्फोरस
* 28. कर्सेडुला	65. प्लाटीना
29. कार्बो बेज	66. पोडोफाइलम
* 30. कास्टिकम	67. पनसेटिया
31. कैमोमिला	* 68. रम टाक्स
32. सिना	69. निकेली कॉर
33. सिमफोना आफ	70. सीपिया
* 34. कोलचिकम	71. साइलीशिया
35. कोलोसिधि	72. स्पार्जिया
36. ड्रोसेरा	* 73. सल्फर
* 37. डलकामारा	74. थूजा
	75. बेरेट्रुम एल्ब

टिप्पणी: * अंकित औपधियाँ 1 डी० एच. एम. एस. पाठ्यक्रम में पढ़ाई जाएँ।

परिशिष्ट-2

द्वितीय डी० एच० एम० एस० परीक्षा के लिए 75 औपधियों की सूची (परिशिष्ट 1) के अतिरिक्त निम्नलिखित औपधियाँ तृतीय डी० एच० एम० एस० परीक्षा के पाठ्य विवरण में सम्मिलित की गई हैं।

1. एसेटिक एसिड
2. एक्टिया रासेमोसा

3. अंगेरिकस मस	4. एगनस कैकटस
5. अम्ब्राग्रेगिया	6. एनाकार्डियम
7. आर्सेनिकम आयोड	8. ब्रिसमथ
9. बोचिस्टा	10. कैकटस जी
11. कैलकेरिया आर्स	12. कैम्फरा
13. केनाबिम सेटाएवा	14. कैन्थरिन
15. कैसिकम	16. कार्बोणिक एसिड
17. कार्सीनोसिन	18. कालोफाइनम
19. चेवीडोनियम	20. सिफ्टा विरोसा
21. कोक्युलस इडिकस	22. कोनियम
23. क्रोकस सेटाएवा	24. क्रोटेलस होर
25. क्रोटन टिंग	26. कृष्ण आर्स
27. कृष्ण मेट	28. डिजिटेलिस
29. यूपेटोरियम पफ	30. फ्लोरिक एसिड
31. ग्लोनी चन	32. हेमासेलिस विर
33. हाइड्रुस्टिस	34. आयोडम
35. त्रिमोडोहम	36. लैक केगाइनम
37. लिलियम टिंग	38. मैग्नेशिया कार्ब
39. मैग्नेशिया फास	40. मेडोरटिनम
41. मेजेरियम	42. नेसकम मसकस
43. म्यूरैक्स	44. म्यूरियाटिक एसिड
45. नैट्रम कार्ब	46. नक्स मसकेटा
47. ओपियम	48. पेडोलियम
49. फास्फोरिक एसिड	50. प्लबम
51. सोरिलम	52. पाइरोजिनथ
53. रैनकुलस बरब	54. रोडोडेनड्रन
55. रियुमेक्स	56. रुटा
57. सेबाइना	58. सैम्युकस
59. सैगुनेरिया	60. सरसापरिला
61. स्पाईजेलिया	62. स्टेनन मेट
63. स्टेकिभेग्रिया	64. स्ट्रामोनियम
65. सिफीगिनम	66. ट्यूबरकुलिनम
67. वैरियोलिनम	68. वेरेट्रम विर
	69. जिक्म मेट

आर्गेनन और होम्योपैथी दर्शन

हेनरीमन का आयुर्विज्ञान आर्गेनन चिकित्साशास्त्र के दर्शन की एक उच्चस्तरीय कृति है। यह आयुर्विज्ञान के क्षेत्र में संहिताबद्ध रूप में एक मौलिक कृति है। आर्गेनन और होम्योपैथी के इतिहास तथा उसके संस्थापक के जीवनवृत्त के अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाएगा कि होम्योपैथी मानवता की एक सबसे कठिन समस्या के अर्थात् रोगों का उपचार और निरोगी बनाने की समस्या के समाधान के प्रति विवेचन के आगमनात्मक तर्कपूर्ण तरीके के इतिहास के अनुप्रयोग की उपज है। अतः निगमनात्मक और आगमनात्मक दोनों ही प्रकार के तर्कशास्त्र के मूल सिद्धांतों का अच्छा परिचय आवश्यक है। तदनुसार आर्गेनन का अध्यापन ऐसी रीति से किया जाना चाहिए जिससे कि विद्यार्थियों को वे तर्कपूर्ण सिद्धांतों के निहितार्थ स्पष्ट रूप से समझ में आ जाएं जिनके द्वारा होम्योपैथी का निर्माण हुआ और जिनके आधार पर ही होम्योपैथी चिकित्सा व्यवसायी को प्रत्येक रोग के मामले में उपचार करने में अपना वैदिक कार्य सरलता से और सुविधा-पूर्वक चलाना होता है।

कायचिकित्सक के रूप में प्रयोगात्मक कार्य में मार्गदर्शन के लिए व्यावहारिक भागों को धनीभाति समझ कर धातु कर लेना चाहिए।

2 सी० एच० एम० एम० परीक्षा

1 प्रारंभिक लेक्चर—10 लेक्चर

विषय :

1. होम्योपैथी क्या है?

यह चिकित्साशास्त्र का एक विशेषरूप मात्र नहीं है। यह आयुर्विज्ञान की संपूर्ण पद्धति है और जीवन, स्वास्थ्य, रोगों, उपचार तथा रोगमुक्ति के प्रति इसका अपना सुस्पष्ट दृष्टिकोण है।

इसका जीवन, स्वास्थ्य, रोग, उपचार और रोगमुक्ति के प्रति पावन, व्यक्तिपरक और गत्यात्मक दृष्टिकोण।

इसका पूर्णतः तर्कपूर्ण और वस्तुपरक आधार और दृष्टिकोण।

होम्योपैथी आयुर्विज्ञान की एक वस्तुपरक और तर्कपूर्ण पद्धति है।

होम्योपैथी का दृष्टिकोण और उसके तरीके सर्वथा वैज्ञानिक हैं।

अवलोकित तथ्यों और आंकड़ों पर तथा ऐसे तथ्यों और आंकड़ों से अभिन्न रूप से सम्बद्ध निगमनात्मक और आगमनात्मक तर्क पर आधारित है।

2. सभी निदानपूर्व, नैदानिक और परानैदानिक विषयों के प्रति होम्योपैथी का सुस्पष्ट दृष्टिकोण।

3. सभी निदानपूर्व और परा नैदानिक विषयों के बारे में प्रारंभिक विचार, उनके पारस्परिक संबंध और संपूर्ण जीवन प्राणी से उनका संबंध।

4. रोगमुक्ति और स्वास्थ्य के प्रयोजन के लिए होम्योपैथी के सिद्धांतों के दक्षतापूर्ण प्रयोग के उद्देश्य से इन विषयों के आवश्यक तत्त्वों का ज्ञान प्राप्त करने का महत्त्व।

5. होम्योपैथी की गत्यात्मक फार्माकोलोजी (प्रविग) और भेषजी (फार्मसी) के सुभिन्न आवश्यक तत्व।

6. हेनिमन का आर्गेनन, पांचवा और छठा संस्करण : II सी० एच० एम० एम० पाठ्यक्रम में सूत्र 1 से सूत्र 145 तक पढ़ाए जाने चाहिए, किन्तु परीक्षा केवल सूत्र 1 से सूत्र 70 तक के बीच होनी चाहिए।

3 सी० एच० एम० एम० परीक्षा

आर्गेनन और दर्शन

सैद्धांतिक

1. हेनिमन का आर्गेनन पांचवा और छठा संस्करण—सूत्र 1 से 294 तक।

2. हेन्यूज की पुस्तक 'दि प्रिंसिपल एण्ड प्रैक्टिस आफ होम्योपैथी' की प्रस्तावना। प्रोफेसरों से अनुरोध है कि वे आर्गेनन पर अपने प्रारंभिक लेक्चरों में विद्यार्थियों के मन में उन तर्कमंगत सिद्धांतों के निहितार्थों की जिन पर होम्योपैथी का निर्माण हुआ और उसकी रूपरेखा तैयार की गई तथा पश्चिम में आयुर्विज्ञान के विकास के इतिहास और उसमें हेनिमन के योगदान की बात को बैठाएं जिससे कि वे आयुर्विज्ञान के क्षेत्र में होम्योपैथी के, उसके समग्र रूप में, स्थान का और हेनिमन के जीवन को सही मूल्यांकन कर सकें।

3. होम्योपैथी दर्शन : —

(क) होम्योपैथी दर्शन पर केस्ट कं लेक्चर,

(ख) स्टुअर्ट ब्लोज-होम्योपैथी दर्शन पर लेक्चर और लेख 'दि जोनस आफ होम्योपैथी',

(ग) एच० राबर्ट हल आर्ट्स आफ कमोर वाई होम्योपैथी,

(घ) चिकित्सा विज्ञान (इन्हम) ।

होम्योपैथी दर्शन के लेखकों द्वारा निम्नलिखित विषयों का स्पष्ट किया जाता चाहिए :—

- (1) होम्योपैथी का प्रविण
- (2) होम्योपैथी का तर्क ।
- (3) जीवन, स्वास्थ्य, रोग और अस्वस्थता ।
- (4) सुप्ताहता, प्रतिक्रिया और रोगक्षमता इन्फ्यूनिटी ।
- (5) तीव्र और चिरकारी मिजाज के होम्योपैथी सिद्धान्त का सामान्य चिकित्सा विज्ञान ।
- (6) होम्योपैथी दर्शन ।
- (7) शक्तिकरण और अस्थिर (एनफैन्टिसिमल) खुराक और औषधि शक्ति ।
- (8) होम्योपैथी दृष्टिकोण से रोगी की परीक्षा ।
- (9) कुल लक्षणों का महत्व और उनकी जटिलताएं ।
- (10) लक्षणों का मूल्य ।
- (11) होम्योपैथी रोग वृद्धि
- (12) ओरवि का प्रभाव देखने के बाद पूर्वनिर्णय ।
- (13) द्वितीय नुस्खा ।
- (14) कठिन और ठीक न होने वाले रोग—उपशमन ।

4. आर्गेनन की प्रस्तावना (पांखा और छठा संस्करण) ।

5. होम्योपैथी का इतिहास—हेनिमन के जीवनकाल के दौरान विश्वमान आयुर्विज्ञान, हेनिमन का प्रारंभिक जीवन, विद्यमान उपचार पद्धति से उसकी दुई निराशा, “विष विष को मारता है” सिद्धान्त के बारे में उसकी खोज, हेनिमन के जीवन के अंतिमकाल का इतिहास, विभिन्न देशों में होम्योपैथी का प्रारंभ । होम्योपैथी के प्रवर्तक और उनका योगदान । होम्योपैथी का प्रद्यतन विकास । होम्योपैथी में वर्तमान विचारधारा । होम्योपैथी का अन्य चिकित्सा पद्धतियों पर प्रभाव ।

6. हेनिमन की कृति “क्रान्तिक डिकोण्डेज” ।

विषयवार :—

- (क) काय चिकित्सक का सहायता और उच्चतम आदर्श रोगमुक्ति—सूत्र 1 और 2 ।
- (ख) कायचिकित्सक का ज्ञान—सूत्र 3 और 4
- (ग) रोग का जानकारी जिससे संकेत मिलता है—सूत्र 5 से 18 तक ।
- (घ) आपघिया का जानकारी—सूत्र 19 से 21 तक ।
- (ङ) उपचार के अन्य तरीकों की तुलना में होम्योपैथी उपचार के तरीकों का मूल्यांकन—सूत्र 22 से 69 तक ।
- (च) सारांश—रोगमुक्ति के लिए तीन शर्तें—सूत्र 70 ।

7. आर्गेनन के प्रयोगात्मक भाग विषयक लेखकों को निम्नलिखित विषयों के अधीन बांट कर पढ़ाया जाए :—

- (क) रोगों को ठीक करने के हेतु से क्या जानना आवश्यक है तथा रोगी वृत्त लेने का तरीका—सूत्र 71 से 101 तक ।
- (ख) औषधि का रोगजनक भवित्वा अर्थात् औषधि प्रविण अथवा औषधि का ज्ञान अन्य प्रकार प्राप्त किया जाए—सूत्र 105 से 145 तक ।

(ग) ठीक औषधि चुनने कैसे किया जाए—सूत्र 147, 148, 149, 150, 153, 155 ?।

(घ) सही मात्रा—सूत्र 157, 160, 161, 162, 163, 164, 169, 171, 173 ।

(ङ) स्थानीय रोग—सूत्र 186, 187, 190, 191, 196, 197, 199, 201, 202, और 203 ।

(च) चिरकारी रोग—सूत्र 204, 206 और 208 ।

(छ) मानसिक रोग—सूत्र 210 से 230 तक ।

(ज) सिरामी रोग—सूत्र 231, 232, 238, 240 से 242 तक ।

(झ) आहार, विधान और औषधि के उपयोग के रंग—सूत्र 245 से 248 तक, 251, 253, 259, 262, 263, 269, 270, 272, 275, 276, 280, 286, 288, 290, 291 ।

तृतीय डी० एच० एम० एस० परीक्षा में आर्गेनन और होम्योपैथी दर्शन विषय के लिखित प्रश्न पत्र निम्नलिखित रूप में होंगे:—

पर्चा 1—आर्गेनन की प्रस्तावना

सूत्र 1 से 294 तक ।

पर्चा 2—होम्योपैथी औषधि, होम्योपैथी दर्शन और चिरकारी रोगों का इतिहास ।

प्रयोगात्मक

रोगी वृत्त लेना :—

मिथासैटिक निदान के लिए एक फेस ।

[[I डी० एम० एस० परीक्षा

चिकित्सा व्यवसाय

होम्योपैथी का रोगों के प्रति एक सुनिश्चित दृष्टिकोण है । इसमें रोगों का न तो उनके प्रमुख लक्षणों के आधार पर और न शरीर के किसी अंग या भाग के रोग के आधार पर पहचाना जाता है । वह रोगी को समग्र रूप से देखती है और रोगी द्वारा प्रदर्शित लक्षणों की समग्रता ही उसको रोग की घातक है । अतः होम्योपैथी चिकित्सा व्यवसायी के लिए जानना कि कोई महत्व नहीं होता है कि रोगी जिस दशा से सबसे अधिक पीड़ित है उसका नाम क्या है ।

होम्योपैथी का आधारभूत सिद्धांत यह है कि वह रोगी का उपचार करती है न कि उसके रोग का । यह सिद्धांत विद्यार्थियों को बराबर समझाया जाना चाहिए और जब उनमें इस दृष्टिकोण की जड़ें जम जायें तभी वे सच्चे होम्योपैथी चिकित्सा व्यवसायी बन सकेंगे ।

कायाचिकित्सा शब्द एक व्यावहारिक विज्ञान है और इसका अच्छा ज्ञान कक्षाओं की बजाए रोगी शरीरों के निकट प्राप्त किया जा सकता है । अतः यह आवश्यक है कि महाविद्यालय में विद्यार्थियों के अंतिम चरण के अध्ययन क्रम के दौरान उन्हें सघन वैधानिक प्रशिक्षण दिया जाए ।

ज्वर

प्रोटोजूआ संक्रमण द्वारा कारित सामान्य प्रकार के ज्वर, मलेरिया, गैंग्वाटर ज्वर, लीशमैनिया, कावाजार, जीवाणु संक्रमण द्वारा कारित ज्वर, प्रमस्तिष्क मेरु (मेरिब्रोस्टाइटिस) ज्वर, और ज्वर, बेमिल कोसाई संक्रमण, स्पाइरोकीटा संक्रमण द्वारा कारित ज्वर, सिफिलिस, धिपाणु संक्रमण द्वारा कारित ज्वर, खसरा (मीजल्स, जर्मन मीजल्स, छोटी

माता, चेचक गोशीतला (बैक्सीनिया), भौतिक और रासायनिक कारकों द्वारा कार्बिड रेंग, अज्ञात हेतु वाले उवर, सेप्टिसीमिया, पायमिन, एरिसिपेलस, प्लेग ।

परिसंचरण तंत्र

व्यक्तिपरक (मंड्रेक्टिव) क्षण, वस्तुपरक, चिन्ह सामान्य चिन्ह, नाड़ी, रक्तदाब, नाड़ी तरंग, हृदय का भौतिक परीक्षा, शरीर रचना संबंधी स्थितिया, निरीक्षण और परित्परीक्षण, हृदय स्पंड दक्षिण निलय स्पंदन, अन्य स्पंदन, अधिजठर (एपिगैस्टिक) स्पंदन, शिरा स्पंदन, उपप्लव-रंग (धिल) परित्परीक्षण (परकशन), हृदय मन्दता, हृदय परित्परीक्षण असामान्य हृदय ध्वनियाँ, मर्मर, हृदय बाह्य ध्वनियाँ, हृदय की उपकरण परीक्षा, पॉलीग्राफ, विद्युत हृदयलेख, हृदय की एक्स रे परीक्षा, हृदय क्षमता परीक्षण, हृदयवाहिका रोग, धक्कन, कष्टवास, भूखण्डी, श्वसांत (सायनोसिस), अतालता, हृदयावरणशोथ, अन्तःहृदयशोथ, कपाटिकी रोग, सापेक्ष, निदान, अन्मज्जान हृदय रोग, हृदयपेशी रोग, धमनी रोग, अति-रिक्तवादी हृदय रोग, हृदयगुल, हृदयपेशी रोगगलत एन्यूरिज्म, वाहिका प्रेरक रोग, फुफ्फुस धमनी रोग, विशेष दशाओं में हृदय, हृदय को अतिबुद्धि और विस्फारण, परिसंचालन पात, हृदयवाहिका रोग का पूर्वानुमान ।

श्वसन तंत्र

व्यक्तिपरक घटना, खाँसी, श्वस पीड़ा, कष्ट श्वास, भूक, रक्त निष्ठी-यान, ऊर्ध्व श्वसन मार्ग की परीक्षा, माक, कंठ, प्रसनी (फैरिक्स) टांसिल, स्वर यंत्र (लैरिक्स) फेफड़ों की भौतिक परीक्षा, निरीक्षण, परित्परीक्षण, परित्परीक्षण, परित्परीक्षण, श्वास, ध्वनि, स्वर अनुनाद, बाह्य ध्वनियाँ, श्वसन, विशेष ध्वनियंत्र, फुफ्फुसी रोग, एपिस्टेसिस, नासाशोथ, प्रसनीशोथ, टांसिल शोथ, एडिनाइटिस, स्वरयंत्र शोथ, डिप्थीरिया, काली खाँसी, श्वास प्रणाल-शोथ, श्वसनी विस्फार, श्वसनी रोध, दमा, ऊष्ण कटिबंधीय, श्वसनी-फोसिया, न्युमोनिया, फुफ्फुस शोथ, फेफड़ों का फोड़ा, फेफड़ों का ग्रैनीन, फुफ्फुस यक्ष्मा, बीतस्फीति, फुफ्फुस रोधगलन, फुफ्फुस निपान, फुफ्फुस अर्बुद, फुफ्फुस धुलिययता, फेफड़ों का सिफिलिस, अन्य फुफ्फुस रोग, प्लू-रिसी, जलदश, रक्तवध, वसत्यसीका वध, वातवृद्धा मध्यच्छद आकर्ष, मध्यस्थानिका अर्बुद ।

पाचन तंत्र

व्यक्तिपरक घटना, भूख और प्यास, निगरण कष्ट, उदर पीड़ा, अन्य अमृद्विधाजनक संवेदना, शूल निस्तानिका, मसली और वमन, रक्तवमन, प्रवाहिका, कब्ज, आल बाधा, मुख श्वास, घ्रासनली, उदर शरीर की परीक्षा, निरीक्षण, परित्परीक्षण परित्परीक्षण परित्परीक्षण, उदर, आल मलाशय परीक्षा, मल परीक्षा, यकृत रोगों की भौतिक परीक्षा और लक्षण, पित्ताशय अंतर्वस्तु परीक्षण, एकसरे परीक्षा अमृद्विधाजनक, सामान्य पोषण, रोग, पायो-रिसा, रक्त ड्यूबल, मुखपाक, जिह्वा, लाखा ग्रंथियाँ, घ्रासनली, उदर आमाशय कैंसर, उदर विस्फारण, जठर निर्गम बाधा, तीव्र प्रवाहिका, चिरकारी प्रवाहिका, हैजा, स्फू, शेषांतशोथ, पेचिका, वृत्वांतशोथ, वृद्धांत के अन्य रोग, अग्निमांश, आशयघ्नता, निर्ज्वर रक्तवध ।

मूल प्रजनन तंत्र

व्यक्तिपरक घटना, मूत्रण, वृक्कों का भौतिक परीक्षण, सामान्य वृक्कीय रोग, हीमोग्लोबिनमै, काइलमै, पाणिका शोथ, वृक्क के रक्तधन रोग, यूरीनिया, जननांगी तंत्र, गोनोंरिया, सिफिलिस ।

बाहिरीहीन ग्रंथियाँ :

प्लीहा बुद्धि की भौतिक परीक्षा, हाइजिन रोग, जलवायु संबंधी न्यूको, बायराइड ग्रंथि, मिक्सडीमा केटिनेता, नेक्रोलेसी, गलगण्ड, एडिंसन रोग, थायराइडीज मे लिटस ।

रक्तोपादक तंत्र

रक्त कोशिकाएं, साहित्य रक्त कणिकाएं, रक्त रंग, प्रणाशी अरक्तता, लघु कोशिका अल्पवर्णी अरक्तता, रक्तसंवासी अरक्तता, बहुसाहित कोशिका-रक्तता, आलअश्वासवता, श्वेत रक्त कणिकाएं, ल्यूकीमिया, कणीश्वेत कोशिकाहीनता, परस्पूरा, होमोफिलिया, स्कर्वी ।

त्वचा तंत्र :

त्वचा विस्फोट, स्केबीज, हर्पीज जंस्टर, स्थानिक विस्फोट, त्वचा विस्फोट सहित स्वाभाविक रोग, सिफिलिस, कुष्ठरोग, ऐलर्जी, एक्जैमा, त्वचाय लाशमेनीयता, अज्ञात हेतु वाले विफोट, सोरियासिस, ओपधि विस्फोट, शोफ, जानपट्टिक जलशोफ ।

चलन तंत्र :

अधः पुष्ट वेदना, अस्थियो के रोग, सिफिलिस, अस्थिमज्ज शोथ, जोड़ों के रोग, अविनिविष्ट मन्धिगोथ, संक्रामी सन्धिगोथ

तंत्रिका तंत्र :

शरीर रचना और शरीर क्रिया, शारीरिक परीक्षा, प्रमस्तिष्क मेरु तरल, प्रमस्तिष्क लक्षण, करोटि तंत्रिका रोग मस्तिष्कावरणशोथ, अन्तः करोटि अर्बुद, प्रमस्तिष्क वनाश्रता, अन्तःशत्यता, रक्तस्राव, तंत्रिका-तंत्र सिफिलिस, मस्तिष्कशोथ, विषाणुज रोग, असामान्य पेशी गति अकुंचन, सुषुम्ना रोग, सुषुम्ना तंत्रिका रोग,

तंत्र अग्र पाणियाँ, मानसिक रोग, विक्षान्ति । ओपधि विषय के लिखित पत्र निम्नलिखित रूप में होंगे :--

- पत्र 1 -- संक्रामक रोग, एन्डोक्राइन तंत्र के विकार, क्यापचय के रोग, हीमता रोग, पाचन तंत्र के रोग, रक्त प्लीहा और लसीका ग्रंथियों के रोग तथा ऊष्णकरिबंधीय रोग, होम्योपैथी चिकित्साशास्त्र ।
- पत्र 2 -- चलन तंत्र के रोग, तंत्रिका तंत्र के रोग, हृदयवाहिका तंत्र के रोग, मूल प्रजनन तंत्र के रोग, सामान्य त्वचा रोग, बालक रोग होम्योपैथी चिकित्साशास्त्र ।

शल्य क्रिया

जहाँ ओपधि असफल होती है वहाँ शल्य विज्ञान का प्रारम्भ होता है । बाह्य भागों के ऐसे रोग जिनके लिए यांत्रिक कौशल अपेक्षित है, घस्तुतः शल्य विज्ञान के क्षेत्र में आते हैं किन्तु यदाकदा जब क्षति दंतनी विस्तृत या प्रबल होती है कि उसके परिणाम स्वरूप जीव में गतिशील प्रतिक्रिया उत्पन्न होती है तो उसके उपचार के लिए गतिशील ओपधियाँ आवश्यक हो जाती हैं ।

शल्य क्रिया रोग के परिणामों को दूर करती है किन्तु बुनियादी विज्ञान को ठीक करने तथा अनुपम या जटिलताओं के निवारण के लिए शल्यकर्म पूर्व और शल्य कर्मोत्तर उपचार आवश्यक है । अधिकांश दशाएँ ऐसी होती हैं जिनके लिए होम्योपैथी में आन्तरिक दवाएँ पर्याप्त होती हैं, इसलिए होम्योपैथी का प्रविषय बहुत अधिक व्यापक है तथा उस सीमा तक शल्य क्रिया का प्रविषय सीमित है । किन्तु ओपधि के पूरक के रूप में शल्य क्रिया का होम्योपैथी में अपना एक निश्चित स्थान है और तदनुसार उसकी शिक्षा दी जानी चाहिए ।

शल्य विज्ञान के सामान्य मिश्रान्तों और उसके व्यवसाय के बारे में एक व्यवस्थित पाठ्यक्रम सम्मिलित किया जाना चाहिए जिसमें निम्नलिखित विषयों पर लेखक हों :--

(क) सामान्य शल्यकर्म प्रक्रिया :

शल्य रोगी की परीक्षा । अपुति और पुतिरोध, शल्यकर्म में विसंक्रमण तकनीक, रोगी को शल्यकर्म के लिए तैयार करना, शल्यकर्म के केतों में शल्यकर्मोत्तर उपचार,

(1) शल्यकर्मोत्तर जटिलताएँ ।

- (2) शोध, संक्रमण, पयूषा, शलकर्म रोगों का जीवाणु विज्ञान, रोग-क्षमता,
- (3) अविनिविष्ट और विनिविष्ट संक्रमण।
- (4) क्षतिया, नील, धाव, रक्तस्राव, आघात, निपात, दग्ध, सप्तब्रह्मवाह ।
- (5) व्रणोत्पत्ति और ग्रीन।
- (6) सामान्य अर्बुद, मिष्ट।
- (7) अस्थियों की क्षतियों, अस्थिभंग और संधिच्युति के संबंध में सामान्य बातें।
- (8) संधि की क्षतियों के संबंध में सामान्य बातें।
- (9) संधियों और विशेष रूप से नितम्ब संधि के रोग।

(ख) प्रादेशिक शलकर्म :

- (1) मस्तिष्क और उसकी कलाओं की क्षतिया और रोग, मस्तिष्क का संघटन, मस्मीजन, श्रोत्र और विदीर्ण होता, अन्तः कपाल रक्तस्राव।
- (2) सुषुम्ना की क्षतियाँ और उसके रोग, सुषुम्न का यक्ष्मा रोग (सुषुम्ना यक्ष्मा,) गोआस और कटि फोड़ा।
- (3) हाँडों और चेहरे की विरूपताएँ—अण्डाण्ड खंड तालु, जबड़े की क्षतियाँ, जबड़े की संधिच्युति।
- (4) लालाग्रन्थियों का कैमर जिह्वा संक्रमण, थायरॉइड और पैंग-थायरॉइड अर्बुद।
- (5) तीव्र कर्णमूल शोथ—कर्णमूल विग्रधि, मध्यकर्ण शोथ।
- (6) टांसिलों का रोग—टांसिल उन्मोचन, प्रत्येक—ग्रसनी फोड़ा, एडिनाइट।
- (7) नाक के रोग, तीव्र और चिरकारी नासाशोथ, पटीय दोष, पाल्पीपस।
- (8) ग्रासतली का निरुचन, निगरण कष्ट, अशिथिलता (एकैलक्षिया)
- (9) स्वरयंत्र की परीक्षा, सुधम और दुर्धम बुद्धिया, डिफ्थीरिया, श्वास-प्रणाल छेदन, कंठद्वार शोफ।
- (10) ग्रीवा के संक्रमण, ग्रीवा संयोजक-अतिशोथ, ग्रीवा के आसपास बुद्धियाँ, घेवा थायरॉइड उन्मोचन।
- (11) वक्ष की क्षतियाँ, पसलियों का अस्थिभंग, अमिषातज वात स्फीति।
- (12) प्लूरा और फेफड़ों के रोग।
- (13) स्तन रोग, तीव्र सक्तामी स्तन शोथ और स्तन फोड़ा, स्तन की बुद्धियाँ, सरन अर्बुद, दुर्धम अर्बुद, स्तन के कार्सीनोमा का शलकर्म।
- (14) उदरीय शलकर्म, सामान्य बातें, खोप्राव और ठोस अन्तरोग की क्षतियाँ, तीव्र पर्युधर्मा शोथ, अन्तः पर्युधर्मा फोड़ा, श्रोणि फोड़ा, अवमध्यच्छद फोड़ा और दाहिने हृदयिक फोसा से फोड़ा।
- (15) हृदिया—तेजानिक दशा और जटिलताएँ बाधित हृदिया, विपाशित हृदिया।
- (16) आहाशय और ग्रन्थी व्रण तथा कैसर, शलकर्म द्वारा उपचार के लिए सहाय।
- (17) अंत्र रोगों के शलकर्मों पहलू, आंव छिदन-अंत्र बाधा और अंत्रवद्धता स्थैतिकता।
- (18) पुच्छ के रोगों के शलकर्मों पहलू—एपेन्डीसाइटिस।

- (19) तीव्र उदर रोग के रोगों का अन्वेषण और उनकी परीक्षा, उनका सापेक्ष निदान।
- (20) जिरगर का फोड़ा—शलकर्म द्वारा उपचार, पिताशमरी (पित्ताशमरिता)।
- (21) मलाशय : अर्बुद और कैसर, बबोसींग, मलाशय कर्करोगों का भ्रश, गुदा, बिदर और मालव्रण।
- (22) मूत्र पथ की परीक्षा के तरीके, वृक्क अश्मरी मूत्राशय बिदर, अस्थानी बिबूत मूत्राशय, मूत्राशय में आगंतुक शल्य, मूत्राशय अश्मरी, मूत्राशय की क्षतियाँ और उनके निरुचन-मूत्र का परिष्कार, प्रोस्टेट बुद्धि, प्रोस्टेट की दुर्धमता, वृषण-कोश अर्बुद, जलवृषण और अपस्फीति।
- (23) नेत्र के सामान्य रोग, नेत्र श्लेष्मला, स्वच्छ मंडल, सैस, परि-तारिका, टुष्टि पटल, नेत्रगोचक पेशियों के रोग, ग्लुकोमा।

टिप्पण :—शलकर्म के वस प्रयोगात्मक प्रदर्शन। शलकर्म के निखित पक्ष निम्नलिखित रूप में होंगे :—

पक्षों -- I :

शोध, विनिविष्ट और अविनिविष्ट रोग, रक्तस्राव, आघात, दग्ध, व्रण और ग्रंथोत्पत्ति। अर्बुद, मिष्ट। तंत्रिकाओं की क्षतियाँ और उनके रोग, पेशियों, कंठार और श्लेष्मपुटी, लसीका, बाह्यिका तन्त्र के जिसके अन्तर्गत प्लीहा (मिल्ली) भी है, रोग।

सिर और ग्रीवा शलकर्म जिसके अन्तर्गत थायरॉइड स्तन और जन्मजात विषमताओं का शलकर्म भी है। उदरीय शलकर्म जिसके अन्तर्गत आमाशय तंत्र का शलकर्म भी है।

अस्थि और संधि शलकर्म। सुषुम्न की क्षतियाँ और उसके रोग।

अंगों की विरूपताएँ।

वक्ष-शलकर्म।

अन्न-मूत्र तंत्र शलकर्म तथा

होम्योपैथी चिकित्साशास्त्र।

पक्षों -- II :

कर्ण ससा कंठ विज्ञान, रज्ज रोग, नेत्र विज्ञान, वंश विज्ञान तथा होम्योपैथी चिकित्साशास्त्र और होम्योपैथी में शलकर्म का क्षेत्र।

प्रसूति विज्ञान और स्त्री रोग विज्ञान

इन विषयों के बारे में होम्योपैथी का दृष्टिकोण बर्हा है जो ओपधि और शलकर्म के बारे में उसका है। प्रसूति और स्त्री रोग संबंधी रोगों के संबंध में कार्य करने के लिए होम्योपैथी चिकित्सा व्यवसायी को स्थानिक दशाओं और प्रमदी रोगों के, जिनमें जीवण रक्षा के उपाय के रूप में या यौनिक बाधाओं को दूर करने के लिए शलकर्म आवश्यक है, निदान के लिए अन्वेषण के विशेष वैज्ञानिक तरीकों का प्रशिक्षण अवश्य दिया जाना चाहिए।

किसी भी स्त्री में पारिवारिक डिस्केसिया (विकृति) के उन्मूलन या रोगों की ऐसी विकृतियों के जो संघर्षता के दौरान उसमें उत्पन्न हों, शांति के लिए सर्वोत्तम समय और इस पर विशेष रूप से बल दिया जाना चाहिए।

विद्यार्थियों को नवजात शिशु के रोगों की शिक्षा भी दी जानी चाहिए। इस तथ्य पर कि माता और शिशु एकल जीव इकार्ध है और यह कि यह विशिष्ट निवृत्त मनोवैज्ञानिक संबंध शिशु के जीवन के कम से कम प्रथम दो वर्षों तक बना रहता है, विशेष रूप से बल दिया जाना चाहिए।

प्रसूति विज्ञान

1. यौवनारम्भ, हिम्वधरण और रजोधर्म, सामान्य संगर्भता, उरुष, जरायु, पसिका, अपरा, नाभि रज्जु, गर्भ-परिसंचरण, साधारण शरीर क्रिया।
2. अपसामान्य संगर्भता :—(i) गर्भ हेतुक विपरक्तता संगर्भ अतिवत, गर्भाक्षेपक (पक्षोग्रिमया), गर्भाक्षेपक पूर्व विपरक्तता, आकस्मिक रक्तस्राव।
(ii) जन्मपूर्व रक्तस्राव—i और ii त्रिमास—अस्थायी संगर्भता, हाइड्रोडिडरणी नियम, गर्भपात, अपसामान्य संगर्भता, तृतीय त्रिमास के दौरान रक्तस्राव, सम्मुखी अपरा, आकस्मिक रक्तस्राव।
(iii) हाइड्रोनिअस, अल्युल्वीकता
(iv) संगर्भता में सहस्ररोग।
3. सामान्य प्रसव : (i) प्रसव के प्रक्रम, (ii) प्रसव की शरीर रचना और शरीर क्रिया, (iii) सामान्य प्रसव की क्रियाविधि, (iv) सामान्य प्रसव का प्रबंध।
4. अपसामान्य प्रसूतियाँ :
नितम्ब प्रसूति, पश्चकपाय
नितम्ब प्रसूति,
आनन प्रसूति,
माग प्रसूति,
स्कन्ध प्रसूति,
नाभिरज्जु प्रसूति
बहु संगर्भता,
श्रोणि संकुचन,
प्रसवोत्तर रक्तस्राव,
गर्भाशय रक्तस्राव।
5. प्रसूतकाल, प्रसूतकाल की शरीर क्रिया
प्रसूतकाल का प्रबंध
प्रसूतकाल के विकार
6. नवजातशिशु
स्तन पालन, दूध दुग्ध पोषण,
कालपूर्व शिशु, प्रसूतिक्षतियाँ, नवजात शिशु के रोग, गर्भ की शक्तियाँ,
रोग और मृत्यु। गर्भ स्वभावरोध या गर्भ मृत्यु।
7. गर्भपात प्रेरण—प्रसव कारक का प्रेरण, भ्रमछेदन, गर्भवर्तना।

स्त्रीरोग विज्ञान

1. स्त्री जननांगों अंगों की शरीर रचना।
2. स्त्री रोग विषयक केम की परीक्षा।
3. रजोधर्म, रजोनिवृत्ति और यौवनारम्भ की शरीर क्रिया और अंतःस्राविकी।
4. रजोधर्म असंगतियाँ, अनार्य, कृच्छातर्ष, अत्यार्य, रक्त प्रदर।
5. स्वेत प्रदर।
6. ब्राह्म जननांगों के रोग—भ्रमणाय, बैथालनिटिस, भग भ्रम, कण्डू, भग अर्बुद, रजिज रोग।
7. योनि रोग। योनिगोध, योनि अर्बुद।
8. गर्भाशय श्राया रोग—गर्भाशय श्राया गोध, अपरदन, अपरदन, पार्श्वपक्ष, गर्भाशय श्राया केमर।
9. गर्भाशय रोग : गर्भाशय विस्थापन, गोध, तासव, कासिनोमा गर्भाशय।

10. हिम्वधाहिनी मली के रोग, गोध।

11. श्रोणि पर्युदयगोध, श्रोणि संयोजक उतिगोध,

12. हिम्वधगोध के रोग—गोध, अर्बुद।

13. बंधयता।

14. स्त्रीरोग सम्बन्धी शस्त्रकर्म, गर्भाशय का विस्फरण और क्यूरेटिंग।

प्रसूति विज्ञान और स्त्री रोग विज्ञान के लिखित पर्व निम्नलिखित रूप में होंगे :—

पर्व I—प्रसूति विज्ञान, नवजातशिशु, शिशु स्वच्छता और होम्योपैथी चिकित्सा-शास्त्र।

पर्व II—स्त्री रोग विज्ञान और होम्योपैथी चिकित्सा शास्त्र।

होम्योपैथी रिपोर्टरी

होम्योपैथी मैटेरिया मेडिका लक्षणों का एक विश्वकोश है। कोई भी व्यक्ति सभी औषधियों के विशिष्ट श्रेणीकरण सहित उनके सभी लक्षणों को याद नहीं रख सकता है। रिपोर्टरी मैटेरिया मेडिका के लक्षणों को एक अनुक्रमणिका, उसकी एक सूची है जो व्यावहारिक रूप में स्पष्ट रूप से भ्रमबद्ध की गई है तथा जिसमें औषधियों का पारस्परिक श्रेणीकरण भी उपदर्शित है। इससे उपयुक्त उपचार के शीघ्र चयन में बहुत सुविधा होती है। रिपोर्टरियों की सहायता के बिना होम्योपैथी का चिकित्सा व्यवसाय करना असंभव है और सर्वोत्तम रिपोर्टरी वह है जो स्वयंपूर्ण है। अतः होम्योपैथी मैटेरिया मेडिका और रिपोर्टरी जुड़वाँ बच्चों के समान है।

औषधियों और रोगप्रजाओं के बीच आवश्यक समरूपता विभिन्न प्रकार से और विभिन्न मात्रा में प्राप्त करना संभव है और इसलिए विभिन्न प्रकार की रिपोर्टरियाँ हैं। समरूपविष का पता लगाने में प्रत्येक रिपोर्टरी को अपने सुभिन्न फायदे हैं।

रोगीवृत्त लेना :

चिरकारी रोग को हाथ में लेने में कठिनाइयाँ केशों को लेख्यबद्ध करना और अभिलेख रखने की उपयोगिता। लक्षणों की समग्रता। लक्षणों का औषधनिर्देशन असामान्य, विनक्षण तथा विशिष्ट लक्षण; सामान्य और विशिष्ट लक्षण; लक्षणों का त्रिलोप करना। केस के सामान्य और असामान्य लक्षणों का विश्लेषण। मानसिक लक्षणों का महत्व।

साधारण लक्षणों के प्रकार और उनके स्रोत। महत्वपूर्ण लक्षण।

1. रिपोर्टरियों का इतिहास।

2. रिपोर्टरियों के प्रकार।

3. बोहनिगसन रिपोर्टरी के आधार पर सम्पादित तीन केसों का प्रदर्शन।

4. केन्ट की रिपोर्टरी—केस प्रदर्शन के विषय में उच्चतर अध्ययन।

5. बोगर की बोहनिगसन रिपोर्टरी—रिपोर्टरी में उसका योगदान।

6. फाई रिपोर्टरी और उसके साथ पाँच केसों का प्रदर्शन। फाई रिपोर्टरियों की परिसीमाएं और उनके फायदे।

प्रदर्शनों सहित सैद्धान्तिक लेखन।

प्रयोगात्मक :

विद्यार्थी और रिपोर्टरीकरण

(i) केन्ट की रिपोर्टरियों पर 15 संक्षिप्त केस।

(ii) केन्ट पर 10 चिरकारी (पम्पे) केस।

(iii) 5 केसों को क्रासचैक करना।

सापान्य मनो विज्ञान की प्रस्तावना :

- (क) मनो विज्ञान की एक विज्ञान के रूप में परिभाषा और अन्य विज्ञानों में उसके अन्तर ।
- (ख) मन की संरचना ।
- (ग) मेमरी और उसका मिद्वान । वेतना की हिप्नाटिज्म संरचना ।
- (घ) फ्रायड और उसका मिद्वान । अचेतन की प्रतिकी ।
- (ङ) मनोविज्ञान की अन्य समसामयिक विचारधाराएँ ।
- (च) मन तथा स्वस्थ शरीर और रोगी शरीर के बीच संबंध ।
- (छ) प्रतिशतता, कल्पना, उद्भावना, बुद्धि, स्मृति ।
- (ज) बोध संकल्प, प्रभाव, तैमरिक प्रवृत्ति, भावना, आचरण ।

टिप्पणः—डिप्लोमा स्तर पर मनोविज्ञान विषय में कोई परीक्षा नहीं होगी ।

भाग—6

क. डी०एच०एम०एस० परीक्षाओं में प्रवेश, परीक्षा की स्कीम आदि

8. प्रथम डी०एच०एम०एस० परीक्षा : (i) कोई भी विद्यार्थी प्रथम डी०एच०एम०एस० परीक्षा में सभी प्रवेश पा सकेगा जब कि वह किसी होम्योपैथी महाविद्यालय में उस महाविद्यालय के प्रधानाचार्य के समाधान-प्रद रूप में, कम से कम 12 मास की अवधि तक निम्नलिखित सैद्धांतिक और प्रयोगात्मक शिक्षा पाठ्यक्रमों में नियमित रूप से उपस्थित रहा हो ।

(ii) प्रत्येक विषय में लेक्चरों तथा प्रदर्शनों, प्रयोगात्मक कक्षाओं की न्यूनतम संख्या निम्नलिखित होगी :—

विषय	सैद्धांतिक	प्रदर्शन, प्रयोगात्मक कक्षाएँ, ट्यूटोरियल, सेमिनार, संगोष्ठियाँ
प्रारंभिक लेक्चर 150 जिसके अन्तर्गत मैटीरिया मेडिका और होम्योपैथी तत्त्वज्ञान भी है ।	300 घंटे — 150 —	(सैद्धांतिक, प्रदर्शन, प्रयोगात्मक कक्षाएँ)
फार्मैसी	30 घंटे	50 घंटे
शरीर रचना	150 घंटे	300 घंटे
शरीर क्रिया विज्ञान तथा जीवरसायन	150 घंटे	300 घंटे

टिप्पणः—एक वर्ष में ट्यूशन के न्यूनतम उपपक्ष घंटे 1100 से 1200 घंटे हैं और इन घंटों का उपयोग पूरी सौर से अध्यापन और प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए किया जाना चाहिए ।

*प्रारंभिक लेक्चर नए प्रवेशकों का चिकित्सा व्यवसाय से परिचय कराने के लिए होते हैं । ये उनके समस्त साधारणतः आयुर्विज्ञान के इतिहास का और विशेष रूप से होम्योपैथी तथा हनीमन के जीवन का एक विहंगम चित्र प्रस्तुत करते हैं । स्वास्थ्य और रोग की धारणा और मनुष्य के स्वस्थ तथा और रोगी अवस्था दोनों ही में अध्ययन के, होम्योपैथी वर्शन की रूपरेखा और लगभग दस या पन्द्रह सामान्य प्रयोग की महत्वपूर्ण औषधियों के औषधिचित्रों द्वारा उदाहरण सहित होम्योपैथी मैटीरिया मेडिका से वे परिचय के विषय में हनीमन का योगदान, परिवर्तनशील समाज में कार्य-चिकित्सक के रूप में उनकी भूमिका, स्वास्थ्य सम्बन्धी वर्तमान आवश्यकताएँ और देश के स्वास्थ्य और परिवार कल्याण कार्यक्रमों की जानकारी, शरीर रचना, शरीर क्रिया विज्ञान, विकृति विज्ञान आदि जैसे आधारभूत

आयुर्विज्ञानों का परिचय, उनका अन्तर सम्बन्ध और रोगलक्षण विषयों के सम्बन्ध में उनका महत्त्व और उनकी पुनर्निर्माण (रिस्टोरेशन, रोग सम्बन्धी सामग्री की थोड़ी सी जानकारी देने से आयुर्विज्ञान के विषय में विद्यार्थियों की अभिरुचि जागृत हो जाएगी) । मनोविज्ञान और लैंगिंग्स का प्रारंभिक ज्ञान ।

(iii) महत्वपूर्ण औषधियों के औषधिचित्रों की सहायता से होम्योपैथी मैटीरिया मेडिका के अध्यापन पर और होम्योपैथी तत्त्वज्ञान पर और अधिक बल दिया जाना चाहिए । प्रारंभिक लेक्चरों में परिशिष्ट 1 की कम से कम 20 (× चिन्हित) औषधियों की पर्याप्त चर्चा होनी चाहिए ।

(iv) प्रथम डी०एच०एम०एस० परीक्षा, पाठ्यक्रम के 12 मास की समाप्ति पर आयोजित की जाए ।

(v) प्रत्येक विषय में होने वाली परीक्षा में लिखित, मौखिक और प्रायोगिक परीक्षण होना चाहिए । प्रत्येक विषय में प्रत्येक वर्ष के लिए तीन घंटे का समय दिया जाए ।

(vi) होम्योपैथी फार्मैसी (मेडजी) की परीक्षा में सिद्धान्त का एक वर्ष, प्रयोगात्मक परीक्षा और मौखिक परीक्षा होनी चाहिए ।

(vii) शरीर रचना और शरीर क्रिया विज्ञान में से प्रत्येक की परीक्षा में सिद्धान्त के दो वर्ष, एक प्रयोगात्मक परीक्षा और एक मौखिक परीक्षा होनी चाहिए ।

(viii) जिस विद्यार्थी को किसी भी विषय में 75 प्रतिशत अंक प्राप्त होंगे उनके बारे में यह घोषित किया जाएगा कि उसने उस विषय आनंद (विशेष योग्यता) प्राप्त किया है परन्तु यह तब होगा जब कि उसने परीक्षा प्रथम प्रश्रुतास में उत्तीर्ण की हो ।

(ix) प्रथम डी०एच०एम०एस० परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिए यह आवश्यक है कि विद्यार्थी उस परीक्षा में सभी विषयों में उत्तीर्ण हो ।

(X) प्रत्येक विषय में उत्तीर्ण अंक प्रत्येक भाग (अर्थात्, लिखित, मौखिक और प्रयोगात्मक परीक्षा) में 45 प्रतिशत होंगे ।

(xi) प्रत्येक विषय के लिए पूर्ण अंक और उत्तीर्ण होने के लिए अपेक्षित न्यूनतम अंक निम्नलिखित हैं :—

विषय	लिखित		मौखिक		प्रयोगात्मक		योग	
	पूर्ण	उत्तीर्ण	पूर्ण	उत्तीर्ण	पूर्ण	उत्तीर्ण	पूर्ण	उत्तीर्ण
फार्मैसी	100	45	50	23	50	23	200	90
शरीर रचना	200	90	100	45	100	45	400	180
शरीर क्रिया विज्ञान	200	90	100	45	100	45	400	180
मैटीरिया मेडिका (20 पाली क्रेस्ट औषधियाँ) और होम्योपैथी तत्त्व- ज्ञान (रोगीवृत्त देने को छोड़कर सूत्र 1 --145)	100	45	100	45	—	—	200	90

9. द्वितीय डी०एच०एम०एस० परीक्षा :

(i) कोई भी विद्यार्थी द्वितीय डी०एच०एम०एस० परीक्षा में तब तक प्रवेश नहीं पाएगा जब तक कि :—

(क) उसने पूर्व एक वर्ष की समाप्ति पर प्रथम डी०एच०एम०एस० परीक्षा उत्तीर्ण न कर ली हो, और

(ख) वह किसी मान्यताप्राप्त होम्योपैथी महाविद्यालय से उस महाविद्यालय के प्रधानाचार्य को समाधानप्रद रूप से प्रथम डी०एच०एम०एस० परीक्षा करने के बाद कम से

कम एक वर्ष की अवधि तक परीक्षा के विषयों में सैद्धांतिक और प्रयोगात्मक दोनों ही प्रकार के निम्न-लिखित पाठ्यक्रम में नियमित रूप से उपस्थित न रहा हो।

- (ii) विषयों में लेक्चरों तथा प्रदर्शन/ट्यूटोरियल/प्रयोगात्मक/नैदानिक कक्षाओं के न्यूनतम संख्या के पाठ्यक्रम निम्नलिखित रूप में होंगे :—

विषय	सैद्धांतिक	प्रदर्शन/ट्यूटोरियल/प्रयोगात्मक/नैदानिक/संगोष्ठियां
1. विकृति विज्ञान, रोगाणु विज्ञान और परजीवी विज्ञान	100	100
2. न्याय आयुविज्ञान तथा विषयविज्ञान	60	10
3. निरोधक तथा सामाजिक आयुविज्ञान (जिसके अन्तर्गत स्वास्थ्य शिक्षा और पारिवारिक आयुविज्ञान भी है)	100	50
4. मेटोरिया मेडिका		
5. आर्गेनन और वर्णन	100 75	(इसमें प्रदर्शन/ट्यूटोरियल आवि मन्मलित हैं)।

- (iii) द्वितीय डी०एच०एम०एस० परीक्षा, डी०एच०एम०एस० पाठ्यक्रम के दो वर्ष की समाप्ति पर आयोजित की जाएगी प्रत्येक विषय में द्वितीय डी०एच०एम०एस० परीक्षा लिखित, मौखिक/प्रयोगात्मक और/या नैदानिक होगी। प्रत्येक विषय में प्रत्येक पर्व के लिए तीन घंटे का समय दिया जाएगा।
- (iv) विकृति विज्ञान, रोगाणु विज्ञान और परजीवी विज्ञान की परीक्षा में सिद्धांत का एक पर्व, एक प्रयोगात्मक परीक्षा और एक मौखिक परीक्षा होगी।
- (v) निवारक और सामाजिक आयुविज्ञान की परीक्षा में सिद्धांत का एक पर्व और एक मौखिक परीक्षा होगी।
- (vi) न्याय-आयुविज्ञान और विषय विज्ञान की परीक्षा में सिद्धांत का एक पर्व और एक मौखिक परीक्षा होगी।
- (vii) मेटोरिया मेडिका की परीक्षा में सिद्धांत का एक पर्व और एक मौखिक/प्रयोगात्मक परीक्षा होगी।
- (viii) आर्गेनन तथा होम्योपैथी वर्णन की परीक्षा में सिद्धांत का एक पर्व और एक मौखिक/प्रयोगात्मक परीक्षा होगी।
- (ix) जिस विद्यार्थी को किसी भी विषय में 75 प्रतिशत अंक प्राप्त होंगे उसके बारे में यह घोषित किया जाएगा कि उसने उस विषय में आनर्स प्राप्त किया है किन्तु यह तब होगा जब कि उसने परीक्षा प्रथम प्रयास में उत्तीर्ण की हो।
- (x) द्वितीय डी०एच०एम०एस० परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिए यह आवश्यक है कि विद्यार्थी उस परीक्षा में सभी विषयों में उत्तीर्ण हो।
- (xi) होम्योपैथी तथा सन्नद्ध आयुविज्ञान दोनों प्रकार के सभी विषयों में उत्तीर्ण अंक प्रत्येक भाग (अर्थात् लिखित, मौखिक और प्रयोगात्मक परीक्षा) में 45 प्रतिशत होंगे।
- (xii) प्रत्येक विषय के लिए पूर्ण अंक और उत्तीर्ण होने के लिए अपेक्षित न्यूनतम अंक निम्नलिखित हैं :—

विषय	लिखित	मौखिक	प्रयोगात्मक	योग
	पूर्ण अंक	पूर्ण अंक	पूर्ण अंक	पूर्ण अंक
विकृति विज्ञान				
रोगाणु विज्ञान अपर				
परजीवी विज्ञान	100	45	50	23
न्याय आयुविज्ञान	100	45	50	23
सामाजिक और निरोधक आयु-विज्ञान (जिसके अन्तर्गत स्वास्थ्य शिक्षा और पारिवारिक आयुविज्ञान भी है)	100	45	50	23
मेटोरिया मेडिका (75 पाथोक्रैस्ट ओषधियां)	100	45	50	23
आर्गेनन (सूत्र 70 तक)	100	45	50	23
	200	90		

10. तृतीय डी०एच०एम०एस० परीक्षा :

- (i) कोई भी विद्यार्थी तृतीय डी०एच०एम०एस० परीक्षा में तब तक प्रवेश नहीं पाएगा जब तक कि—
- (क) उसने पूर्व 1½ वर्ष की समाप्ति पर द्वितीय डी०एच०एम०एस० परीक्षा उत्तीर्ण न कर ली हो, और
- (ख) वह किसी मास्यताप्राप्त होम्योपैथी महाविद्यालय से उस महाविद्यालय के प्रधानाचार्य को समाधानप्रद रूप से द्वितीय डी०एच०एम०एस० परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद कम से कम 1½ वर्ष की अवधि तक परीक्षा के विषयों में सैद्धांतिक और प्रयोगात्मक दोनों ही प्रकार के निम्न-लिखित पाठ्यक्रम में नियमित रूप से उपस्थित न रहा हो।
- (ii) विषयों में लेक्चरों तथा प्रदर्शन/ट्यूटोरियल/प्रयोगात्मक और नैदानिक कक्षाओं के न्यूनतम संख्या के पाठ्यक्रम निम्नलिखित रूप में होंगे :—

विषय	सैद्धांतिक	प्रदर्शन/ट्यूटोरियल/प्रयोगात्मक/नैदानिक संगोष्ठियां
1	2	3
1. ओषधि का प्रयोग (जिसके अंतर्गत मानसिक रोग और होम्योपैथी चिकित्साशास्त्री भी है)	300 (2½ वर्ष में)	300 (होम्योपैथी बाई और होम्योपैथी बहिरंग विभाग में 6 मास का निदान संबंधी प्रशिक्षण)
2. शल्यक्रिया (जिसके अंतर्गत कर्ण, नासा और कंठ, नेत्र के और वंत रोग तथा होम्योपैथी चिकित्साशास्त्र भी है)	180 (2½ वर्ष में)	150 (शल्यक्रिया बाई और शल्यक्रिया बहिरंग विभाग में 3 मास का निदान संबंधी प्रशिक्षण)
3. प्रसूति विज्ञान और स्त्री रोग विज्ञान	180 (2½ वर्ष में)	150 (प्रसूति और स्त्री रोग बाई और बहिरंग विभाग में 3 मास का निदान संबंधी प्रशिक्षण)

4. मेटिरिया मेडिका	200 (1½ वर्ष में)	400
5. आर्गेनन तथा वर्शन	125 (1½ वर्ष में)	100
6. रिपर्टरी	100 (1½ वर्ष में)	100

टिप्पण—2½ वर्ष में दूर्यशन के न्यूनतम घंटों की कुल संख्या 2760 है। ये घंटों का उपयोग विचार बिमर्श, सिम्बोक्रिया, ट्यूटोरियल आदि के लिए किया जा सकता है।

- (iii) प्रत्येक विषय में तृतीय डी०एच०एम०एस० परीक्षा लिखित, मौखिक, प्रयोगात्मक और/या नैदानिक होगी। प्रत्येक विषय में प्रत्येक पर्व के लिए तीन घंटे का समय दिया जाएगा। तृतीय डी०एच०एम०एस० परीक्षा डी०एच०एम०एस० पाठ्यक्रम के 3½ वर्ष की समाप्ति पर आयोजित की जाएगी।
- (iv) चिकित्सा व्यवसाय विषय की परीक्षा में सिद्धान्त के दो पर्व, एक मौखिक परीक्षा और होम्योपैथी की दृष्टि से रोगवर्गीकरण विज्ञान संबंधी और चिकित्सा शास्त्रीय निदान दोनों का अवधारण करने की दृष्टि से रोगी वृत्त लेने की शय्या निकट प्रयोगात्मक परीक्षा होगी।
- (v) शल्य क्रिया की परीक्षा में सिद्धान्त के दो पर्व, स्प्लेंट, पट्टियों और सामान्य उपयोग के शल्य उपकरणों के प्रयोग के विषय में मौखिक परीक्षा और एक नैदानिक परीक्षा होगी। प्रत्येक विद्यार्थी को विनिष्ट गामने में शल्य उपचार की आवश्यकता के संबंध में होम्योपैथी चिकित्साशास्त्र की परिधि के प्रति विशेष निर्देश से अपने रोगी की परीक्षा और उसके बारे में रिपोर्ट के लिए एक घंटे का समय दिया जा सकता है।
- (vi) प्रसूति विज्ञान और स्त्री रोग विज्ञान की परीक्षा में सिद्धान्त के दो पर्व, एक मौखिक परीक्षा तथा उपकरणों और सधियों पर प्रश्नों सहित प्रसूति विज्ञान और स्त्री रोग विज्ञान पर नैदानिक परीक्षा होगी।
- (vii) मेटिरिया मेडिका की परीक्षा में सिद्धान्त के दो पर्व, एक मौखिक परीक्षा और रोगवर्गीकरण विज्ञान तथा चिकित्साशास्त्रीय निदान का अवधारण करने की दृष्टि से रोगीवृत्त लेने की शय्या निकट नैदानिक परीक्षा होगी। इसके लिए एक घंटे का समय दिया जाएगा।
- (viii) आर्गेनन की परीक्षा में सिद्धान्त के दो पर्व और एक मौखिक परीक्षा होगी।
- (ix) होम्योपैथी रिपर्टरी की परीक्षा में सिद्धान्त का एक पर्व और रोगीवृत्त लेने में लक्षणों के विवर्णन और मूल्यांकन तथा उपचार का स्वरूप तय करने में एक प्रयोगात्मक परीक्षा होगी।
- (x) जिस विद्यार्थी को किसी भी विषय में 75 प्रतिशत अंक प्राप्त होंगे और उसके बारे में यह घोषित किया जाएगा कि उसने उन विषय में आनर्स (विशेष योग्यता) प्राप्त किया है। किन्तु यह तब होगा जब कि उसने परीक्षा प्रथम प्रयास में उत्तीर्ण की हो।
- (xi) तृतीय डी०एच०एम०एस० परीक्षा पास करने के लिए यह आवश्यक है कि विद्यार्थी उस परीक्षा के सभी विषयों में उत्तीर्ण हो।
- (xii) होम्योपैथी तथा नवबद्ध आयुर्विज्ञान दोनों प्रकार के सभी विषयों में पास अंक प्रत्येक भाग (अर्थात् लिखित, मौखिक और प्रयोगात्मक परीक्षा) में 45 प्रतिशत होंगे।

(xiii) प्रत्येक विषय के लिए पूर्ण अंक और पास होने के लिए अपेक्षित न्यूनतम अंक निम्नलिखित हैं:—

विषय	लिखित	मौखिक	प्रयोगात्मक	योग				
पूर्णांक	उत्तीर्णांक	पूर्णांक	उत्तीर्णांक	पूर्णांक	उत्तीर्णांक			
1. चिकित्सा व्यवसाय	200	90	100	45	100	45	400	180
2. शल्य क्रिया	200	90	100	45	100	45	400	180
3. प्रसूति विज्ञान और स्त्री रोग विज्ञान	200	90	100	45	100	45	400	180
4. मेटिरिया मैडिका	200	90	100	45	100	45	400	180
5. आर्गेनन और होम्योपैथी वर्शन	200	90	100	45	100	45	400	180
6. रिपर्टरी	100	45	50	23	50	23	200	90

11. परीक्षाफल और परीक्षा में पुनःप्रेषण:

- (i) परीक्षा में प्रवेश पाने के इच्छुक प्रत्येक विद्यार्थी को परीक्षा फीस सहित विहित प्ररूप में अपना आवेदन परीक्षा के प्रारम्भ के लिए नियत तारीख से कम से कम 21 दिन पूर्व संबंधित प्राधिकारी को भेजना होगा।
- (ii) परीक्षा के बाध यथाशीघ्र परीक्षा-निकाय सफल विद्यार्थियों की निम्नलिखित रीति से क्रमबद्ध सूची प्रकाशित करेगा:—
(क) योग्यता क्रम में प्रथम दस विद्यार्थियों के नाम और उनके रोल नम्बर, तथा
(ख) अन्य विद्यार्थियों के क्रमानुसार रोल नम्बर।
- (iii) प्रत्येक विद्यार्थी को परीक्षा उत्तीर्ण कर लेने पर संबंधित परीक्षा-निकाय द्वारा विहित प्ररूप में एक प्रमाणपत्र दिया जाएगा।
- (iv) ऐसे विद्यार्थी को जो परीक्षा में बैठता है किन्तु किसी विषय (विषयों) में उत्तीर्ण नहीं हो पाता है, परीक्षा के उस भाग के विषय या विषयों में जिसमें वह फेल हो गया है, विहित प्ररूप में आवेदन के साथ विहित फीस का संवाय करने पर पूरक परीक्षा में प्रवेश दिया जा सकता है। ऐसी परीक्षा साधारणतया, प्रथम परीक्षा के परीक्षाफल के प्रकाशन की तारीख से छह सप्ताह के बाध आयोजित की जाएगी।
- (v) यदि कोई विद्यार्थी अन्य पूरक परीक्षा या परमावृत्ती परीक्षा में उस विषय/उन विषयों में उत्तीर्ण अंक प्राप्त कर लेता है तो उसके संबंध में यह घोषित किया जाएगा कि उसने पूरी परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है।
- (vi) यदि ऐसा विद्यार्थी पूरक परीक्षा में संबंधित विषय/विषयों में उत्तीर्ण नहीं हो पाता है तो वह अगली वार्षिक परीक्षा में, विनियमों के अधीन अपेक्षित प्रमाणपत्र के अतिरिक्त इस आशय का एक प्रमाणपत्र प्रस्तुत करने पर कि वह प्रधानाचार्य को समाधानप्रद रूप में उस विषय/उन विषयों में जिसमें वह अनुत्तीर्ण हो गया था, आगामी शिक्षा वर्ष की अवधि तक अतिरिक्त पाठ्यक्रम में उपस्थित रहा था, आगामी वार्षिक परीक्षा में उस विषय या उन विषयों में बैठ सकता है परन्तु परीक्षा के सभी भाग अनु-पूरक अवसर सहित चार अवसरों में पूरे हो जाने चाहिए। इन चार अवसरों की गणना उस तारीख से की जाएगी जिस तारीख को सर्वप्रथम पूर्ण परीक्षा होनी नियत हो।

- (vii) यदि कोई विद्यार्थी विहित चार अवसरों के भीतर सभी विषयों में उत्तीर्ण नहीं हो पाता है तो उससे अपेक्षा की जाएगी कि वह सभी भागों के सभी विषयों में, महाविद्यालय के प्रधानाचार्य की समामान्य रूप में, एक वर्ष तक पाठ्यक्रम पूरा करेगा और सभी विषयों में परीक्षा के लिए बैठेगा।

परन्तु यदि तृतीय डी० एच० एम० एस० परीक्षा में बैठने वाले किसी विद्यार्थी को विहित अवसरों के समाप्त होने पर केवल एक विषय में उत्तीर्ण होना बाकी रहता है तो उसे उस विशिष्ट विषय में आगामी परीक्षा में बैठने दिया जाएगा और वह इस विशेष अवसर के साथ परीक्षा पूरी करेगा।

- (viii) सभी परीक्षाएं उन तारीखों, समय और स्थानों पर आयोजित की जाएंगी जो परीक्षा-निकाय तय करे।

- (xi) परीक्षा निकाय असाधारण परिस्थितियों में, होम्योपैथी केन्द्रीय परिषद् को सूचना देकर किसी भी परीक्षा को पूर्णतः या भागत : रद्द कर सकेगा और इस प्रकार रद्द किए जाने की तारीख से तीस दिन की अवधि के भीतर उन विषयों में पुनः परीक्षा के आयोजन की व्यवस्था कर सकेगा।

12. परीक्षक: (i) ऐसे व्यक्ति के सिवाय जिसने 4 वर्ष के अध्ययन के पश्चात् डिप्लोमा या होम्योपैथी में डिग्री प्राप्त की है अथवा तृतीय अनुसूची में सम्मिलित अर्हता रखने वाले व्यक्ति के सिवाय कोई भी व्यक्ति डी० एच० एम० एस० पाठ्यक्रम की वृत्तिक परीक्षा के आयोजन के लिए आंतरिक या बाह्य परीक्षक अथवा प्रश्न पत्र सेटर नियुक्त नहीं किया जाएगा;

परन्तु—

- (क) ऐसा कोई भी व्यक्ति तब तक परीक्षक नियुक्त नहीं किया जाएगा जब तक कि उसे कम से कम तीन वर्ष का अध्यापन अनुभव न हो;
- (ख) डिप्लोमा स्तर की किसी संस्था के संबंधित विषय के प्राध्यापक की पंक्ति से भीवे का कोई व्यक्ति आंतरिक परीक्षक नियुक्त नहीं किया जाएगा,
- (ग) कोई भी व्यक्ति किसी सहस्रबद्ध आयुर्विज्ञान विषय का बाह्य परीक्षक तब तक नियुक्त नहीं किया जाएगा जब तक कि उसके पास ऐसी मान्यताप्राप्त आयुर्विज्ञान अर्हता न हो जो होम्योपैथी (शिक्षा के न्यूनतम मानक) विनियम, 1980 के उपाबंध ३० के अनुसार अध्यापन पद पर नियुक्ति के लिए अपेक्षित है;
- (घ) बाह्य परीक्षक होम्योपैथी महाविद्यालयों और आधुनिक आयुर्विज्ञान के महाविद्यालयों के अध्यापन कार्य में लगे हुए कर्मचारियों में से ही लिए जाएंगे;
- (ङ) कुल बाह्य परीक्षकों में से एक तिहाई से अधिक परीक्षक होम्योपैथी या आधुनिक आयुर्विज्ञान के उन चिकित्सा व्यवसायियों में से होंगे जो परीक्षा निकाय की राय में क्याति-प्राप्त चिकित्सा व्यवसायी हैं और जिन्होंने भारतीय आयुर्विज्ञान परिषद् अधिनियम, 1956 के अधीन मान्यताप्राप्त होम्योपैथी अर्हता या आयुर्विज्ञान अर्हता प्राप्त की है;
- (च) बाह्य परीक्षक के रूप में नियुक्ति के लिए सरकारी नियोजन में लगे व्यक्तियों के नाम पर भी विचार किया जा सकता है परन्तु यह तब होगा जब उनके पास वे उक्त उप-विनियम (३०) में विनिर्दिष्ट आयुर्विज्ञान अर्हताएं हों;
- (छ) प्रश्न पत्र सेटर व्यक्ति को आंतरिक या बाह्य परीक्षक नियुक्त किया जा सकता है।
- (ii) परीक्षा निकाय प्रश्नपत्रों के परिनिर्णयन (माडरेट) के लिए एक परिनिर्णयन (माडरेट) या अधिक से अधिक तीन परिनिर्णयन नियुक्त कर सकेगा।

- (iii) वैदिक और प्रयोगात्मक परीक्षाएं संबंधित आंतरिक और बाह्य परीक्षकों के परस्पर सहयोग से आयोजित की जाएंगी। उनमें से प्रत्येक के पास अधिकतम 50 प्रतिशत अंक होंगे। वे परीक्षा में बैठने वाले विद्यार्थियों को उनके कार्य के अनुसार इन अंकों से अंक आवंटित करेंगे और इस प्रकार तैयार किए गए अंक पत्र पर दोनों परीक्षकों के हस्ताक्षर होंगे। दोनों परीक्षकों में से किसी भी परीक्षक को यह अधिकार होगा कि वह पुष्क अंक पत्र तैयार करे और उस पर अपने हस्ताक्षर करके उसे अपनी टिप्पणियों के साथ परीक्षा निकाय को अलग से भेज दे। परीक्षा निकाय ऐसी टिप्पणियों पर सम्यक् रूप से ध्यान देगा किन्तु वह अंक पत्रों के आधार पर परीक्षा फल घोषित करेगा:
- (iv) प्रत्येक होम्योपैथी महाविद्यालय आंतरिक और बाह्य परीक्षकों को, परीक्षाओं के आयोजन के लिए सभी सुविधाएं देगा तथा आंतरिक परीक्षक परीक्षाओं के आयोजन के लिए सभी सुविधाएं करेगा।
- (v) बाह्य परीक्षक को होम्योपैथी महाविद्यालय द्वारा उपलब्ध न की गई सुविधाओं में किसी की कमी के बारे में अपने विचार और अपनी टिप्पणियां परीक्षा निकाय को संसूचित करने का अधिकार होगा।
- (vi) वह अपनी उक्तसूचना की एक प्रति केन्द्रीय परिषद् को भी ऐसी कार्रवाई की जाने के लिए भेजेगा जो केन्द्रीय परिषद् ठीक समझे।

पी० एल० वर्मा, सचिव

CENTRAL COUNCIL OF HOMOEOPATHY

NOTIFICATION

New Delhi, the 11th May, 1983

No. 7-1/83/CCH.—In exercise of the powers conferred by clauses (i), (j) and (k) of section 33 and sub-section (i) of section 20 of the Homoeopathy Central Council Act, 1973 (59 of 1973), the Central Council of Homoeopathy, with the previous sanction of the Central Government hereby makes the following regulations, namely:—

PART I

PRELIMINARY

1. Short title and commencement.—(1) These regulations may be called the Homoeopathy (Diploma Course) Regulations, 1983.

(2) They shall come into force on the date of their publication in the Gazette of India.

2. Definitions.—In these regulations, unless the context otherwise requires,—

(i) "Act" means the Homoeopathy Central Council Act, 1973 (59 of 1973);

(ii) "Courses" means the courses of study in Homoeopathy, namely:—

(a) D.H.M.S. (Diploma in Homoeopathic Medicine and Surgery); and

(b) B.H.M.S. (Bachelor of Homoeopathic Medicine and Surgery).

- (iii) "Diploma" means a Diploma in Homoeopathy as provided in regulation 3 of these regulations or a Diploma in Homoeopathy included in the Second or Third Schedule and obtained after undergoing a course of study in Homoeopathy of not less than four years' duration ;
- (iv) "Degree" means a degree in Homoeopathy defined in clause (iv) of regulation 2 of the Homoeopathy (Graded Degree Course) Regulations, 1983 or in clause (iv) of regulation 2 of the Homoeopathy (Degree Course) Regulations, 1983 ;
- (v) "Homoeopathic College" means a Homoeopathic Medical College affiliated to a Board or University and recognised by the Central Council ;
- (vi) "Inspector" means a Medical Inspector appointed under sub-section (1) of section 17 of the Act ;
- (vii) "President" means the President of the Central Council ;
- (viii) "Second Schedule" and "Third Schedule" mean the Second Schedule and Third Schedule respectively of the Act ;
- (ix) "Syllabus" and "Curriculum" mean the Syllabus and Curriculum for different courses of study as specified by the Central Council under these regulations, the Homoeopathy (Graded Degree Course) Regulations, 1983 and the Homoeopathy (Degree Course) Regulations, 1983 ;
- (x) "Teaching experience" means teaching experience in the subject concerned in a Homoeopathic College or in a Hospital recognised by the Central Council ;
- (xi) "Visitor" means a Visitor appointed under sub-section (1) of section 18 of the Act.

COURSES OF STUDY

Diploma Course

3. (i) A Diploma Course in Homoeopathy shall comprise a course of study consisting of the Curriculum and Syllabus provided in these regulations spread over a period of four years including a compulsory Internship of six months' duration after passing the final Diploma examination.

(ii) The Internship shall be undertaken at the Hospital attached to the College and in cases where such Hospital cannot accommodate all of its students for Internship each students may undertake their Internship in a Hospital or dispensary run by the Central Government or State Government or local bodies.

(iii) At the completion of the Internship of the specified period and on the recommendation of the head of the Institution where Internship was undertaken, the concerned State Board or University, as the case may be, shall issue the Diploma to the successful candidate.

PART III ADMISSION TO COURSE

4. Minimum qualifications.—No candidate shall be admitted to D.H.M.S. (Diploma) Course unless he has—

- (a) passed the Intermediate Science or its equivalent examination with Physics, Chemistry and Biology as his subjects ;
- (b) attained the age of 17 years on or before 31st December of the year of his admission to the first year of the Course.

5. Authorities empowered to conduct examinations.—The examination for the diploma course in various States shall be conducted by the agencies appointed by the respective State Governments or Homoeopathic Boards or Councils or Universities as the case may be.

PART IV—THE CURRICULUM

6. Subject.—Subjects for study and examination for the D.H.M.S. (Diploma) Course shall be as under—

- (i) Anatomy.
- (ii) Physiology.
- (iii) Organon of medicine.
- (iv) Chronic diseases and homoeopathic philosophy.
- (v) Fundamentals of psychology and logic
- (vi) Case-taking and homoeopathic repertorisation.
- (vii) Homoeopathic pharmacy.
- (viii) Homoeopathic materia medica.
- (ix) Pathology, bacteriology and parasitology.
- (x) Social and preventive medicine including health education and family medicine.
- (xi) Forensic medicine.
- (xii) Practice of medicine and paediatrics.
- (xiii) Obstetrics and gynaecology.
- (xiv) Surgery including E.N.T. and ophthalmology.
- (xv) Homoeopathic therapeutics, and
- (xvi) History of medicine.

PART V—SYLLABUS

7. Syllabus of Diploma Course.—Following shall be the syllabus for the D.H.M.S. (Diploma) course.

FIRST D.H.M.S. EXAMINATION HOMOEOPATHIC PHARMACY

Theoretical

- (i) Introduction : Pharmacy, Homoeopathic Pharmacy—its speciality and or homoeopathic pharmacopoeia.

(ii) Scope of homoeopathic pharmacy in relation to—

- (1) Organon of medicine (Aph. 264 to 285 organon of medicine.
- (2) Materia Medica.
- (3) National Economy.
- (iii) Weights and measures including homoeopathic scales (Deci. Centi. Milli).
- (iv) Homoeopathic pharmaceutical instruments and appliances.
- (v) Sources of Homoeopathic drugs. Process of collection of drug substances, identification, purification, preservation and also preservation of potentised drugs.
- (vi) Vehicles—
 - (1) Their preparation and uses.
 - (2) Purification.
 - (3) Determination of proof strength of alcohol.
- (vii) Methods of preparation of drugs from organic and inorganic chemicals, vegetables, animals and animal products, disease products (nosodes) etc. Hahnemann's classical and modern methods including merits and demerits.
- (viii) (a) Methods of preparation of mother tincture solutions, potencies and triturations.
- (b) Potentisation of drugs on.—
 - (i) Decimal scale.
 - (ii) Centesimal scale.
- (ix) Fluxion potency, methods of conversion of trituration into liquid form.
- (x) External application—its scope-modes of preparation and use of lotion, liniment, glycerole, ointment.
- (xi) Prescription—its study including abbreviations, principles and mode of prescription writing and validity.
- (xii) Pharmacology—Drug strength—Hom. Pharmacodynamics, dynamic power—medicine—posology—Hom. posology—remedy.
- (xiii) Brief study of standardisation of drugs and vehicles.
- (xiv) General knowledge of legislation in relation to homoeopathic pharmacy.
- (xv) General laboratory methods. Solutions, dillution, decantation-precipitation, filtration, distillation, crystallization, sublimation, percolation etc.
- vi) Study of biological mechanical and or chemical characteristics of some important drug substances.
- i) The technique of homoeopathic drug proving.

PRACTICAL

- (i) Identification, and uses of homoeopathic pharmaceutical instruments and appliances and their cleaning.
- (ii) Identification of important homoeopathic drugs (vide list attached).
 - (a) Microscopic
 - (i) At least 30 drug substances—20 from vegetable kingdom and 10 from minerals and chemicals.
 - (ii) Collection of 30 drug substances for barbarium.
 - (iii) Microscopic study of two trituration of upto 3X potency.
- (iii) Estimation of moisture content of one drug substance with water bath.
- (iv) Purity test of ethyl, alcohol, distilled water, sugar of milk, including determination of sp. gravity of distilled water and alcohol.
- (v) Estimation of size of globule,—its medication—of milk sugar and distilled water—Making of doses.
- (vi) Preparation and dispensing of dilute alcohol solutions and dilutions.
- (vii) Preparations of mother tinctures of 3 polychrests.
- (viii) Preparations of triturations of 3 crude drugs upto 3X.
- (ix) Preparations of mother tinctures of drugs which do not conform to the D.S.I.
- (x) Potentisation of 3 mother tinctures upto 6X decimal scale and 3 centesimal scale.
- (xi) Trituration of 3 drugs upto 6X and their conversion into liquid potencies.
- (xii) Preparation of external applications—one of each.
- (xiii) Writing of prescriptions and dispensing of the same.
- (xiv) Laboratory methods :—
 - (a) Sublimation
 - (b) Distillation
 - (c) Decantation
 - (d) Filtration
 - (e) Crystallisation
 - (f) Percolation.
- (xv) Visit to a Homoeopathic laboratory to study the manufacture of drugs on a large scale.

List of drugs for identification

1. Aconitum Nap.
2. Agaricus M.
3. Antimonium Tart.
4. Apis Mellifica.
5. Argentum Nitric.

6. Arnica Montana.
7. Arsenicum Alb.
8. Aurum Met.
9. Baptisia T.
10. Baryta Carb.
11. Belladonna.
12. Bryonia A.
13. Cacuts G.
14. Calcarea Carb.
15. Calcarea Phos.
16. Calendula.
17. Camphora.
18. Cantharis.
19. Carbo Vegetabilis.
20. Causticum.
21. Chamomilla.
22. Chelidonium M.
23. China.
24. Cina.
25. Coccus Ind.
26. Colchicum A.
27. Colocynthis.
28. Conium M.
29. Cuprum Met.
30. Digitalis P.
31. Drosera.
32. Dulcamara.
33. Glonine.
34. Graphitis.
35. Hepar Sulph.
36. Hyoscyamus N.
37. Hypericum.
38. Ignatia.
39. Ipecacunha.
40. Kali carb.
41. Lachesis.
42. Lycopodium.
43. Mercurius Cor.
44. Mercurius Sol.
45. Mezereum.
46. Natrum Mur.
47. Nitric Acid.
48. Nux Vomica.
49. Opium.
50. Phosphorus.
51. Phosphoric Acid.
52. Platina M.
53. Plumbum M.
54. Pulsatilla.
55. Rhus Tox.
56. Ruta G.
57. Sambucus N.
58. Sanguinaria C.
59. Secale Cor.
60. Sepia.
61. Silicea.
62. Spigelia.

63. Spongia T.
64. Stannum Met.
65. Stramonium.
66. Sulphur.
67. Tarentula Cu.
68. Thuja O.
69. Vertarum Album.
70. Veratrum Viride.
71. Zincum Met.

Anatomy and Physiology

Study of Normal Man in Preclinical Period

Human economy is the most difficult of all sciences to study. Man is a conscious mentalised, living being and function as a whole. Human knowledge has become so vast that for precise comprehension of man as a whole development of different branches of science like anatomy, physiology and psychology was necessary. But such a division is only an expedient; man nevertheless remains indivisible.

Consciousness, life and its phenomena cannot be explained in terms of cell physiology or of quantum mechanics not by physiological concepts which in their turn are based on chemio-physical concepts.

Though anatomy and physiology are hitherto being taught as entirely different subjects, a water-tight barrier should not be erected between them; structure (anatomy) and function (physiology) are but correlated aspects and the physico-chemical processes are but an external expression of an inextinguishable phenomenon which is life.

So anatomy and physiology should be taught with the following aims :

- (i) to provide for the understanding of the morphological, physiological and psychological principles which determine and influence the organism of the living body as a function unit;
- (ii) to co-relate and interpret the structural organism and normal physiology of the human body and thus to provide the data on which to anticipate disturbances of functions;
- (iii) to enable the student to recognise the anatomical, physiological and psychological basis of the clinical signs and symptoms of disorders due to injury, disease and mal-development;
- (iv) Similarly, to give the student to understand the factors involved in the development of pathological processes and the possible complications which may arise therefrom;
- (v) to give the student such knowledge of preclinical subjects as well enable him ultimately to employ competently and rationally all the ordinary methods of examination and treatment (including surgery) that may involve such knowledge; and
- (vi) for enabling the student to pick out strange, rare and uncommon symptoms from

pathognomonic symptoms for individualisation of patients and drugs for the purpose of applying the law of similars in homoeopathic practice.

ANATOMY

Instruction in anatomy should be planned as to present to the student a general working knowledge of the structure of the human body. The amount of detail which he is required to memorise should be reduced to the minimum. Major emphasis should be laid on *functional* anatomy of the living subject rather than on the static structures of the cadaver, and on general anatomical positions and broad relations of the viscera, muscles, blood-vessels, nerves and lymphatics. Study of the cadaver is only a means to this end. Students should not be burdened with minute anatomical details which have no clinical significance.

Though dissection of the entire body is essential for the preparation of the student for his clinical studies, the burden of dissection can be reduced and much saving of time can be effected, if considerable reduction of the amount of topographical details is made and the following points are taken into consideration :—

1. Only such details as have professional or general educational value for the medical student should be presented to him.

2. The purpose of dissection is not to create technically expert prospectors but to give the student an understanding of the body in relation to its function, and the dissection should be designed to achieve this end; for example, ignoring of small and clinically unimportant blood vessels results in a much cleaner dissection and a much clearer picture of the main structures and their natural relationships.

3. Much that is at present taught by dissection could be demonstrated as usefully through prepared dissected specimens.

4. Normal radiological anatomy may also form part of practical training. The structure of the body should be presented linking functional aspect.

5. Actual dissection should be proceeded by a course of lectures on the general structure of the organ or the system under discussion and then its function. In this way anatomical and physiological knowledge can be presented to students in an integrated form and the instruction of the whole course of anatomy and physiology made more interesting, lively and practical.

6. A good part of the theoretical lectures on anatomy can be transferred to tutorial classes with demonstrations.

A few lectures or demonstrations on the clinical and applied anatomy should be arranged in the later part of the course. They should preferably be given by a clinician and should aim at demonstrating the anatomical basis of physical signs and the value of anatomical knowledge to the clinician.

Theoretical

A complete course of human anatomy with general working knowledge of different anatomical parts of the body.

N.B. Demonstrations in the tutorial classes may be counted as general class lectures.

Candidates will be required to recognise anatomical specimens and to identify and answer questions on structures displayed in recent dissections; to be familiar with the bones and their articulations including the vertebrae and skull and with the manner of ossification of long bones.

Emphasis will not be laid on minute details except in so far as is necessary to the understanding of structure of their application to medicine and surgery. Candidates are expected to know the attachments of muscles sufficiently to understand their action, but not the precise details of the origin and insertion of every muscle or bone of the hand and foot and of the articulations and details of small bones of the skull.

Gross anatomy

- (i) Superior extremity, inferior extremity, pelvis head, neck, thorax and abdomen to be studied regionally and system by system.
- (ii) Endocrine organs with special reference to development and applied anatomy.

The living subject

Candidates must be prepared to undergo a test in surface anatomy and surface markings on a living subject. Radiographs : Candidates may be questioned on radiographs of the normal subject.

General nervous system

A knowledge of the naked eye anatomy of the brain, spinal cord and meninges and of the positions, connections and functional significance of the main nuclei and tracts.

PRACTICAL

- (1) A course of dissection of the human body.

N.B. (a) Arrangements should be made to have dissection cards for the students. Parts should be allotted to students and the dissection of parts shall be recorded as complete only after their passing an oral examination concerning each part, held by demonstrations. The period for dissection should be at least 4 months.

- (b) Regular attendance at the demonstration of dissection by a batch of ten students in respect of each part may be recorded as actual dissection by the students in case of scarcity of dead bodies.

(2) A course of practical demonstrations on surface marking of :—

- (i) Important viscerae

- (ii) Arteries
- (iii) Nerves
- (iv) Regions of clinical importance of the brain
- (v) Bony landmarks.

The written papers in Anatomy shall be distributed as follows :—

- Paper I—Upper extremity, head, face, neck and brain.
- Paper II—Lower extremity, thorax, abdomen and pelvis.

PHYSIOLOGY

The purpose of a course in physiology is to teach the functions, processes and inter-relationship of the different organs and systems of the normal human organism as a necessary introduction to their disturbances in disease and to equip the student with normal standards of reference for use while diagnosing and treating deviations from the normal. To a homocopath the human organism is an integrated whole body, life and mind; and though life includes all the chemico-physical processes it transcends them. There can be no symptoms of disease without vital force animating the human organism and it is primarily the vital force which is deranged in disease. Physiology should be taught from the stand-point of description of vital phenomena and the chemico-physical processes underlying them in health.

A few lectures on histology are desirable.

Theoretical

A course of systematic lectures in the general principles and facts in physiology.

- (i) Histology—the animal cell, epithelial tissue, connective tissue, muscular tissue, nervous tissue.
- (ii) Contraction :—Simple contraction—tetany, fatigue, principal changes associated with contraction. Differences in function between voluntary and involuntary muscles, and rigor mortis.
- (iii) Digestive system—including dieties. Food-stuff—vitamins, functions of the oesophagus, stomach, large and small intestines, salivary glands, pancreas and liver. Composition of saliva and its functions, composition and function of gastric juice, pancreatic juice, bile and succus entericus, functions of the large intestines. Absorption of food stuffs. Functions of the liver. Mechanism of deglutition, peristalsis, defaecation.

Definition and General action of Enzymes

General metabolism of fat, carbohydrates and proteins.

- (iv) Respiratory system :—Structures of trachea, bronchi and lungs, mechanism of respiration,

exchange of gases during respiration, Tidal air, complementary air, supplemental air, residual air, vital capacity, apnoea, asphyxia and its stages, tissue respiration.

(v) Circulatory system :

- (a) Blood—its composition, life history of red-blood cells and white blood cells, their functions. Coagulation of blood.
- (b) Heart—structure, innervation, cardiac cycle, heart sound—their character and causation, heart block, E.C.G.
- (c) Blood vessels.

Histology of arteries, veins and capillaries. Mechanism of blood flow.

Pulse—its normal characters.

Blood pressure, vascular tone-vasomotor nervous mechanism. Short description of the reticulate endothelial system and its functions, spleen, mechanism of intravascular clotting, immunity. Vital reactions to a normal stimuli.

- (vi) Lymphatic system :—Structure of lymphatic glands and vessels, composition of lymph. Mechanism of lymph flow.
- (vii) Urinary systems :—Structure and functions of kidney, Urine and its physical characters and chemical composition, common abnormal ingredients and their detection.
- (viii) Cutaneous system :—Structure and functions of skin. Sweat glands—their structure. Composition of sweat.
- (ix) Animal heat. Its regulation in warm blooded animals.
- (x) The Ductless glands. Structures and functions of thyroid and parathyroid. Suprarenal and pituitary bodies. Pancrease and diabetes.
- (xi) Nerves and nervous systems :
 - (a) Classification of nerves.
 - (b) The Central nervous system.
 - (c) Brain-structure and functions of cerebral cortex (Cerebrum rolandic areas. The cortical centres).
 - (d) The medulla, vasomotor, respiratory and cardiac centres.
 - (e) The cerebellum-structure and function of cerebellum.
 - (f) The spinal cord-description of the spinal tracts of ascending and descending degeneration. Function of the spinal cord.
 - (g) The autonomic nervous system.
 - (h) The sympathetic nervous system.
 - (i) The para-sympathetic nervous system.

(xii) The special senses :—

- (a) Structures and functions of different part of eye-ball, vision-formation of retinal image. Mechanism of accommodation, common errors of refraction.
- (b) Hearing-anatomy and function of external, middle and internal ear.
- (c) Taste and smell-varieties of the papillae of the tongue and their structure.
- (d) Nerves of taste. Olfactory nerves.
- (e) Cutaneous and muscle sense-varieties of the end-organ, varieties of cutaneous sense, muscle sense.

(xiii) Reproductive system—The male reproductive organs, the female reproductive organs, fertilisation of ovum. The mammary glands, menstruation. Ductless glands in connection with reproduction.

PRACTICAL

- (1) Identification of histological specimens of tissues and organs, Bone, cartilage, fibrous tissue, cellular tissue veins, arteries, liver, lung, appendix, fallopian tube, cross section of spinal nerve, lymph gland, spleen kidney.
- (2) Preparations and staining of blood films. Total and differential count of blood cells.
- (3) Use of the haemoglobinometer and sphygmomanometer. Demonstration of some experiments in connection with nerve muscle physiology.
- (4) Chemical examination of common normal and abnormal ingredients of urine.

N.B.—Candidates are required to possess a general and working knowledge of positive physiological facts and established theories to the exclusion of tentative and controversial hypothesis regarding them. The whole subject of physiology is to be taught from the stand point of description of the vital phenomena and the chemico-physical processes underlying them in relation to vital force theory as enunciated by S. Hahnemann.

The written papers in Physiology shall be distributed as follows :—

Paper I—Histology, blood and lymph, cardiovascular system, reticuloendothelial system, spleen, respiratory system, urinary system, skin, regulation of body temperature, sense organs, nerve-muscle physiology.

Paper II—Endocrine organs, nervous system, reproductive system, digestive system, metabolism, enzymes, nutrition.

II. D.H.M.S. EXAMINATION

PATHOLOGY AND BACTERIOLOGY

The teaching of pathology and bacteriology has to be done very cautiously and judiciously, while allopathy associates the pathology of tissues and micro-organism with disease-conditions and considers bacteria as conditioned cause of diseases, homoeopathy regards diseases as purely a dynamic disturbance of the vital force expressed as altered sensation and functions which may or may not ultimate in gross tissue changes. The tissue changes are not therefore as essential part of the disease per se and are not accordingly in homoeopathy the object of treatment by medication.

2. Since the discoveries of Louis Pasteur and Robert Koch the medical world has come to believe in the simple dogma "kill the germs and cure the disease". But subsequent experience has revealed that there is an elusive factor called 'susceptibility' of the patient which is behind infection and actual outbreak of disease. As homoeopathy is mainly concerned with reactions of the human organism to different morbid factors, microbial or otherwise, the role of bacteria or viruses in the production of disease is therefore, in homoeopathy quite secondary.

3. Knowledge of bacteriology is nevertheless necessary for a complete homoeopathic physician; but it is for purposes other than therapeutics such as for diagnosis, prognosis, prevention of disease and general management. Similarly knowledge of pathology is necessary for disease determination, prognosis, for discrimination between symptoms of the patient and symptoms of the disease and for adjusting the dose and potency of indicated homoeopathic remedy.

4. Only broad basic training in pathology, free from specialist bias, should however be imparted to students. Teachers of pathology should never lose sight of the fact that they are training medical practitioners, especially homoeopathic practitioners, and not technicians and specialists in pathology. The living patient, and not the crops, should be the central theme in the teaching of the subject.

5. The purpose of the instruction in pathology is to enable the student to correlate subjective symptoms with the objective ones, to interpret clinical symptoms and their inter-relationship of the basis of underlying pathology.

A. General Pathology

- (1) Introduction—scope of pathology—Old school, New school (Homoeopathic) How to study pathology.
- (2) Health and disease, etiology of diseases, infection, Definit adoption.
- (3) Inflammation.

Concept of inflammation—phenomena of inflammation etiology—clinical manifestation of inflammation. Classification of inflammation—inflammation of special tissues suppuration.

Disturbances of Circulation :—

- (1) Hyperaemia (active and passive).
- (2) Thrombosis and Embolism including infection.
- (3) Oedema.
- (4) Fever.
- (5) Regenerative tissue changes. Hypertrophy and Hyperplasia. The healing process, healing of special structures.

(6) Degenerative tissue changes :

Atrophy, cloudy swelling—mucoid degeneration—amyloid degeneration, colloid degeneration fatty degeneration—lipoid infiltration—glycogen infiltration—pigmentary changes—necrosis—gangrene.

(7) Proliferative tissue changes :

(a) Tumors, etiology—classification benign tumors, fibroma, myoma, lipoma, osteoma chondroma, lymphoma, malignant tumors :

(i) cancers, (ii) sarcoma, cysts, infective granulomata.

(8) Immunity—natural immunity—acquired immunity, active immunity, passive immunity, phagocytosis, opsonin chemotaxis—bacteriolysis antitoxia agglutinins, precipitin—cytolysin—anti ferments, antilipoids—albuminolysis—bacteriotropins, theories of immunity antigen—anaphylaxis shock.

B Special pathology :

- (i) Diseases of the blood—general consideration—pernicious anaemia—aplastic anaemia—chlorosis, leukaemia.
- (ii) Diseases of the circulatory system—pericarditis endocarditis—arterio sclerosis—syphilitic aortitis anurism.
- (iii) Meningitis.
- (iv) Diseases of the respiratory system.
- (v) Diseases of the kidney.
- (vi) Diseases of the alimentary tract—peptic ulcers—cholera—typhoid ulcers—tubercular ulcers—amoebic dysentery—bacillary dysentery.
- (vii) Cirrhosis of liver.
- (viii) Diseases of unknown causation, beriberi-epidemic dropsy.

C. Bacteriology :

The morphology, biology and pathogenic qualities of the following micro-organisms :—

Pyogenic cocci, pneumococcus and gonococcus.

B. Coli, B. Commins, B. Diphtheria, B. Tuberculosis, B. Tetanus, B. Typhosus, B. Dysentericus, B. Leprae, R. Pestis, B. Coma, Diplococcus intracellularis.

Manengitils micro coccus catarrhalis. B. Anthrax. B. Paratyphosus.

D. Parasitology :

The morphology, Biology and Pathogenic qualities of the following :—

- (i) Protozoa, Entamoeba Histolytica
- (ii) Mastigophore leishmania.
- (iii) Sporozoa plasmodium vivax (Malariae) P. Falciparum.
- (iv) Helminths.
- (v) Spirochaetes of syphilis, Weils diseases, rat bite fever, ascaria lumbricoides—Oxyuris, Varicularies filaria Bancrofti—Ankylostomado—denale, Taenia saginata, T. solium, T. echinococcus.

E. Viruses :

Small pox, chicken pox, measles, common cold, Herpes zoster, acute anterior polio-myelitis, influenza, Encephalitis lethargica, epidemical infective hepatitis, primary atypical pneumonia.

PRACTICAL

1. 20 demonstrations of histopathological studies of tissues and organs.
2. 20 demonstration of microscopic specimens of pathogenic organisms.
3. 20 demonstrations of technique of collection, preparation and examination of morbid materials such as blood, urine, pus, sputum and exudates. Demonstrations to run concurrently.

FORENSIC MEDICINE AND TOXICOLOGY

The subject is of practical importance to the students as homoeopathic physicians are to be employed by Government in areas where they may have to handle medico-legal cases, perform autopsies, apart from giving evidence in such cases. The training in forensic medicine at present conducted is inadequate to meet these needs.

The course should consist of a series of lectures and demonstrations including :—

1. Legal procedure :

Definition of Medical Jurisprudence, courts and their jurisdiction.

2. Medical ethics :

Law relating to medical registration and medical relation between practitioner and the State, the practitioner and the patient malpractice covering professional secrecy, the practitioner and the various legislations (Act), Provincial and Union such as Workman's Compensation Act, Leprosy Act, Public Health Act, Injuries Act, Child Marriage Act, Borstal schools Act, Medical termination of pregnancy Act, Lunacy Act, Indian Evidence Act, C.C.H. Act, 1973 etc.

3. Forensic Medicines :

Examination and identification of persons living and dead ; parts, bones, stains etc.

Death : Medico-legal, Post mortem signs, stages and results, Putrefaction, mummification, saponification, form of death, causes, agencies, onset etc. Assaults, wounds, injuries and death by violence, Asphyxial death, blood examination, blood stains, Seminal stains, Burns, scalds, lightning stroke, etc. Starvation, pregnancy, delivery, abortion, infanticide, Sexual crimes.

Insanity in relation to the State, life and accident insurance Toxicology : A separate course of lectures dealing poisoning in general, the symptoms and treatment of various poisons post-mortem appearance, and tests should be given.

Study of the following poisons :

Mineral acid, corrosive sublimate, arsenic and compound, alcohol, opium and its alkalids, carbolic acid, carbon monoxide, carbon-dioxide, kerosene oil, cannabis indica, cocaine, belladonna, strychnin and nuxvomica, aconite, cleander, snake poison prussic acid, red lead poisoning.

4 Medico-legal post-mortem :

Recording post-mortem appearance, forwarding material to chemical examiners. Interpretation of laboratory and chemical examiner's findings. Students who are attending a course of lecture in forensic medicine should avail themselves of all possible opportunities of attending medico-legal post-mortems conducted by the professors of forensic medicine. It is expected that each student should attend at least ten post-mortems.

5. Demonstration :

1. Weapons.
2. Organic and inorganic poisonous substances.
3. Poisonous plants.
4. Charts, diagrams, models, X-ray films etc. of medico-legal interest.

PREVENTIVE AND SOCIAL MEDICINE

(Including Health Education and Family Medicine)

Instruction in this course should be given in the third year of medical studies by lectures, demonstrations and field study. This subject is of utmost importance, and throughout the period of medical studies the attention of the student should be directed to the importance of preventive medicine and the

measures for the promotion to positive health.

His function is not limited merely to prescribing homoeopathic medicines for curative purposes but has a wider role to play in the community. He has to be well conversant with the national health problems both of rural as well as urban areas, so that he can be assigned responsibilities to play an effective role not only in the field of curative but also of preventive and social medicine including family planning.

(i) Physiological Hygiene :

- (a) Food and Nutrition—Food in relation to health and disease. Balanced diets. Nutritional deficiencies and nutritional survey. Food processing. Pasteurisation of milk. Adulteration of food and food inspection, food poisoning.
- (b) Air, light and sunshine.
- (c) Effect of climate—Humidity, temperature, pressure and other meteorological conditions—comfort zone. Effect of overcrowding.
- (d) Personal Hygiene—(cleanliness, rest, sleep, work) physical exercise and training care of health in tropics.

(ii) Environmental sanitation :

- (a) Definition and importance.
- (b) Atmospheric pollution—purification of Air. Air sterilisation, air borne diseases.
- (c) Water supplies—sources and uses, impurities and purification. Public water supplies in urban and rural areas. Standards of drinking water, water borne diseases.
- (d) Conservancy—method in villages, towns and cities septic tanks, dry earth latrines. Water closets, disposal of sewage, Disposal of the dead, Disposal of refuse, incineration.
- (e) Sanitation of fairs and festivals.
- (f) Disinfection—Disinfectants, deodorants, antiseptics germicides. Methods of disinfection and sterilisation.

(iii) Preventive medicine :

- (a) General principles of prevention and control of communicable disease, plague, cholera, small pox, diphtheria, leprosy, tuberculosis, malaria, kalazar, filaria, common virus diseases e.g. common cold, measles, chicken pox, poliomyelitis, infective hepatitis, helminthiasis infection, enteric fever and dysenteries, also animal diseases transmissible to man. Their description and methods of preventive spread by contact, by droplet, insects, animal fountries etc. Homoeopathic point of view regarding prophylaxis and vaccination.

(b) Natural history of disease.

- (iv) Family Planning—Demography, channels of communication national family planning programme.

Knowledge, attitudes regarding contraceptives practices. Population and growth control.

N.B.—Field demonstrations—water purification plant, infectious disease, hospital etc.

MATERIA MEDICA

HOMOEOPATHIC MATERIA MEDICA

Homoeopathic materia medica is differently constructed as compared to other materia medica. Homoeopathy considered that study of the action of drugs on individual parts or systems of the body or on animals or their isolated organs is only a partial study of life processes under such action and that it does not lead us to a full appreciation of the action of the medicinal agent, the drug agent as a whole is lost sight of.

Essential and complete knowledge of the drug action as a whole can be supplied only by qualitative synoptic drug experiments on healthy person and this alone can make it possible to view all the scattered data in relation to the psychosomatic whole of a person; and it is just such a person a whole to whom the knowledge of drug action is to be applied.

3. The homoeopathic materia medica consists of a schematic arrangement of symptoms produced by each drug, incorporating no theories of explanations about their interpretation or inter-relationship. Each drug should be studied synthetically, analytically and comparatively, and this alone would enable a homoeopathic student to study each drug individually and as a whole and help him to be a good prescriber.

4. Polychrests and the most commonly indicated drugs for every-day ailments should be taken up first so that in the clinical classes or outdoor duties the students become familiar with their applications. They should be thoroughly dealt with explaining all comparisons and relationship. Students should be conversant with their sphere of action and family relationship.

The less common and rare drugs should be taught in outline, emphasizing their most salient features and symptoms. Rarer or more difficult drugs should be dealt with later.

5. Tutorials must be introduced so that students in small numbers can be in close touch with teachers and can be helped to study and understand materia medica in relation to its application in the treatment of the sick.

6. While teaching therapeutics an attempt should be made to recall the materia medica so that indications for drugs in a clinical condition can directly flow out from the provings of the drugs concerned. The student should be encouraged to apply the resources of the vast materia medica in any sickness and not limit himself to memorise a few drugs for a particular disease. The Hahnemannian approach will not only help him in understanding the proper perspective of symptoms as applied and their curative value in sickness but will even lighten his burden as far as formal examinations are concerned. Otherwise the present trend produces the allopathic approach to treatment of

diseases and is contradictory to the teaching of Organon.

Application of materia medica should be demonstrated from cases in the outdoor and hospital wards.

Lectures on comparative materia medica and therapeutics as well as tutorials should as far as possible be integrated with lectures on clinical medicine in the various departments.

7. For the teaching of drugs the college should keep herbarium sheets and other specimens for demonstrations to the students. Lectures should be made interesting and slides of plants and materials may be projected.

8. A. *Introductory lectures*.—Teaching of the homoeopathic materia medica should include.

- (a) nature and scope of homoeopathic materia medica,
- (b) sources of homoeopathic materia medica, and
- (c) different ways of studying the materia medica.

B. The drugs are to be taught under the following heads :

- (1) Common name, natural order, habitat, part used, preparation.
- (2) Sources of drug proving.
- (3) Symptomatology of the drug emphasising the characteristic symptoms and modalities.
- (4) Comparative study of drugs.
- (5) Complementary, inimical, antidotal and concordant remedies.
- (6) Therapeutic applications (applied materia medica).

C. A study of 12 tissue remedies according to Schussler's biochemic system of medicine.

APPENDIX I

List of drugs included in the syllabus of materia medica for the second D.H.M.S. Examination.

1. Abrotanum.
- *2. Aconitum Nap.
3. Aesculus' Hip.
4. Aethusa Gyn.
- *5. Allium Ccps.
6. Aloes Soc.
7. Alumina.
8. Ammonium Carb
9. Antimonium Crud.
10. Antimonium Tart.
11. Apis Mellifica.
12. Argentum Met.
13. Argentum Nit.

- *14. Arnica Montana.
- 15. Arsenicum Alab
- 16. Aurum Met.
- 17. Arum Triph.
- 18. Baptisia T.
- 19. Barytcarb.
- *20. Belladonna.
- 21. Berberis vulgaris.
- 22. Borax.
- *23. Bryonia Alab.
- 24. Calcareo Carb.
- 25. Calcareo Flour.
- 26. Calcareo Phos.
- 27. Calcarca Sulph
- *28. Calendula.
- 29. Carbo Veg.
- *30. Causticum.
- 31. Chamomilla
- 32. Cina.
- 33. Cinchona off.
- 34. Colchicum A
- *35. Colocynthis.
- 36. Drosera.
- *37. Dulcamara.
- 38. Eupharasia.
- 39. Ferrum Met.
- *40. Ferrum Phos
- *41. Gelsemium
- 42. Graphites.
- 43. Hepar Sulph
- 44. Helleborus.
- 45. Hyoseyamus N.
- 46. Ignatia.
- 47. Ipecac.
- 48. Kali Bich.
- 49. Kali Carb.
- *50. Kali Mur.
- *51. Kali Phos.
- 52. Kali Sulph.
- 53. Lachesis.
- 54. Ledum Pal.
- 55. Lycopodium.
- *56. Magnesia Phos.
- 57. Mercurius Cor.
- 58. Mercurius Sol.
- 59. Natrum Mur.
- 60. Natrum Phos.
- 61. Natrum Sulph
- 62. Nitric Acid
- *63. Nux Vomica.
- *64. Phosphorus.
- 65. Platina M
- 66. Podophyllum
- 67. Pulsatilla.
- *68. Rhus Tox.
- 69. Secal Cor.
- 70. Sepia.

- 71. Silicea.
- *72. Spongia T.
- 73. Sulphur.
- 74. Thuja O.
- 75. Veratrum Alab

APPENDIX II

In addition to the list of 75 drugs for the second D.H.M.S. Examination (Appendix I) the following drugs are included in the Syllabus for the Third D.H.M.S. Examination.

- 1. Acetic Acid
- 2. Actea Racemosa
- 3. Agaricus Mus
- 4. Agnus Cactus
- 5. Ambragrisca
- 6. Anacardium O.
- 7. Arsenicum Iod
- 8. Bismuthum
- 9. Bovista
- 10. Cactus G.
- 11. Calcrea Ars.
- 12. Camphora
- 13. Cannabis Sativa
- 14. Cantharis
- 15. Capsicum
- 16. Carbolic Acid
- 17. Carcinosis
- 18. Caulophyllum
- 19. Chelidonium M.
- 20. Cicuta Virosa
- 21. Cocculus Ind.
- 22. Conium M.
- 23. Crocus Sativa
- 24. Crotalus Hor.
- 25. Croton Tig.
- 26. Cupurum Ars.
- 27. Cupuram Met.
- 28. Digitalis P.
- 29. Eupatorium Perfol.
- 30. Fluoric Acid
- 31. Glonoine
- 32. Hammamelis Vir
- 33. Hydecastis C.
- 34. Iodum
- 35. Krēosotum
- 36. Lac Caninum
- 37. Lillium Tig
- 38. Magnesia Carb
- 39. Magnesia Phos
- 40. Medorrhinum
- 41. Mezereum
- 42. Moschus
- 43. Murex
- 44. Muriatic Acid
- 45. Natrum Carb.
- 46. Nux Moschata
- 47. Opium

(Note : *drugs to be taught in the I DHMS (Course).)

48. Petroleum
49. Phosphoric Acid
50. Plumbum M.
51. Psorinum
52. Pyrogenium
53. Ranunculus Bulb
54. Rhododendron
55. Rumex C.
56. Ruta G
57. Sabina
58. Sambucus
59. Sanguinaria C.
60. Sarsaparilla
61. Spigelia
62. Stannum Met.
63. Staphysagria
64. Stramonium
65. Syphilinum
66. Tuberculinum
67. Variolinum
68. Varatrum Vir.
69. Zincum Met.

ORGANON AND PRINCIPLES OF HOMOEOPATHIC PHILOSOPHY

Hahnemann's Organon of medicine is the high water-mark of medical philosophy. It is an original contribution in the field of medicine in a codified form. A study of organon as well as of the history of homoeopathy and its founder's life story will show that homoeopathy is a product of application of the history of inductive logical method of reasoning to the solution of one of the greatest problems of humanity namely the treatment and cure of the sick. A thorough acquaintance with the fundamental principles of logic, both deductive and inductive, is therefore, essential. The organon should accordingly be taught in such a manner as to make clear to the students the implication of the logical principles by which homoeopathy was worked out and built up and with which a homoeopathy physician has to conduct his daily work with ease and facility in treating every concrete individual case.

The practical portions should be thoroughly understood and remembered for guidance in practical work as a physician.

II. D.H.M.S. EXAMINATION

1. Introductory lectures—10 lectures

Subjects :

1. What is homoeopathy ?

It is not merely a special form of therapeutics but a complete system of medicine with this distinct approach to life, health, diseases, remedy and cure.

Its holistic, individualistic and dynamistic approach to life, health, diseases, remedy and cure.

Its out and out logical and objective basis and approach.

Homoeopathy is nothing but an objective and rational system of medicine.

Homoeopathy is thoroughly scientific in its approach and methods.

Bases on observed facts and data and on inductive and deductive logical inseparably related with observed facts and data.

2. Distinct approach of homoeopathy to all the preclinical, clinical and para clinical subjects.
3. Preliminary idea about all the preclinical and para-clinical subjects, their mutual relations and relation with the whole living organism.
4. Importance of learning the essential of those subjects for efficient application of the principles of homoeopathy for the purpose of cure and health.
5. Distinctive essential features of the dynamic pharmacology (proving) and pharmacy of homoeopathy.
6. Hahnemann's organon 5th and 6th editions : In II D.H.M.S. Course Aph. from 1 to 145 should be taught. Though the examination may be limited Aph. 1 to 70.

II D.H.M.S. EXAMINATION

ORGANON AND PHILOSOPHY

THEORETICAL

1. Hahnemann's organon 5th and 6th editions Aphorism 1 to 294.

2. Introductory chapters of Hughes 'The Principles and practice of Homoeopathy'. In their introductory lectures on organon the professors are requested to impress upon the mind of the students the implications of the logical principles on which homoeopathy was built and worked out; and the history of the development of medicine in the west and Hahnemann's contributions to it in order to arrive at a right assessment of the place of homoeopathy in all its aspects in the field of medicine and life of Hahnemann.

3. Homoeopathic philosophy (a) Kent's lectures in homoeopathic philosophy, (b) Stuart Close—lectures and essay on homoeopathic philosophy (The Genius of homoeopathy), (c) Art of cure by homoeopathy by H. Hobert; (d) Science of therapeutics (Dunham).

During the lectures of homoeopathic philosophy, the following items should be elucidated :—

- (i) The scope of Homoeopathy.
- (ii) The logic of homoeopathy.
- (iii) Life, health, diseases and indisposition.
- (iv) Susceptibility, reaction and immunity.
- (v) General pathology of homoeopathy theory of acute and chronic miasms.
- (vi) Homoeopathic philosophy.
- (vii) Potentisation and the infinitesimal dose and the drugs potential.

- (viii) Examination of the patient from the homoeopathic point of view.
- (ix) Significance and implications of totality of symptoms.
- (x) The value of symptoms.
- (xi) The homoeopathic aggravation.
- (xii) Prognosis after observing the action of the remedy.
- (xiii) The second prescription.
- (xiv) Difficult and incurable cases—Palliation.

4. Introduction to organon (5th and 6th editions).

5. History of homoeopathic medicine—medicine as it existed during Hahnemann's time, early life of Hahnemann; his disgust with the existing system of treatment; his discovery of law of similars; history of the late life of Hahnemann. Introduction of homoeopathy in various countries. Pioneers of homoeopathy and their contributions development of homoeopathy upto the present day. The present trends in the development of homoeopathy. Influence of homoeopathy on other systems of medicine.

6. Hahnemann's book on chronic diseases.

Topic Wise :

- (a) Aid of physician and highest ideal cure Aph. 1 & 2.
- (b) Knowledge of a physician—Aph. 3 & 4.
- (c) Knowledge of disease which supplies the indication Aph. 5 to 18.
- (d) Knowledge of medicines—Aph 19 to 21.
- (e) Evaluation of homoeopathic methods from other method of treatment—Aph. 22 to 69.
- (f) Summary—three conditions for cure Aph. 70.

7. Lectures on practical part of organon is to be divided into and taught under the following subjects :—

- (a) That is necessary to be known in order to cure the diseases and case taking method—Aph. 71—104.
- (b) The pathogenetic powers of medicine i.e. drug—proving or how to acquire knowledge of medicine Aph. 105 to 145.
- (c) How to choose the right medicine—Aph. 147, 148, 149, 150, 153, 155.
- (d) The right dose—Aph. 157, 160, 161, 162, 163, 164, 169, 171, 173.
- (e) Local disease—Aph. 186, 187, 190, 191, 196, 197, 199, 201, 202 and 203.
- (f) Chronic diseases—Aph. 204, 206, 208.
- (g) Mental diseases—Aph 210 to 230.
- (h) Intermittent diseases—Aph. 231, 232, 238, 240 to 242.
- (i) Diet, regimen and the modes of employing medicine—Aph. 245—248, 252, 253, 259, 262, 263, 269, 270, 272, 275, 276, 280, 286, 288, 290, 291.

At the III D.H.M.S examination the written paper in organon and principles of Homoeopathic Philosophy shall be distributed as follows :

Paper I—Introduction to organon Aphorism 1 to 294.

Paper II—History of Homoeopathic Medicine, Homoeopathic Philosophy and Chronic Diseases.

PRACTICAL.

Case taking :

On case with Miasmatic diagnosis.

III D.H.M.S. EXAMINATION

PRACTICE OF MEDICINE

Homoeopathy has a distinct approach to disease. It recognises disease neither by its prominent symptoms nor by those of any organ or part of the body. It treats the patient as a whole and the totality of the symptoms exhibited by him represents his disease. Merely the name of the condition from which he suffers most is thus of no significance to a homoeopath.

The basic principle of homoeopathy that it treats the patient and not his disease should be constantly impressed in the minds of the students, and it is only when this approach is firmly inducted in them that they will be true homoeopaths.

Medicine is essentially a practical science and can be more learnt at the bed-side than in a class room. Care should, therefore, be taken to impart an intensive clinical training to the students during the latter part of their studies in the college.

Fevers :

Common types of fevers, caused by protozoal infection, malaria, black-water fever, leishmaniasis, kala-azar, fevers caused by bacterial infection, cerebrospinal fever, enteric group of fevers, bacillus coli infection, fevers caused by spirochactal infection, syphilis, fevers caused by virus infection, measles, german measles, chicken pox, small pox, vaccinia, dengue, fever caused by physical and chemical agents, fevers of unknown etiology, septicemia, pyemia, erysipelas, plague.

Circulatory System :

Subjective systems, objective sign, general signs, pulse, blood pressure, pulse wave, physical examination of the heart, anatomical positions, inspection and palpation, apex beat, right ventricular pulsation, other pulsations, epigastric pulsation, venous pulsation, thrill, precussion, increase of cardiac dullness, auscultation of the heart, abnormal heart sounds, synchronism of heart sounds, murmurs, exocardia sounds, instrumental examination of the heart, ploygraph, electrocardiograph. X-Ray examination of the heart, cardiac efficiency test cardio-vascular diseases, palpitation, dyspnoea, syncope, cyanosis, arrhythmia, pericarditis, endocarditis, valvular diseases, differential diagnosis and congenital heart diseases, myocardial diseases, arterial disease, hypertensive heart disease, angina

preparation of patient for operation—after treatment of operation cases, post operative complications.

- (2) Inflammation, infections, suppuration, bacteriology of surgical diseases, immunity.
 - (3) Non specific and specific infections.
 - (4) Injuries, contusions, wounds, haemorrhage, shock, collapse, burns and scalds.
 - (5) Ulceration and gangrene.
 - (6) Common Tumours, cysts.
 - (7) General considerations with regards to injuries of bones, fracture and dislocations.
 - (8) General considerations with regard to injuries of joint.
 - (9) Diseases of the joints especially hipjoint.
- (b) *Regional Surgery*

- (1) Injuries and diseases of the brain and its membranes, concussion, compression, irritation and laceration of the brain, intracranial haemorrhages.
- (2) Injuries and diseases of the spine, tubercular disease of the spine (Spinal caries) psoas and lumbar abscess.
- (3) Deformities of the lips and face, hare-lip varieties of cleft plate, injuries of the jaws, dislocation of jaw.
- (4) Cancer tongue infection of salivary glands, thyroid and para-thyroid tumour.
- (5) Acute mastoiditis—mastoid operation, otitis media.
- (6) Affection of the tonsils—tonsillectomy, retropharyngeal abscess, adenoids.
- (7) Disease of the nose, acute and chronic rhinitis, septal defects, polypus.
- (8) Stricture of the oesophagus, dysphagia, achalasia.
- (9) Examination of the larynx, benign and malignant growth, diphtheria, tracheostomy, oedema glottis.
- (10) Infections of the neck, cellulitis neck, growths about the neck, goitre-thyroidectomy.
- (11) Injuries of the chest, fracture of ribs, surgical emphysema.
- (12) Diseases of the pleura and lungs.
- (13) Diseases of the breast, acute infective mastitis and mammary abscess growth of the breast, simple tumours, malignant tumours. Operation for carcinoma of the breast.
- (14) Abdominal operations, general considerations, injuries of the hollow and solid viscera, acute peritonitis, intraperitoneal abscess; pelvic abscess, subphrenic abscess and abscess in the right iliac fossa.

- (15) Hernia clinical conditions and complications of hernia, obstructed hernia, strangulated hernia.
- (16) Surgical aspects of gastric and duodenal ulcers and cancer. Indications for operative treatment.
- (17) Surgical aspects of the intestinal affections, intestinal perforations—intestinal obstruction and stasis.
- (18) Surgical aspects of the affections of the appendix appendicitis.
- (19) The investigation and examination of acute abdominal cases, their differential diagnosis.
- (20) Liver abscess-surgical treatment, gallstone (cholelithiasis).
- (21) Rectum : Ulcers and cancers, haemorrhoids, prolapse of the rectum, carcinoma anus, fissures and fistula.
- (22) Methods of examination of the urinary tract renal calculus, rupture of bladder ectopia vesicae, foreign bodies in the bladder, stone in the bladder, injuries and stricture of the urethra-extravasation of urine enlargement of the prostate malignancy of the prostate, scrotal tumour, hydrocele and varicocele.
- (23) Common diseases of the eye, diseases of conjunctiva cornea, lens, iris, retina, muscles of eyeball, glaucoma.

N.B.—Ten practical demonstrations in operative surgery.

The written papers in Surgery shall be distributed as follows :

Paper-I

Inflammation, specific and non-specific infections, haemorrhage, shock, burns, ulcers and gangrene. Tumour and cysts. Injuries and diseases of nerves, muscles, tendons and bursa, diseases of lymph, vascular system including spleen.

Head and neck surgery including surgery of thyroid, breast and congenital anomalies. Abdominal surgery including gastro-intestinal system.

Bone and joint surgery. Injuries and diseases of bone.

Deformities of limbs.

Thoracic surgery.

Genito-urinary surgery, and Homoeopathic therapeutics.

Paper II

Otorhinolaryngology, venereal diseases, Ophthalmology, dental and homoeopathic therapeutics and scope of surgery in homoeopathy.

pectoris, myocardial infarction, aneurysm vasomotor Vasomotor diseases of the pulmonary artery, heart under special conditions, hypertrophy and dilatation of the heart, circulatory failure, prognosis of cardiovascular disease.

Respiratory System :

Subjective phenomena; cough, pain in the chest, dyspnoea, sputum, haemoptysis, physical examination of upper respiratory tract, nose, throat, pharynx, tonsils, larynx, physical examination of the lungs, inspection, palpation, percussion, auscultation, breath sound, vocal resonance, adventitious sounds, friction, special sounds, pulmonary diseases, epiglottitis, diphtheria, whooping cough, tracheitis, bronchiectasis, bronchial obstruction, asthma, tropical eosinophilia, pneumonia, pneumonitis, abscess of the lungs, gangrene of the lung, pulmonary tuberculosis, emphysema, pulmonary infarction pulmonary collapse, pulmonary neoplasm, pneumoconiosis, syphilis of the lung other pulmonary diseases, pleurisy, hydrothorax, haemothorax, chylothorax, pneumothorax, diaphragmatic spasm, mediastinal tumor.

Digestive System :

Subjective phenomena; appetite and thirst, dysphagia, abdominal pain, other uncomfortable sensations, colic, tetanus, nausea and vomiting haematemesis, diarrhoea, constipation, intestinal obstruction, examination of the mouth, breath, oesophagus, abdominal anatomy, inspection, palpation, percussion, auscultation, stomach, intestine, rectal examination, Examination of the stool, physical examination and indications of liver diseases, gall bladder contents testing, X-Ray examination, pancreas, common alimentary diseases, pyorrhoea, alveolaris, stomatitis, tongue, salivary glands, oesophagus, stomach gastritis, gastric ulcer, duodenal ulcer, gastric cancer, dilatation of stomach, pyloric obstruction, acute diarrhoea, chronic diarrhoea, cholera, sprue, ileitis, dysenteries, colitis, other diseases of the colon. Dyspepsia, visceroptosis, passive congestion.

Urine genital system :

Subjective phenomena, micturition, pain, physical examination of kidneys, common renal diseases, haemoglobinuria, chyluria, pyelitis, perinephric abscess, Cystitis, nephritis, vascular diseases of the kidney, uraemia, genital system, gonorrhoea, syphilis.

Ductless glands :

Physical examination of splenic enlargement, Hodgkin's disease, climatic bubo, thyroid gland, myxoedema, cretinism, exophthalmic goitre, Addison's disease, diabetes mellitus.

HAEMOPOETIC SYSTEM

Blood cells, red blood corpuscles, diseases of blood, pernicious anaemia, hypochromic microcytic anaemia, haemolytic anaemia, polycythaemia, enterogenous cyanosis, white blood corpuscles, leukaemias, granulocytosis, purpura, haemophilis, scurvy.

Cutaneous system :

Skin Eruptions : Scabies, herpes zoster, localised eruptions constitutional diseases with skin eruption;

syphilis, leprosy, allergy, eczema, dermal leishmaniasis, eruptions of unknown etiology, poriasis, drug eruptions, oedema, epidemic dropsy.

Locomotor system :

Low back pain, diseases of bones; syphilis, Osteomyelitis.

Diseases of joints : nonspecific arthritis, Infective arthritis.

Nervous system :

Anatomy & physiology, physical examination, cerebrospinal fluid, cerebral symptoms, cranial nerve affections, meningitis, intracranial tumours, cerebral thrombosis, embolism haemorrhage, neurosyphilis, encephalitis, viral diseases, abnormal muscular movements contractures, spinal cord, diseases, spinal nerve diseases, acute anterior poliomyelitis, mental diseases, psychoneurosis.

The written papers in Medicine shall be distributed as follows :—

Paper I—Infectious diseases, disorders of endocrine system, diseases of metabolism, deficiency diseases, diseases of the digestive system, diseases of blood, spleen and lymph glands and Tropical diseases, Homoeopathic therapeutics.

Paper II—Diseases of locomotor system, diseases of nervous system, diseases of cardiovascular system, diseases of urino-genital system, common skin diseases, diseases of children, Homoeopathic therapeutics.

SURGERY

Where medicine fails surgery begins. Affection of external parts requiring mechanical skill properly belong to surgery; but frequently when the injury is so extensive or violent as to evoke dynamic reaction in the organism, dynamic treatment with remedies is necessary.

Surgery removes the end products of disease; but pre and post operative treatment is essential to correct the basic dyscrasia and prevent sequelae or complications.

A large number of conditions being amenable to internal medication in homoeopathy, the scope of the latter is much wider and that of surgery is to that extent limited. But as a supplement to medicine surgery has a definite place in homoeopathy and should be taught accordingly.

A systematic course of instructions on general principles and practice of surgery, comprising lectures on the following topic be included :

GENERAL SURGERY

(a) *General surgical procedures :*

Examination of surgical patient. Asepsis and antisepsis, sterilisation technique in operative surgery,

Case taking :**Difficulties of taking a chronic case**

Recording of cases and usefulness of record keeping
 Totality of symptoms. Prescribing symptoms : uncommon, peculiar and characteristic symptoms ; general and particular symptoms. Eliminating symptoms. Analysis of cases uncommon and common symptoms. Gradation and evaluation of symptoms. Importance of mental symptoms. Kinds and sources of general symptoms. Concomitant symptoms.

1. History of repertories.
2. Types of repertories.
3. Demonstration of 3 cases worked on Boenninghausen.
4. Kent's repertory—advances study with case demonstration.
5. Boger's Boenninghausen reportory—his contrito repertory.
6. Card repertory with demonstration of 5 cases, limitations and advantages of card repertories.

Theoretical lectures with demonstrations.

Practical :

Students are to repertorise.

- (*) 15 short cases on Kent's repertory.
- (ii) 10 chronic (long cases on Kent).
- (iii) 5 cases to be cross-checked.

INTRODUCTION TO NORMAL PSYCHOLOGY

- (a) Definition of psychology as a science and its differences from other sciences.
- (b) Conception of the mind.
- (c) Mesmer and his theory. Hypnotism structure of consciousness.
- (d) Froud and his theory. Dynamics of the unconscious.
- (e) Other contemporary schools of psychology.
- (f) Relation between mind and body in health and disease.
- (g) Percentage, imagination, ideation, intelligence, memory.
- (h) Cognition, conation, affect, instinct, sentiment behaviour.

Note : No examination in Psychology at diploma level.

PART VI—EXAMINATIONS

A. Admission to D.H.M.S. Examinations, Scheme of Examination etc.

8. First D.H.M.S. Examination.—(i) A candidate may be admitted to the First D.H.M.S. examination
 180 GI/83—5

provided that he has regularly attended the following courses of instruction, theoretical and practical for a period of not less than 12 months at a Homoeopathic College to the satisfaction of the head of the College.

(ii) The minimum number of lectures and demonstrations/practical classes in each of the subjects shall be as shown below :—

Subject	Theoretical	Demonstrations practical classes/tutorials/seminars/symposia
*Introductory lectures including Materia Medica Homoeopathic Philosophy	150 } 300 Hrs.	(theoretical, demonstration/practical classes)
Pharmacy	30 Hrs.	50 Hrs.
Anatomy	150 Hrs.	300 Hrs.
Physiology & Biochemistry	150 Hrs.	300 Hrs.

Note : The minimum available hours of the tuition in a year is 1100-1200 hours, and these hours should be utilised fully for teaching and training programme.

*Introductory lectures are provided for acquainting the new entrant to the medical profession. This will give them a bird's eye-view about the history of Medicine in general and Homoeopathy in particular and the life of Hahnemann. Hahnemann's contribution to the concept of health and disease and the study of man as a whole—both in health and disease ; the outline of Homoeopathic philosophy and introduction to the Homoeopathic Materia Medica with illustrations by a few drug-pictures of about ten to fifteen important commonly used drugs ; his role as a physician in the changing society ; the present day health needs and knowledge of health and family welfare programmes of the country ; the introduction of basic medical sciences like Anatomy, physiology, pathology etc., their inter-relationship and their importance and relevance to the clinical subjects ; (as an illustration, a little exposure to the clinical materials will arouse the interest of the students in the subject of medicine). Elementary knowledge of psychology and Logic.

(iii) Greater emphasis shall be laid on teaching of Homoeopathic Materia Medica with the help of drug picture of important drugs and on homoeopathy philosophy. At least 20 (*marked) drugs should be adequately covered in the introductory lectures from the Appendix I.

(iv) The first D.H.M.S. examination shall be held at the end of 12 months of the Course.

(v) The examination in each subject shall consist of written, oral and practical test. Three hours shall be allowed for each paper in each subject.

(vi) The examination in Homoeopathic Pharmacy shall consist of a theoretical paper, a practical examination and an oral examination.

OBSTETRIC AND GYNAECOLOGY

Homoeopathy adopts the same attitude towards these subjects as it does towards medicine and surgery. But while dealing with obstetrical and gynaecological cases a homoeopathic physician must be trained in special clinical methods of investigation for diagnosing local conditions and discriminating cases where surgical intervention either as a life saving measure or for removing mechanical obstacles is necessary.

The best time to eradicate familial dyscrasias in a woman or to purify the foetus of such dyscrasias which it may inherit is during pregnancy; and this should be specially stressed.

Students should also be instructed in the case of the new born. The fact that the mother and child form a single biological unit and that this peculiar close psychological relationship persists for at least the first two years of the child's life should be particularly emphasised.

OBSTETRICS

1. Puberty, ovulation and menstruation, normal pregnancy, amnion, chorion, decidua, placenta, umbilical cord, foetal circulation, general physiology.
2. Abnormal pregnancy.—(i) toxæmia of pregnancy, hyperemesis gravidarum, eclampsia, pre-eclamptic toxæmia, accidental hæmorrhages; (ii) Antenatal-hæmorrhage-I and II Trimesters-ectopic gestation, hydatidiform mole, abortion, abnormal pregnancy, hæmorrhages during III trimesters, placentas, prævia, accidental hæmorrhage; (iii) hydræmic, oligo-hydramniotic; (iv) Diseases associated with pregnancy.
3. Normal labour (i) Stages of labour, (ii) Anatomy and Physiology of labour, (iii) Mechanism of normal labour, (iv) Management of normal labour.
4. Abnormal presentations :

Breech Occipito-posterior Face, Brow Shoulder, Cord	}	Presentation
--	---	--------------
- Multiple pregnancy
 Pelvic contraction
 Postpartum Hæmorrhage
 Uterine Hæmorrhage
5. Puerperium, physiology of Puerperium.
 Management of Puerperium.
 Disorders of Puerperium.
6. The New Born Child

Breast feeding, Artificial feeding, premature infants, obstetric injuries, diseases of new born infants, diseases and death of foetus, Foetal asphyxia or Foetal Death.

7. Induction of abortion. Induction of labour forceps, Episiotomy, Version.

GYNAECOLOGY

1. Anatomy of female genital organs.
2. Examination of a gynaecological case.
3. Physiology and endocrinology of menstruation, menopause and puberty.
4. Menstrual anomalies, Amenorrhoea, dysmenorrhoea, menorrhagia, metrorrhagia.
5. Leucorrhœa.
6. Diseases of external genital organs-vulvitis, Bartholinitis, ulcer of vulva, pruritus, tumours of vulva, venereal diseases.
7. Diseases of vagina, Vaginitis, tumours of vagina.
8. Diseases of cervix—cervicitis, Erosion, Polypus, cancer of cervix.
9. Diseases of uterus : displacements, inflammation, fibroids, carcinoma uterus.
10. Diseases of fallopian tube, inflammation.
11. Pelvic peritonitis, pelvic cellulitis.
12. Diseases of Ovary : Inflammation, Tumour.
13. Sterility.
14. Gynaecological operations, Dilatation and curatting of uterus.

The written papers in Obstetrics and Gynaecology shall be distributed as follows :—

Paper I—Obstetrics, new-borns, infant Hygiene and Homoeopathic therapeutics.

Paper II—Gynaecology and homoeopathic therapeutics.

HOMOEOPATHIC REPERTORY

Homoeopathic materia medica is an encyclopaedia of symptoms. No mind can memorise all the symptoms of all the drugs together with their characteristic gradation. The repertory is an index, a catalogue of the symptoms of the materia medica, neatly arranged in a practical form, also indicating the relative gradation of drugs, and it greatly facilitates quick selection of the indicated remedy. It is impossible to practice homoeopathy without the aid of repertories, and the best repertory is the fullest. Homoeopathic materia medica and repertory are thus like twins.

It is possible to obtain the needed correspondence between drugs and disease conditions in a variety of ways and degrees, and these are, therefore, different types of repertories, each with its own distinctive advantages in finding the similimum.

(vii) The examination in anatomy and physiology shall each consist of two theoretical papers, a practical examination and an oral examination.

(viii) The candidate securing 75 per cent marks in any of the subjects shall be declared to receive honours in that subject provided he has passed the examination at first attempt.

(ix) In order to pass the First D.H.M.S. examination, a candidate shall pass in all subjects at the examination.

(x) Pass marks in all subjects shall be 45% in each part (written, oral and practical) and 45% in the aggregate.

(xi) Full marks for each subject and minimum number of marks required for passing are as follows :—

Subject	Written		Oral		Practical		Total	
	Full	Pass	Full	Pass	Full	Pass	Full	Pass
Pharmacy	100	45	50	23	50	23	200	90
Anatomy	200	90	100	45	100	45	400	180
Physiology	200	90	100	45	100	45	400	180
Materia Medica (20 Polychrest drugs) and Homoeopathic Philosophy (Aph. 1-145 except case taking)	100	45	100	45	200	90

9. *Second D.H.M.S. Examination.*—(i) No candidate shall be admitted to the Second D.H.M.S. examination unless :—

(a) he has passed First D.H.M.S. examination at the end of one year previously, and

(b) he has regularly attended the following courses of instruction both theoretical and practical in the subjects of examination for a period of at least one year subsequent to his passing First D.H.M.S. examination a recognised Homoeopathic College to the satisfaction of the head of the college.

(ii) The courses of minimum number of lectures and demonstration/tutorial/practical/clinical classes in the subjects shall be as shown below :—

Subject	Theoretical	Demonstration/ Tutorial/ Practical/ Clinical/ Symposia
1. Pathology, Bacteriology and Parasitology	100	100
2. Forensic Medicine & Toxicology	60	20
3. Preventive & Social Medicine (including health education and Family Medicine)	100	50
4. Materia Medica	100	} including demonstration/tutorial etc.
5. Organon & Philosophy	75	

(iii) The Second D.H.M.S. examination shall be held at the end of two years of D.H.M.S. Course. The Second D.H.M.S. examination in each subject shall be written, oral, practical and/or clinical. Three hours shall be allowed for each paper in each subject.

(iv) The examination in Pathology, Bacteriology and Parasitology shall consist of a theoretical paper, a practical examination and an oral examination.

(v) The examination in Preventive and Social Medicine shall consist of a theoretical paper and an oral examination.

(vi) The examination in Forensic Medicine and Toxicology shall consist of a theoretical paper and an oral examination.

(vii) The examination in Materia Medica shall consist of a theoretical paper and an oral/practical examination.

(viii) The examination in Organon and Homoeopathic Philosophy shall consist of a theoretical paper and an oral/practical examination.

(ix) The candidate securing 75 per cent marks in any of the subjects shall be declared to receive honours in that subject provided he has passed the examination at first attempt.

(x) In order to pass the Second D.H.M.S. examination a candidate must pass in all subjects of the examination.

(xi) Pass marks in all subjects, both Homoeopathic and allied medical subjects shall be 45% in each part (written, oral and practical) and 45% in aggregate.

(xii) Full marks for each subject and the minimum number of marks required for passing are as follows :—

Subject	Written		Oral		Practical		Total	
	Full	Pass	Full	Pass	Full	Pass	Full	Pass
	Mar-ks	Mar-ks	Mar-ks	Mar-ks	Mar-ks	Mar-ks	Mar-ks	Mar-ks
Pathology, Bacteriology and Parasitology	100	45	50	23	50	23	200	90
Forensic Medicine & Toxicology	100	45	50	23	50	23	200	90
Social and Preventive medicine (including health education and family medicine)	100	45	50	23	50	23	200	90
Materia Medica (75 Polychrest drugs)	100	45	50	23	50	23	200	90
Organon (up to aph. 70)	100	45	50	23	50	23	200	90

10. *Third D.H.M.S. Examination.*—(i) No candidate shall be admitted to the Third D.H.M.S. examination unless :—

(a) he has passed the Second D.H.M.S. examination at the end of 1½ years previously, and

- (b) has regularly attended the following courses of instructions both theoretical and practical in subjects of examination for a period of at least 1½ years subsequent to his passing the Second D.H.M.S. examination in a recognised Homoeopathic College to the satisfaction of the head of the College.

(ii) The courses of minimum number of lectures and demonstration/tutorial/practical and clinical classes in the subjects shall be as shown below :—

Subject	Theoretical	Demonstration/Tutorial/ Practical/Clinical/Sym- posia
1. Practical of Medicine (including mental diseases & Homoeo. Therapeutics)	300 (in 2-1/2 years)	300 (6 months of clinical training in homoeo. ward and homoeo. OPD).
2. Surgery (including ENT, Eye & Dental diseases and homoeopathic therapeutics)	180 (in 2-1/2 years)	150 (3 months of clinical training in surgical ward and surgical OPD).
3. Obstetrics & Gynaecology	180 (in 2-1/2 years)	150 (3 months of clinical training in Obs. & Gyn. wards and OPD)
4. Materia Medica	200 (in 1-1/2 years)	400
5. Organon & Philosophy	125 (in 1-1/2 years)	100
6. Repertory	100 (in 1-1/2 years)	100

Note : The total number of minimum hours of tuition in 2½ years is 2760. The remaining hours can be utilised for discussion, symposia, tutorial etc.

(iii) The III D.H.M.S. examination in each subject shall be written, oral, practical and/or clinical. Three hours shall be allowed for each paper in each subject. The III D.H.M.S. Examination shall be held at the end of 3½ years of D.H.M.S. Course.

(iv) The examination in practice of medicine shall consist of two theoretical papers, an oral examination and a bedside practical examination in case-taking with a view to determine both the nosological and therapeutic diagnosis from the homoeopathic point of view. Time allotted shall be one hour.

(v) The examination in surgery shall consist of two theoretical papers, an oral examination on the application of the splints, bandages and surgical instruments of common use and a clinical examination. Maximum one hour may be allowed to each candidate for the examination of and report on his case with special reference to the scope of Homoeopathic therapeutics *vis-a-vis* the necessity of surgical treatment in the particular case.

(vi) The examination in obstetrics and gynaecology shall consist of two theoretical papers, an oral

examination and a clinical examination on obstetrics and gynaecology including questions on instruments and appliances.

(vii) The examination in materia medica shall consist of two theoretical papers, an oral examination and bedside clinical examination in case-taking with a view to determine both the nosological and therapeutic diagnosis. The time allotted shall be one hour.

(viii) The examination in Organon shall consist of two theoretical papers, and an oral examination.

(ix) The examination in Homoeopathic repertory shall consist of one theoretical paper and a practical examination in case-taking, analysis and evaluation of symptoms and deciding the line of treatment.

(x) A candidate securing 75 per cent marks in any of the subjects shall be declared to receive honours in that subject provided he has passed the examination at first attempt.

(xi) In order to pass the Third D.H.M.S. examination, a candidate shall pass in all the subjects of the examination.

(xii) Pass marks in all subjects, both Homoeopathic and allied medical subjects shall be 45% in each part (written, oral and practical) and 45% in the aggregate.

(xiii) Full marks for each subject and the minimum numbers of marks required for passing Third D.H.M.S. examination are as follows :—

Subject	Written		Oral		Practical		Total	
	Full	Pass	Full	Pass	Full	Pass	Full	Pass
1. Practice of Medicine	200	90	100	45	100	45	400	180
2. Surgery	200	90	100	45	100	45	400	180
3. Obs. & Gyn.	200	90	100	45	100	45	400	180
4. Materia Medica	200	90	100	45	100	45	400	180
5. Organon and Homoeopathic Philosophy	200	90	50	23	50	23	300	135
6. Repertory	100	45	50	23	50	23	200	90

11. *Results and Readmission to Examination.*—(i) Every candidate for admission to an examination shall send to the authority concerned his application in the prescribed form with the examination fee at least 21 days before the date fixed for the commencement of the examination.

(ii) As soon as possible after the examination the examining body shall publish a list of successful candidates arranged in the following manner :—

(a) the names and roll number of the first ten candidates in order of merit, and

(b) the roll numbers of others arranged serially.

(iii) Every candidate shall on passing the examination receive a certificate in the form prescribed by the examining body concerned.

(iv) A candidate who appears at the examination but fails to pass in a subject or subjects may be admitted to supplementary examination in the subject or subjects of that part of the examination in which he has failed to be held ordinarily after six weeks from the publication of result of the first examination on payment of the prescribed fee alongwith an application in the prescribed form.

(v) If a candidate obtains pass marks in the subject or subjects at the supplementary examination or the subsequent examination, he shall be declared to have passed at the examination as a whole.

(vi) If such a candidate fails to pass in the subject or subjects at the supplementary examination in the subject or subjects concerned, he may appear in that subject or subjects at the next annual examination on production of a certification in addition to the certificate required under the regulations, to the effect that he had attended to the satisfaction of the Principal, a further course of study for a period of next academic year in the subject or subjects in which he had failed, provided that all the parts of the examination shall be completed within four chances including the supplementary one, to be counted from the date when the complete examination becomes due for the first time

(vii) If a candidate fails to pass in all the subjects within the prescribed four chances, he shall be required to prosecute a further course of study in all the subjects of all parts for one year to the satisfaction of the head of the college and appear for examination in all the subjects

Provided that if a student appearing for the 'Third D.H.M.S. Homoeopathic examination has only one subject to pass at the end or prescribed chances, he shall be allowed to appear at the next examination in that particular subject and shall complete the examination with this special chance.

(viii) All examinations shall be held on such dates, time and places as the examining body may determine.

(ix) The examining body may under exceptional circumstances partially or wholly cancel any examination conducted by it under intimation to the Central Council of Homoeopathy and arrange for conducting re-examination in those subjects within a period of three days from the date of such cancellation

12. *Examiners*—(1) No person other than the holder of a Diploma obtained after 4 years' of study or a Degree in homoeopathy or person possessing qualification included in the Third Schedule shall be appointed as internal or external examiner or paper-setter for the conduct of a professional examination for the D.H.M.S. Course

Provide that—

(a) no such person shall be appointed as an internal examiner unless he has at least three years' teaching experience,

(b) no person below the rank of lecturer in the subject of a Diploma level institution shall be appointed as an internal examiner;

(c) no person shall be appointed as an external examiner in any allied medical subject unless he possesses a recognised medical qualification as required for appointment to a teaching post in accordance with annexure E of the Homoeopathy (Minimum Standards of Education) Regulations 1983;

(d) external examiners shall be drawn only from the teaching staff of Homoeopathic Colleges and colleges of Modern Medicine

(e) not more than one-third of the total number of external examiners shall be from amongst practitioners in Homoeopathy or Modern Medicine who in the opinion of the examining body are practitioners of repute and who have obtained a Homoeopathic qualification or a medical qualification recognised under the Indian Medical Council Act, 1956;

(f) person in Government employment may also be considered for appointment as external examiners provided they possess a medical qualification as specified in sub-regulation (e) above;

(g) a paper-setter may be appointed as an internal or external examiner.

(ii) The examining body may appoint a single moderator or moderators not exceeding three in number for the purpose of moderating question papers.

(iii) Oral and practical examinations shall be conducted by the respective internal and external examiners with mutual co-operation. They shall each have 50% of the maximum marks out of which they shall allot marks to the candidates appearing at the examination according to their performance and the marks-sheet so prepared shall be signed by both the examiners. Either of the examiners shall have the right to prepare and sign and send separate marks-sheet separately to the examining body together with his comments. The examining body shall take due note of such comments but it shall declare results on the basis of the mark-sheets.

(iv) Every Homoeopathic College shall provide all facilities to the internal and external examiners for the conduct of examinations and the internal examiner shall make all preparations for holding the examinations

(v) The external examiner shall have the right to communicate to the examining body his views and observations about any shortcomings or deficiencies in the facilities not provided by the Homoeopathic College

(vi) He shall also submit a copy of his communication to the Central Council for such action as the Central Council may consider fit

Dr P. L. VERMA, Secy.

Central Council of Homoeopathy.

